Prof. DR. CHARUDEVA SHASTRI

Ph. : 230035

3/54, Roop Nagar,
Delhi-110007

Dated..............................

To be sent to Sriganganagar

(1) Old Brahmanical Shrines of Thailand

(2) Brahmanas of Thailand

A CRITIQUE ON A CRITIC

An Evaluation of the Critical Writings of Prof. Satya Vrat Shastri

इसे टाइप कर मुझे दिखा कर भाई साहब को भेजना है।

— सत्यव्रतशास्त्री
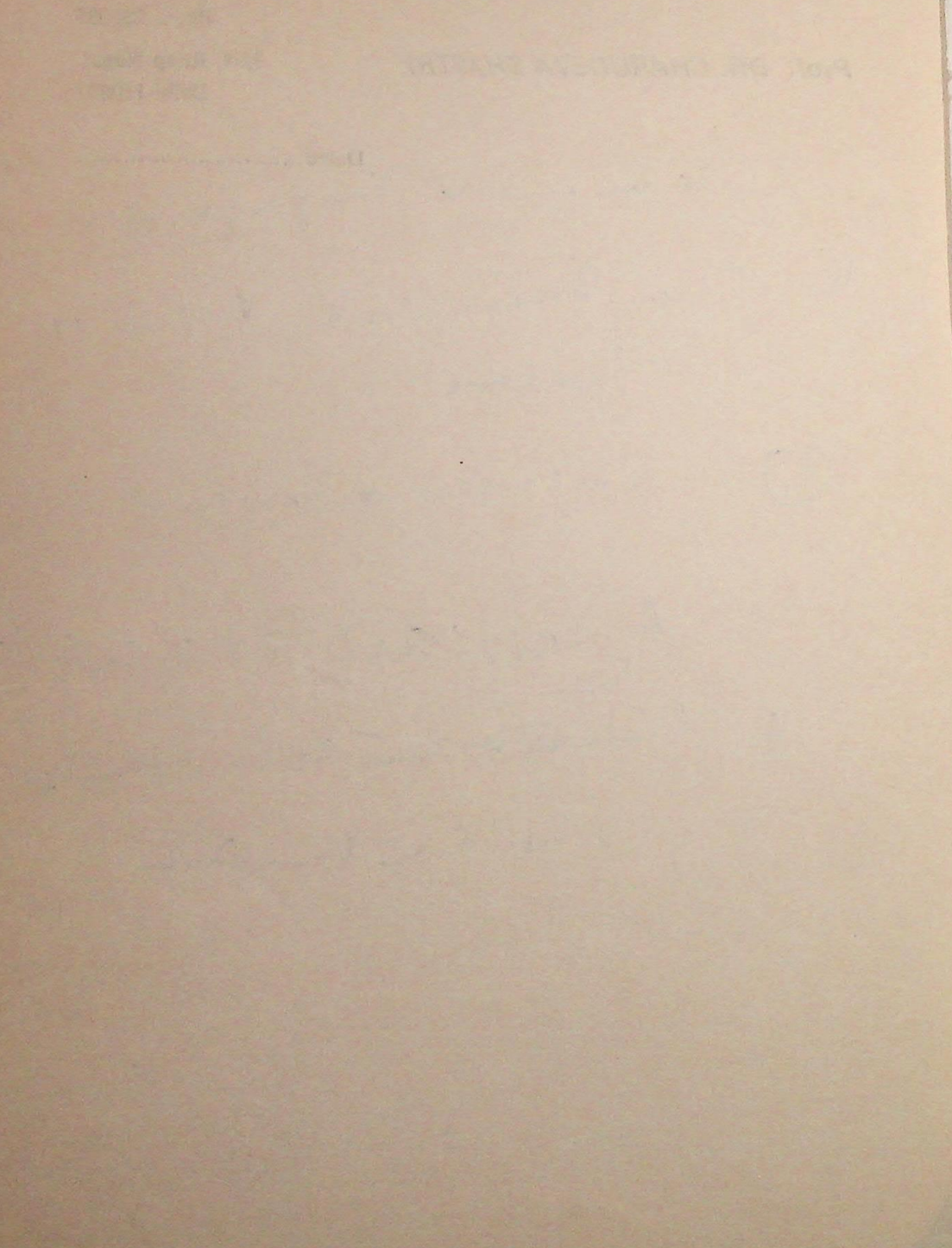
पुरोवाक्

Forewords + Blessings

(कार्यालय/आवास)
...3, डिफेंस कालोनी,
नई दिल्ली-110024
...6644, ~~24336631~~
...ईल: 9650117463
...vrat-shastri.net
...stri@gmail.com

... 2021

... महत्त्वपूर्ण और लोकप्रिय ग्रन्थों में एक श्रीमद्भगवद्गीता है। विश्व की लगभग हर प्रमुख भाषा में इसका अनुवाद हुआ है। शङ्कराचार्य, मध्वाचार्य, रामानुजाचार्य आदि हर सम्प्रदाय के आचार्यों ने इस पर भाष्य लिखे हैं। प्राचीन काल से लेकर अर्वाचीन काल तक विद्वानों की सुदीर्घ शृङ्खला रही है जिसने इसकी व्याख्या की है, इस पर टीका-टिप्पण लिखे हैं, इसके गूढ तत्त्व का विश्लेषण करने का प्रयास किया है। सुनने में आता है कि इण्डिया आफिस लाइब्रेरी, लण्डन में सहस्र से अधिक गीता से सम्बद्ध ग्रन्थ हैं। इतने गीतापरक विशाल वाङ्मय के रहते एक नवीन गीता की व्याख्या प्रस्तुत करना एक बहुत बड़े साहस का काम है। डा० गुलाब कोठारी ने यह साहस दिखाया है। उनकी व्याख्या-दृष्टि एक सर्वथा नवीन ढंग की है। इस ढंग के लिये एक विशेष प्रकार के चिन्तन, एक गहन अन्तर्दृष्टि, एक नवनवोन्मेषशालिनी प्रतिभा की आवश्यकता थी जो भगवान् पद्मनाभ ने उन्हें भरपूर मात्रा में प्रदान की है। जिस प्रकार अपने विराट् स्वरूप का दर्शन कराने के लिये भगवान् ने अर्जुन को दिव्य चक्षु प्रदान की थी — दिव्यं ददामि ते चक्षुः पश्य मे योगमैश्वरम् उसी प्रकार अपनी वाणी के रहस्य को समझने के लिये उन्होंने डा० गुलाब कोठारी को दिव्य चक्षु प्रदान की है। विराट् को जानने के लिये विराट् होना पड़ेगा, कृष्ण को

ज्ञानपीठ पुरस्कार सम्मानित
पद्मभूषण तथा राष्ट्रपति सम्मान प्राप्त
महामहोपाध्याय विद्यावाचस्पति विद्यामार्तण्ड

प्रो. सत्यव्रत शास्त्री

पूर्व अध्यक्ष, द्वितीय संस्कृत आयोग, भारत सरकार
सम्मनित आचार्य (प्रोफेसर एमेरिटस), दिल्ली विश्वविद्यालय
अभ्यर्हित आचार्य, विशिष्ट संस्कृत अध्ययन केंद्र,
जवाहरलाल नेहरू विश्वविद्यालय, नई दिल्ली
पूर्व कुलपति, श्री जगन्नाथ संस्कृत विश्वविद्यालय, पुरी (ओडिशा)
महत्तर सदस्य, साहित्य अकादमी, नई दिल्ली
महत्तर सदस्य, भूमध्यसागरीय अध्ययन अकादमी, एग्रीगेण्टो, इटली
अध्यक्ष, एशिया इन्स्टिट्यूट, तोरीनो, इटली

(कार्यालय/आवास)
...3, डिफेंस कालोनी,
नई दिल्ली-110024
...6644, 24336631
...ईल: 9650117463
...vrat-shastri.net
...stri@gmail.com

पुरोवाक्
Forewords + Blessings

...2021

विश्व के कतिपय अत्यन्त महत्त्वपूर्ण और लोकप्रिय ग्रन्थों में एक श्रीमद्भगवद्गीता है। विश्व की लगभग हर प्रमुख भाषा में इसका अनुवाद हुआ है। शङ्कराचार्य, मध्वाचार्य, रामानुजाचार्य आदि हर सम्प्रदाय के आचार्यों ने इस पर भाष्य लिखे हैं। प्राचीन काल से लेकर अर्वाचीन काल तक विद्वानों की सुदीर्घ शृङ्खला रही है जिसने इसकी व्याख्या की है, इस पर टीका-टिप्पण लिखे हैं, इसके गूढ तत्त्व का विश्लेषण करने का प्रयास किया है। सुनने में आता है कि इण्डिया आफिस लाइब्रेरी, लण्डन में सहस्र से अधिक गीता से सम्बद्ध ग्रन्थ हैं। इतने गीतापरक विशाल वाङ्मय के रहते एक नवीन गीता की व्याख्या प्रस्तुत करना एक बहुत बड़े साहस का काम है। डा० गुलाब कोठारी ने यह साहस दिखाया है। इनकी व्याख्या-दृष्टि एक सर्वथा नवीन ढंग की है। इस ढंग के लिये एक विशेष प्रकार के चिन्तन, एक गहन अन्तर्दृष्टि, एक नवनवोन्मेषशालिनी प्रतिभा की आवश्यकता थी जो भगवान् पद्मनाभ ने उन्हें भरपूर मात्रा में प्रदान की है। जिस प्रकार अपने विराट् स्वरूप का दर्शन कराने के लिये भगवान् ने अर्जुन को दिव्य चक्षु प्रदान की थी — दिव्यं ददामि ते चक्षुः पश्य मे योगमैश्वरम् — उसी प्रकार अपनी वाणी के रहस्य को समझने के लिये उन्होंने डा० गुलाब कोठारी जी को दिव्य चक्षु प्रदान की है। विराट् को जानने के लिये विराट् होना पड़ता। चक्षु को

जानने के लिये ब्रह्म होना पड़ता है — ब्रह्मविद् ब्रह्मैव भवति।

गीता पर चर्चा करते समय जिस पर सबसे पहले ध्यान जाता है वह गीता शब्द ही है। इसका अर्थ है जो गाई गई। गीता एक गीत है। जो भगवान् पद्मनाभ के मुखपद्म से निकला — या स्वयं पद्मनाभस्य मुखपद्माद् विनिःसृता। यह सभी उपनिषदों का सार संक्षेप है जो गीतारूप में भगवान् ने प्रस्तुत कर दिया। प्रत्येक अध्याय की पुष्पिका में प्रयुक्त श्रीमद्भगवद्गीतासूपनिषत्सु शब्द इसी का संकेत करते हैं। उपनिषद् का एक दूसरा नाम रहस्य है। स्वाभाविक है उनका सार-संक्षेप भी रहस्य ही है। उस रहस्य के उद्घाटन में शताब्दियों से विद्वत्परम्परा लगी रही। उसी कड़ी में डा० कोठारी का प्रस्तुत प्रयास है।

गीता के रहस्योद्घाटन के समय उन परिस्थितियों को ध्यान में रखना आवश्यक है जिनमें गीता गाई गई। दोनों ओर की — कौरवों और पाण्डवों की सेनाएं आमने-सामने थी। शंखनाद हो चुका था युद्ध प्रारम्भ होने को था। उस समय अर्जुन ने भगवान् से कहा कि दोनों सेनाओं के बीच उसका रथ स्थापित कर दें — सेनयोरुभयोर्मध्ये रथं स्थापय मेऽच्युत ताकि मैं देख सकूँ कि मुझे युद्ध किनसे करना है — कैर्मया सह योद्धव्यमस्मिन् रणसमुद्यमे। वे देखते हैं सामने उन्हीं के रूप में खड़े उसके गुरुजन, उसके सम्बन्धी। उसे विषाद घेर लेता है। वह कह उठता है मैं युद्ध नहीं करूँगा और चुप हो जाता है — न योत्स्य इति गोविन्द — मुक्त्वा तूष्णीं बभूव ह। उस समय भगवान् उन्हें कहते हैं — उत्तिष्ठ कौन्तेय युद्धाय कृतनिश्चयः — मन दृढ कर युद्ध के लिये खड़े हो जाओ — उत्तिष्ठ और प्रारम्भ हो जाती है भगवान् की गीतध्वनि जो चलती रहती है अठारह अध्याय जिसमें सब कुछ आ जाता है, राजयोग, ध्यानयोग, भक्तियोग, कर्मयोग। गीत (गीता) सुनने के बाद अर्जुन कह उठता है — भगवन्, मेरा अज्ञान दूर हुआ, मुझे आत्मबोध हो गया — स्मृतिर्लब्धा। अब मैं खड़ा हूँ — स्थितोऽस्मि। उत्तिष्ठ से गीता प्रारम्भ होती है और स्थितोऽस्मि से इसकी परिसमाप्ति होती है। उत्तिष्ठ और स्थितोऽस्मि के बीच

[illegible]

जीवन में अवसाद - विषाद के लिये कोई स्थान नहीं है। श्रीमद्भगवद्गीता का यही सन्देश है - व्यक्ति के लिये, समाज के लिये, समस्त प्राणियों के लिये।

डा० गुलाब कोठारी पण्डित मधुसूदन ओझा की परम्परा के विद्वान् हैं। व्याख्यातव्य ग्रन्थ के शब्दों के भीतर एक अर्थ समाहित रहता है। अग्नितत्त्व, सोमतत्त्व, सूर्यतत्त्व आदि से उनका सार छिपा रहता है। वही सार वस्तुतत्त्व तक पहुंचा देता है। डा० गुलाब कोठारी जी ने इसी परिप्रेक्ष्य में श्रीमद्भगवद्गीता की व्याख्या की है। रहस्य (=उपनिषद्) के सार के रहस्य को उद्घाटित किया है। न केवल प्रत्येक उत्तरकाल में अपितु प्रत्येक देश में इस कृति की स्थापना समष्टि और व्यष्टि दोनों के लिये लाभकारी है।

इस प्रस्तुत कृति के प्रणयन के लिये डा० गुलाब कोठारी जी का शत-शत अभिनन्दन।

सत्यव्रत शास्त्री

सी-248, डिफेंस कालोनी,
नई दिल्ली-110024
दिनाङ्क 20.05.2014.

सोमनाथ दाश
को e-mail से
P.K. Mishra (प्रफुल्ल
कुमार मिश्र) की ई-मेल का
पता कर उस पर भेजना

ज्ञानपीठ पुरस्कार सम्मानित
प्रो. सत्यव्रत शास्त्री
...अकादमी, एग्रीगेण्टो, इटली

पता (कार्यालय/आवास)
C-248, डिफेंस कालोनी,
नई दिल्ली-110024
दूरभाष: 011-24336644, 24336631
मोबाईल: 9650117463
वेबसाईट: satyavrat-shastri.net
ईमेल: drsatyavratshastri@gmail.com

20.05.2021.

आशीर्वचांसि

संस्कृतजगति परां प्रसिद्धिमुपगताः कविसहृदयहृद्याः सरस्वत्याः स्तनन्धयाः आचार्यप्रफुल्लकुमारमिश्रमहाभागाः नानाकाव्यानां प्रणेतारः। यथाऽनन्तरत्नप्रभवस्य हिमवतो रत्नान्येकैकशः प्रभवन्ति तथैव तेषां प्रतिभाविलासाद् यथाकाले काव्यरत्नानि प्रभवन्ति। तेषां रत्नानामेकत्र सञ्चयो भवेत् इत्येषां संस्कृतसाहितीप्रियाणां परां परितोषयेत बुद्धिं दृष्ट्वा कविराचार्यमिश्रमहाभागैः 'ब्रह्मनिलये' इति नाम्ना तत्सङ्कलनं प्रकाशितमित्येतदर्थं ते सुतरामभिनन्दनार्हाः। रमणीया तत्काव्यशैली, रमणीयो वाग्गुम्फो रमणीयं च वस्तु। सर्वमिदं काव्येषु रमणीयमेवं एवं रमणीयं कं न मोहयेत्?

एतेषां दीर्घायुष्यं स्वास्थ्यं श्रेयो यशश्च नैरन्तर्येण काव्यसर्जनं च सम्प्रार्थयेऽहं लोकशङ्करं भगवन्तं शङ्करम्।

सत्यव्रतशास्त्री

नवदेहली
20.05.2021

।। शुभाशिषः।।

श्रीमत्या डा. मीनाम्बाळ् नारायणन् महाभागया विरचितो भूषणसारशोभेति ग्रन्थो मया निपुणं निरीक्षितः। वैयाकरणभूषणसारो नाम व्याकरणविदां मूर्धन्येन श्रीमता भट्टोजिदीक्षितेन विरचितानां कारिकाणां श्रीकौण्डभट्टकृतव्याख्यारूपः। प्रथमं भट्टोजिदीक्षितेन, शेषावतारभूतेन भगवता पतञ्जलिना विरचितस्य महाभाष्यस्य व्याख्यारूपः शब्दकौस्तुभनामा ग्रन्थो विरचितः। पतञ्जलिकृतं भाष्यं न केवलं भाष्यमपि तु 'महा'भाष्यम्। एतद्विषये सम्यगेवोक्तं वाक्यपदीयकारेण भर्तृहरिणा यदिदं सर्वेषां न्यायबीजानां निबन्धनमिति। ज्ञानसिन्धुरयं ग्रन्थः। अत एवैतद्विषय उच्यते -

अलब्धगाधे गाम्भीर्यादुत्तान इव सौष्ठवात्।
तस्मिन्नकृतबुद्धीनां नैवावास्थित निर्णयः।।

तस्य ग्रन्थस्य व्याख्यां प्रस्तोतुं कैयटभट्टोजिदीक्षितादयः प्राभवन्। यथा क्षीराब्धेर्मथितात्कौस्तुभमणिरुद्धृतस्तथेव महाभाष्याब्धेर्मथिताच्छब्दकौस्तुभरूपो व्याख्यामणिर्भट्टोजिदीक्षितेनोद्धृतः। तस्यैव सारस्तेन कारिकारूपेण प्रस्तुतः। सारः प्रसारमपेक्षेत सुखबोधायेति तद्व्याख्यानं प्रस्तुतं श्रीकौण्डभट्टेन। सुखबोधाय प्रवृत्तमपि तद् व्याख्यानं नाकल्पत। तद् वस्तु सुग्राह्यतामापादयितुमिति श्रीमत्या डा. मीनाम्बाळ् नारायणन् महाभागया तद्व्याख्याने दत्तं मनः। साफल्यं च तयालम्भि पूर्णतः। गम्भीरातिगम्भीरोऽपि तद्विषयस्तया स्वभाषया न्यक्षेण विशदीकृतः। तदर्थं सा सुतरामभिनन्दनार्हा।

वैयाकरणशब्दस्य द्विविधा व्याख्या व्याकरणमधीते वेद चेति।

तथाहि पाणिनिसूत्रम् - तदधीते तद्वेद। तया न केवलं व्याकरणमधीतमेव सेदं सम्यग्वेदापि। वेदो (= ज्ञानम्) अपि द्विविधं भवति। शब्दार्थज्ञानमेव, तलस्पर्शि चापि रहस्योद्भेदनरूपं नाम। तथाहि शास्त्रकृतां डिण्डिमः - "स वै वेद यो रहस्यं वेद।" डा. मीनाम्बाळ्विदुष्या ज्ञानमुभयविधमपीति पराय नः सन्तोषाय।

आकरग्रन्थानामध्ययनेऽध्यापने च प्रवृत्तिं यदा ह्रसिमानमुपयान्तीं पश्यामि तदा भवामि चिन्ताशान्तचेताः। यदा डा. मीनाम्बाळ्सदृशीः शास्त्ररहस्योद्भेदनैकचक्षुष्काः पश्यामि तदा भवामि निर्वृतस्वान्तः।

अहं तामाशीराशिभिर्वर्धयामि प्रार्थये च भगवन्तं पार्वतीजानिं तस्या दीर्घायुष्यं स्वास्थ्यं च।

नवदिल्ली **सुरसरस्वतीसमाराधनैकव्रतः**
दिनाङ्कः २१-९-२०२१ **सत्यव्रतः शास्त्री।**

तदिदमत्र वक्तव्यं प्रतिभाति यद् वैयाकरणाः श्रीमन्तः डा. सत्यव्रत-शास्त्रिमहोदयाः महाकाव्यत्रयाणां, खण्डकाव्यत्रयाणां, प्रबन्धकाव्यस्य, पत्रकाव्यस्य, पञ्चानां संस्कृतसाहित्यविषयकविमर्शकग्रन्थानाञ्च रचयितारः सन्तः, १९६८ तमे वर्षे 'साहित्यअक्कादमी'पुरस्कारेण, १९९९ तमे वर्षे 'पद्मश्री'पुरस्कारेण, २००६ तमे वर्षे 'ज्ञानपीठ'पुरस्कारेण, २०१० तमे वर्षे 'पद्मभूषण'पुरस्कारेण च भारतसर्वकारैः सभाजिताः विराजन्ते। महानुभावानां तत्रभवताम् आशीर्वचनैः अयं जनः धन्यम् आत्मानं मनुते।

ग्रन्थकर्त्री

I have the pleasure of going through the work *Smrti-pancasika* of the eminent literary writer and critic Dr. Uma Kant Shukla which at once reminded me of the *Caura-pancasika* of the Kashmirian poet Bilhana being so common with it not only in sharing with it a part of the title pancasika but also content, style as also the metre, both having been composed in Vasantalika. What it does not share with it is the refrain *adyapi,* even now, with which each stanza in the former begins though *smarami,*"I remember ", it has in a couple of verses. The composition is marked by racy style., at once simple and perspicuous.

The Kavya under reference draws a vivid picture of a forlorn hero separated from his beloved who has in his thoughts the comely figure of his lady-love. He remembers every bit of it, her sparkling eyes, her thin waist-line, her plum bosom, her buxom buttocks, her swings of mood in keeping with different seasons, her dalliances, her bewitching side-glances, her overly dalliances, her quaint moves under the torment of impulsive love, her impassioned caresses, her wistful eyes in longing to meet her lover, her coquetry. The word picture is so complete, drawn in all its contours.

The finished poet that he is the author embellishes his poetry with a number of figures of speech, the similes, the metaphors, the fancies. His choice of words is with alliterative jingle cannot but leave a lasting impression on the mind of the readers.

He has full grasp of the genius of the language which he handles so artistically.

The Kavya carries a translation of it in English by Prof. Jagadish Prasad Savita of the Department of English of the S.D. College, Muzaffarnagar (now retired). His mastery of English expression as also of Sanskrit language with an in-depth understanding of its nuances would not have enabled him to undertake the arduous task has really surprised me. The Kavya is translated in Hindi by Dr. Susmita Sharma, he able daughter of the learned author. These translations will enable even a non-Sanskrit-knowing reader or a reader with a nodding acquaintance of it to appreciate the surge of emotions, imagined and captured, in the mind of a person separated from his beloved.

Dr. Uma Kant Shukla deserves full plaudits for producing a work of art which is a joy forever.

C-248, Defence Colony,
New Delhi-110024
29.12.2020

Satya Vrat Shastri

ज्ञानपीठ पुरस्कार सम्मानित
पद्मभूषण तथा राष्ट्रपति सम्मान प्राप्त
महामहोपाध्याय विद्यावाचस्पति विद्यामार्तण्ड

प्रो. सत्यव्रत शास्त्री

पूर्व अध्यक्ष, द्वितीय संस्कृत आयोग, भारत सरकार
सम्मनित आचार्य (प्रोफेसर एमेरिटस), दिल्ली विश्वविद्यालय
अभ्यर्हित आचार्य, विशिष्ट संस्कृत अध्ययन केंद्र,
जवाहरलाल नेहरू विश्वविद्यालय, नई दिल्ली
पूर्व कुलपति, श्री जगन्नाथ संस्कृत विश्वविद्यालय, पुरी (ओडिशा)
महत्तर सदस्य, साहित्य अकादमी, नई दिल्ली
महत्तर सदस्य, भूमध्यसागरीय अध्ययन अकादमी, एग्रीगेण्टो, इटली

पता (कार्यालय/आवास)
C-248, डिफेंस कालोनी,
नई दिल्ली-110024
दूरभाषः 011-24336644, ~~24336631~~
43516755 मोबाईलः 9650117463
वेबसाईटः satyavrat-shastri.net
ईमेलः drsatyavratshastri@gmail.com

30.12.2020.

आदरणीय डा० साहब,

सस्नेह नमस्कार।

आदेशानुसार चार आलेख भेज रहा हूँ। इन पर आवश्यकतानुसार शीर्षक दे लीजियेगा। और भी जो कुछ जोड़ना हो जोड़ लीजियेगा।

मैं चाहता था टाईप करा कर आपको भेजता पर यह सम्भव न हो सका। मेरा टाइपिस्ट कोरोना के कारण गाँव चला गया है। अतः हाथ का लिखा ही भेजना पड़ रहा है। मेरा हस्तलेख सुस्पष्ट नहीं है। मैं जो भी लिखता हूँ, द्रुतगति से लिखता हूँ अतः अक्षर-विन्यास में और अस्पष्टता आ जाती है। अतः टाईप करवा कर मुझे एक बार दिखला दें जिससे शुद्ध मुद्रण हो सके।

किमधिकं विज्ञेषु।

सदैव आपका —
सत्यव्रत शास्त्री

डा० उमाकान्त शुक्ल जी,
मुजफ्फर नगर

ज्ञानपीठ पुरस्कार सम्मानित
पद्मभूषण तथा राष्ट्रपति सम्मान प्राप्त
महामहोपाध्याय विद्यावाचस्पति विद्यामार्तण्ड

प्रो. सत्यव्रत शास्त्री

पूर्व अध्यक्ष, द्वितीय संस्कृत आयोग, भारत सरकार
सम्मनित आचार्य (प्रोफेसर एमेरिटस), दिल्ली विश्वविद्यालय
अभ्यर्हित आचार्य, विशिष्ट संस्कृत अध्ययन केंद्र,
जवाहरलाल नेहरू विश्वविद्यालय, नई दिल्ली
पूर्व कुलपति, श्री जगन्नाथ संस्कृत विश्वविद्यालय, पुरी (ओडिशा)
महत्तर सदस्य, साहित्य अकादमी, नई दिल्ली
महत्तर सदस्य, भूमध्यसागरीय अध्ययन अकादमी, एग्रीगेण्टो, इटली

पता (कार्यालय/आवास)
C-248, डिफेंस कालोनी,
नई दिल्ली-110024
दूरभाषः 011-24336644, 24336631
मोबाईलः 9650117463
वेबसाईटः satyavrat-shastri.net
ईमेलः drsatyavratshastri@gmail.com

अद्य महाकविभिराचार्यैरभिराजराजेन्द्रमिश्रमहाभागैः प्रणीतं चेतःपञ्चाशिकेति काव्य-
मामूलचूलमध्यगामि। प्रवाहितश्च तेन काव्येनानेन मम 'चेतसि' करुणानन्द-
निर्झरो वाचामगोचरः। रम्या अत्र पदशय्या, रम्या शैली, रम्यं च
वस्तु। सर्वमिदं रम्यमेव। अत्र स्वभावोक्तिः प्रमाणिता कविवरैः। विकर्माणि
जनानां प्रवृत्तिः स्वाभाविकी। तस्य कर्माणि कथं प्रवृत्तिमवाप्स्यन्तीति कविवराणा-
मुपदेशः। भगवत्पादैर्गीतायामुक्तम्-

कर्मणोऽपि बोद्धव्यं बोद्धव्यं च विकर्मणः।
अकर्मणोऽपि बोद्धव्यं गहना कर्मणो गतिः॥

मनसो विषये प्रोक्तम्- मनो दुर्निग्रहं चलं प्रमाथि बलवद् दृढम्।
अभ्यासेन तु कौन्तेय वैराग्येण च गृह्यते। अत्र काव्ये चेतः कथं प्रवर्तते
कथं च तेन प्रवर्तनीयमित्युभयमपि निर्दिष्टम्। तथा हि - [illegible] स्वयं [illegible],
अप्राप्त[illegible]षु; अप्राप्तैः [illegible] स्पृहा, कैतवं नाहि, स्वाध्यायनिरतस्य [illegible];
शान्तं मनः, [illegible] प्रसादि।

कुत्रचित्काव्ये गीतायामपि विलोक्यते -
काव्ये -
सुखं च दुःखं चलमेव लोके
जयं तथा चैव पराजयं च।
लाभं च हानिं च विहाय चेतः
कुर्याः क्रियां कृत्यविवेकयुक्ता॥
श्रीमद्भगवद्गीतासु -
सुखदुःखे समे कृत्वा
लाभालाभौ जयाजयौ।

ज्ञानपीठ पुरस्कार सम्मानित
पद्मभूषण तथा राष्ट्रपति सम्मान प्राप्त
महामहोपाध्याय विद्यावाचस्पति विद्यामार्तण्ड

प्रो. सत्यव्रत शास्त्री

पूर्व अध्यक्ष, द्वितीय संस्कृत आयोग, भारत सरकार
सम्मनित आचार्य (प्रोफेसर एमेरिटस), दिल्ली विश्वविद्यालय
अभ्यर्हित आचार्य, विशिष्ट संस्कृत अध्ययन केंद्र,
जवाहरलाल नेहरू विश्वविद्यालय, नई दिल्ली
पूर्व कुलपति, श्री जगन्नाथ संस्कृत विश्वविद्यालय, पुरी (ओडिशा)
महत्तर सदस्य, साहित्य अकादमी, नई दिल्ली
महत्तर सदस्य, भूमध्यसागरीय अध्ययन अकादमी, एग्रीगेण्टो, इटली

पता (कार्यालय/आवास)
C-248, डिफेंस कालोनी,
नई दिल्ली-110024
दूरभाषः 011-24336644, 24336631
मोबाईलः 9650117463
वेबसाईटः satyavrat-shastri.net
ईमेलः drsatyavratshastri@gmail.com

आचार्यवर्यैर्डॉ॰ उमाकान्तशुक्लमहाभागैर्वसन्ततिलकवृत्तेनोपनिबद्धमत एव "अन्योक्तिवसन्ततिलकम्" इति नाम बिभ्रत्काव्यं स्वादुस्वादं पठितम्। मुग्धश्चाहं तद्रसचर्वणेन। प्रसादमय्या शैल्या निबद्धं सततप्रवहत्सूक्तिनिर्झरमिदं तत्कं वा न मोहयेत्।

अन्योक्तिरूपो भावबन्धोऽस्मद्देशेऽतिप्राचीनः कालिदासादिकविभिरपि समाश्रितः। परं तस्याधिकः प्रयोगोऽष्टम्यां वा नवम्यां वा शताब्द्यां वा रचिते संस्कृतवाङ्मये दृग्गोचरीभवति। ततः पूर्वं पद्यं वा पद्यद्वयं वा यत्र कुत्रापि दृष्टिपथमवतरति। प्रचुरं समाश्रयणमस्य प्रथमतो योगवासिष्ठमहारामायणेऽवलोक्यते, तत्रापि तस्योत्तरार्धभागे, तत्रापि तस्यान्तिमे भागे। नाना सर्गास्तत्रान्योक्तिबन्धं बद्ध्वा उल्लसन्ते सहृदयानां कृते विचारविमर्शस्यास्पदताम्। तदनन्तरं पण्डितराजजगन्नाथेन स्वकाव्यानि भूषितानि बहुभिरन्योक्तिभिः। तासु विशिष्टं प्रसिद्धिमासादयन्ती उद्ध्रियमाणा चेयम् —

रे रे चातक सावधानमनसा मित्र क्षणं श्रूयताम्
अम्भोदा बहवो वसन्ति गगने सर्वे तु नैतादृशाः।
केचिद् वृष्टिभिरार्द्रयन्ति वसुधां गर्जन्ति केचिद् वृथा
यं यं पश्यसि तस्य तस्य पुरतो मा ब्रूहि दीनं वचः॥

यत्र अन्योक्तेः स्वरूपं भवति यदन्योक्तिर्नाम तस्य कृते भवत्यपि अन्यस्यापि कृते। उपर्युद्धृते पद्ये आभिमुख्यं चातकं प्रति, चातकस्तत्र सम्बोधितः। अभिप्रायस्तत्र चातकस्य न, अपि तु याचकस्य। एवमेवाम्भोदैर्दातारोऽभिप्रेताः। यथा मेघा नानाविधास्तथा दातारोऽपि। केचिद् दातारः कामान् पूरयन्त्यर्थिनां, केचित्पुनर्नैव किञ्चिद् ददति, यदि ददत्यपि तद् ददते भर्त्सनामेव। याचकेन तावदस्य विवेकेन प्रवर्तितव्यम्। स एव बुद्धिमान्

ज्ञानपीठ पुरस्कार सम्मानित
पद्मभूषण तथा राष्ट्रपति सम्मान प्राप्त
महामहोपाध्याय विद्यावाचस्पति विद्यामार्तण्ड

प्रो. सत्यव्रत शास्त्री

पूर्व अध्यक्ष, द्वितीय संस्कृत आयोग, भारत सरकार
सम्मनित आचार्य (प्रोफेसर एमेरिटस), दिल्ली विश्वविद्यालय
अभ्यर्हित आचार्य, विशिष्ट संस्कृत अध्ययन केंद्र,
जवाहरलाल नेहरू विश्वविद्यालय, नई दिल्ली
पूर्व कुलपति, श्री जगन्नाथ संस्कृत विश्वविद्यालय, पुरी (ओडिशा)
महत्तर सदस्य, साहित्य अकादमी, नई दिल्ली
महत्तर सदस्य, भूमध्यसागरीय अध्ययन अकादमी, एग्रीगेण्टो, इटली

पता (कार्यालय/आवास)
C-248, डिफेंस कालोनी,
नई दिल्ली-110024
दूरभाषः 011-24336644, 24336631
मोबाईलः 9650117463
वेबसाईटः satyavrat-shastri.net
ईमेलः drsatyavratshastri@gmail.com

संस्कृत के ख्यातनामा महाकवि डा० उमाकान्त शुक्ल द्वारा विरचित अनुबोधपञ्चा-
शिका काव्य का आमूलचूल अध्ययन मैंने किया। उससे जो आनन्द आया वह वर्णना-
तीत है। यह काव्य उस कोटि में आता है जिसे अंग्रेजी में एलेजी (Elegy)
(शोकगीत) कहा जाता है। बिल्हण कवि की चौरपञ्चाशिका से समानवस्तुतः इसकी रचना
अनुप्रेरित हुई है। छन्द वही नहीं है। बिल्हण ने वसन्ततिलका छन्द में अपने काव्य
की रचना की, डा० उमाकान्त शुक्ल ने उपजाति छन्द अपनाया। बिल्हण ने
अद्यापि से अपने पद्यों को प्रारम्भ किया और अधिकांश का समापन से — कहीं-कहीं
विस्मरामि और चिन्तयामि से भी — उनका परिसमापन किया। प्रेयसी का वर्णन दोनों में
एक सा है। सन्दर्भ दोनों में नहीं है। एक दन्तकथा के अनुसार एक कवि को एक राजकन्या
से प्रेम हो गया था। उसके दुःसाहस को देख राजा ने उसे मृत्युदण्ड दिया। वधस्थान की
(जाती) ले जाये जाते हुए भी उसे अपनी प्रेमिका ही याद हुई, उसी के बारे में, उसी की स्मृति के
में वह खोया रहा। उसके इस प्रणयोत्कर्ष से राजा पसीज गया। उसने मृत्युदण्ड
वापिस ले लिया और दोनों का विवाह कर दिया। चौरपञ्चाशिका के
अनुसार यह उनकी अपने जीवन की घटना थी जिसे उन्होंने शब्दरूप प्रदान
किया था। यदि यह दन्तकथा सच है तो एक घटना-विशेष इस काव्य, चौर-
पञ्चाशिका के प्रणयन में हेतु बना। पर हमारे कवि के जीवन में अनुरूप
से कोई ऐसी घटना नहीं घटी। फिर भी उन्होंने अपने को एक विशेष परिवेश
(प्रति) स्थापित कर — यह उनकी कल्पनाशक्ति का कमाल है — इस प्रकार के काव्य
की रचना कर डाली। इस दृष्टि से यह काव्य संस्कृत वाङ्मय में एक अनूठा
प्रयोग कहा जा सकता।

भाषा इसकी बहुत प्रवाहमय है। नायिका की आकर्षक देहयष्टि, उसका
शृङ्गार, उसके हाव-भाव, उसका अपने प्रेमी को समर्पण — ये सभी को
कवि ने शब्दचित्रों से अङ्कित किया है। यह सचमुच अद्भुत है। उसके
सूक्ष्म से सूक्ष्म भाव को कवि की शब्दशालिनी लेखनी [illegible]
[illegible] प्रकार।

वह अतुलनीय है।

कवि ने अपने को नायिका के नख-शिख सौन्दर्य तक ही सीमित नहीं रखा, अपितु वे नायक को केवल उसी की ही बातें नहीं भातीं, उसकी छोटी-छोटी आदतें भी उसे याद आती हैं। उसका तोते को चुग्गा देना और उसका उड़ कर उसे चोंच में धर लेना और उससे नायिका का खुश होना (पद्य ४), कोयल की कूक सुनकर उसमें तन्मय हो जाना, उसका सामुद्रिक रीति से हटकर विभिन्न शैलियों में एक तिनके से प्रियतम के नाम के साथ अपना नाम लिख लेना — इसी तरह की और बहुत सी बातें।

जिस तरह अलंकार (= आभूषण) सुन्दर शरीर को और अधिक आकर्षक बनाते हैं — उत्कर्षाधायक होते हैं — उसी प्रकार अनुप्रास, उपमा, उत्प्रेक्षा अलंकार भी काव्य को, यदि वह उत्कृष्ट होती है उसे और उत्कृष्ट एवं आकर्षक बनाते हैं। कवि ने अपने काव्य में इनका भरपूर उपयोग किया है।

काव्य हिन्दी और अंग्रेज़ी अनुवाद के साथ प्रकाशित है। दोनों ही भाषाओं में अनुवाद अत्यन्त उत्कृष्ट कोटि के हैं। अंग्रेज़ी में अनुवाद मुज़फ्फ़रनगर के सनातनधर्म कालेज के अवकाशप्राप्त इतिहासविभाग के अध्यक्ष प्रोफेसर श्री जगदीश प्रसाद सेठिया ने किया है और हिन्दी अनुवाद डा० उमाकान्त की सुपुत्री डा० सुस्मिता शर्मा ने। दोनों ही अनुवाद बहुत उत्तम कोटि के हैं। इनसे उन पाठकों को भी जिनकी संस्कृत में पर्याप्त पकड़ नहीं है इसे समझने तथा इसका रसास्वादन में सुविधा होगी।

डा० उमाकान्त शुक्ल उस प्रकार के कवि हैं जिन्हें लक्षित कर ही यह कहा गया होगा —

जयन्ति ते सुकृतिनो रससिद्धाः कवीश्वराः।
नास्ति येषां यशःकाये जरामरणजं भयम्॥

सत्यव्रत शास्त्री

View Nomination

Download & Print

Nomination ID : AAD212172658 **Name** : Mr Satya Vrat
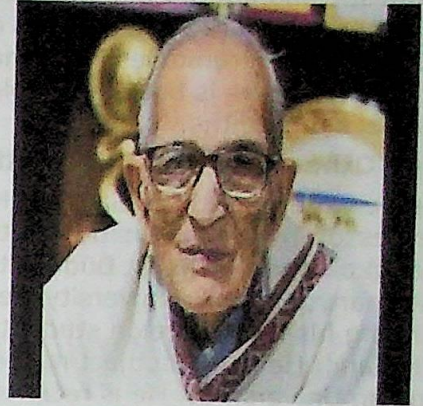
Applied For : Padma Vibhushan **Field** : Literature & Education

Sub Field : Culture and Indology :

Father's Name : Charu Deva Shastri **DOB** : 30/09/1930
Age : 91 **Gender** : Male
Mobile Number : 9811046009 **Email-Id** : drsatyavratshastri@gmail.com
Profession : Author **Country** : India
State : DELHI **District** : SOUTH
Address : C 248 Defencde Colony New Delhi 110024

Posthumous : No :
Nominated By : Shalini Sarin (Others Individual) **Nominated Date** : 11/09/2021

Brief Write-up on the Work Done by the Nominee

He is one of those rarest of the rare Sanskrit scholars who has introduced new genres in Sanskrit. His two-volume Patrakavyam, a corpus of letters in Sanskrit verses numbering 3500 is the first work of its kind. So is his Sanskrit autobiography Bhavitavyanam dvarani bhavanti sarvatra in three volumes of about a thousand pages which has the unique distinction of having been translated in English and Chinese. His Sanskrit epic Sriramakirtimahakavyam in two thousand stanzas based on the Thai Rama story, is the first work on any foreign version of it. His poetic travelogues Thaidesavilasam and Sarmanyadesah sutaram vibhati on Thailand and Germany are pioneering attempts. The latter was broadcast serially from Deauche Welle, the German Radio. His seven-volume Discovery of Sanskrit Treasures sheds light on many unknown areas of Sanskrit literature like the language of the Yogavasistha, Concept of Time in Post-Vedic Sanskrit Literature, Contribution of Muslims to Sanskrit in Medieval Period, Christian Literature in Sanskrit. So does his 550- page Glimpses of History of Sanskrit Literature. Internationally his work led to • the setting up of the Sanskrit Study Centre at the Silpakorn University, Bangkok, the first one of its kind in Southeast Asia • Introduction of Sanskrit conversation amongst teachers and students at University of Tubingen in Germany enabling many of them to speak in Sanskrit fluently • the decision by Department of South Asian Studies at Peking University to produce 60 Scholars of Sanskrit, during his brief teaching assignment in China.

Area/Field/Sector/Domain of Work Done *

Sanskrit Poet , Original thinker, Interpreter of the old tradition, critic, playwright ,translator , author of Dissertations on Indology

Number of Years Working in the Field

50

Impact/ Outcome/ Contribution of the Work Done

He propagated Sanskrit not only in India but even abroad. He was Visiting Professor in six universities on three continents. He has unique distinction of introduction Sanskrit in Thai Royal Household. Her Royal Highness Maha Chakri Sirindhorn, the Princesses of Thailand is his student. He had his own style of teaching which made even the most difficult subject interesting. The work Sanskrit based words in Languages of Southeast Asia in about a thousand pages produced under

his general editorship is the first attempt to trace scientifically the entire Sanskritic content in languages of southeast Asian region highlighting its linguistic affinity with India. Sanskrit inscriptions of Thailand, numbering 75 discovered by him from different parts of Thailand were deciphered, transliterated in Roman and Devnagari and studied from socio historical, cultural, linguistic and literary perspectives. The work has been hailed as a landmark in Indo-Thai studies. Another landmark work of his is on the Brahmana community of Thailand which plays an important part in royal ceremonies including coronation. The work Brahamanas of Thailand Scriptures, Rituals and Ceremonies is based on prolonged late night conversational sessions with Maharajaguru for weeks and months.

Any Other Relevant Information

He has authored three Sanskrit Mahakavyas of about a thousand stanzas each. He was Visiting Professor in five universities on three continents, Chulalongkorn and Silpakorn Universities, Bangkok and Northeast Buddhist University, Nongkhai, Thailand; Karl Erhard University, Tubingen, Germany; Catholic University, Leuven, Belgium and the University of Alberta, Edmonton, Canada. Among his many foreign students is Her Royal Highness Maha Chakri Sirindhorn, the Princess of Thailand. He is the subject matter of twenty theses for the degrees of M.Phil., Ph.D. and D.Litt. in Indian Universities. He is recipient of 108 honours and awards, national and international including Padma Shri, Padma Bhushan, President of India Certificate of Honour, Thai Royal Decoration "The Most Admirable Order of Direk Gunabhorn", Authorita Academische Italiano Straniere, the Civil and Academic Authority for Foreigners from the Govt. of Italy, Golden Prize from CESMEO, the International Institute of Advanced Asian Studies, Torino, Italy and five Honorary Doctorates from Indian and foreign universities. The Academia Studi Mediterrani, the Academy of Mediterranean Studies, Aggrigento, Italy elected him its Fellow. So did the Sahitya Akademi, New Delhi. In the Citation for the Honorary Doctorate at the Silpakorn University, Bangkok he was described as a living legend in the field of Sanskrit

Document
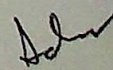
Details of Any Awards or Honors Received by the Nominee

Sr.No.	Award Name	Year of Award	Field	Type Of Award	Award Authority
1	Padma Shri	1999	Education & Culture	National	Govt of India
2	Padma Bhushan	2010	Education & Culture	National	Govt of India
3	Jnanpith	2009	Education & Culture	National	Bharatiya Jnanpith
4	Doctorate Honoris Causa	2001	Education	International	University of Oradea, Oradea, Romania
5	Sahitya Akademi	1968	Education & Culture	National	Govt of India

Sr.No.	Award Name	Year of Award	Field	Type Of Award	Award Authority
6	Golden Award	2001	Lifetime Achievement	International	CESMEO, International Institute for Advanced Asian Studies, Torino, Italy
7	Royal Thai Decoration	2015	Lifetime Achievement	International	Govt of Thailand
8	President Certificate of Honour	1985	Education & Culture	National	Govt of India

7. Recommendations for Maharshi Badrayan Vyas Samman may be made only for those young Scholars who have made a breakthrough in inter-disciplinary studies involving contribution of Sanskrit or ancient Indian wisdom, to the process of synergy between modernity & tradition and Scientist & I.T professional working for promotion of science in these languages.

8. The recommendations should clearly bring out the specific achievement for which the Award is recommended and may please be sent **along with character & antecedent certificate** of the scholar in the proforma enclosed, to the Ministry latest by **15th May, 2021**. Incomplete recommendations and the recommendations received after the last date will not be considered. While sending recommendations, copies of **best five (maximum)** published works of the nominee along with detailed list of all published work must be forwarded in the absence of which it will not be possible to assess the suitability of the nomination for the Award.

9. Particulars in respect of the scholars recommended for the award may be furnished in the attached proforma. In the absence of full details, it becomes difficult to give due consideration to the recommendations. It is, therefore, requested that full particulars may kindly be furnished against each column of the proforma. With regard to, the awards in the international scholars category is concerned, Heads of Missions/Embassies etc. are hereby requested to furnish a resume of the published books of the scholar along with the nomination of the recommended persons in not more than two pages to facilitate the Selection Committee to assess the suitability of the scholar to the award. Further, they may also provide the English translation of the title and work of the scholars if they are in a different language

10. It is also requested the State Governments, etc. that while making the recommendations, they may carefully assess the particulars of the individuals for this purpose. While there is no objection for setting up an Expert Committee for Preliminary Selection of Scholars, they may furnish a "NIL' information in case no suitable scholar worthy of recommendations is available for the award. Names of those scholars who were recommended in previous years but not selected for the award can be considered again for this year's award.

11. While recommending the names for the Awards, it may be stressed that awards are meant for scholars who are proficient in the respective languages and the respective fields of specialization and not those with just a smattering knowledge of the literature available in these languages. It is further emphasized that all the recommending authorities may kindly take cognizance of the fact that the scholars who are being recommended for the Certificate of Honour has done exemplary work in their respective languages. In other words, the concerned recommending authorities in the Sanskrit language may kindly ensure that the scholar who is being recommended for the Certificate of Honour has written/published books in Sanskrit rather than on Sanskrit, which will otherwise defeat the purpose for which the award is given.

12. It is requested that where considered necessary, Universities/Literary and other Voluntary Organizations etc. may also be consulted confidentially before making the recommendation.

13. These Awards are not awarded to those scholars who received this award earlier; or not awarded posthumously; or not awarded to persons who have been convicted by a court in a criminal case or against whom any criminal case is pending in a court. Therefore, to avoid any embarrassment to the Government occurrence of any event making the nominee ineligible for the Award must be reported immediately to the Govt. and it will be the sole responsibility of the person sending the nomination to report such event.

....4/-
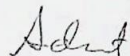
14. It is reiterated that all nominations duly recommended by the authorities to whom this letter has been addressed will only by considered by the Selection Committee for grant of awards. Nominations received from any other authority other than those to whom this letter has been addressed and working in the organizations will not be entertained.

15. The recommending authorities are requested to maintain complete secrecy and dignity of this award by not entertaining any application or request from individual scholars themselves. Discreet enquiries may be made for collecting full information/details about the concerned scholar from other sources, since they are not supposed to know that their name was being recommended. No material furnished by the Scholar himself should be entertained or sent along with the recommendation. Canvassing of any sort on the part of the scholar will be against his own interest and shall be viewed seriously.

16. Nominations complete in all respects along with the character and antecedent certificates duly signed by the respective recommending authorities should be forwarded to The Registrar, Central Sanskrit University (formerly Rashtriya Sanskrit Sansthan), 56-57, Institutional Area, Janakpuri, New Delhi-110058. Incomplete nomination and those nominations which are received after the last date will not be considered.

Encl : As above.

Yours faithfully,
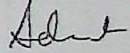
(Suman Dixit)
Deputy Secretary to the Govt. of India
☎: 011-23070446

Copy also to : -

1) The Chairman, University Grants Commission, Bahadur Shah Zafar Marg, New Delhi.
2) Director, 17-B, N.C.E.R.T., Sri Aurobindo Marg, New Delhi-16.
3) Director, National Council for Promotion of Urdu Language, Farogh-e-Urdu Bhawan, FC-33/9, Institutional Area, Jasola, New Delhi- 110025
4) Vice Chancellor, N.U.E.P.A., NCERT complex, Sri Aurobindo Marg, New Delhi.
5) Director, National Book Trust, A-5, Green Park, New Delhi-16.
6) Director, Sahitya Academy, 35, Ferozshah Road, New Delhi.
7) The Director, Central Institute of Indian Language, Manasagangotri, Mysore - 570006
8) The Chairman, Commission for Scientific and Technical Terminology, West Block No. VII, R.K. Puram, New Delhi – 110066
9) The Director, Central Hindi Directorate, West Block No. VII, R.K. Puram, New Delhi – 110066
10) The Director, Kendriya Hindi Sansthan, Hindi Sansthan Marg, Agra - 282005.
11) The Director, Central Institute of Classical Tamil, Road Transport Company Complex, 40,100 ft road, grade, Chennai 600113
12) The Director, National Council for Promotion of Sindhi Language, New Delhi
13) The Secretary, Maharishi Sandipani Rashtriya Veda Vidya Pratishthan, Ujjain, MP
14) The Registrar, Shri Lal Bahadur Shastri National Sanskrit University, New Delhi
15) The Registrar, National Sanskrit University, Tirupati
16) The Registrar, Central Sanskrit University, Janakpuri, New Delhi

With the request that the recommendations may be sent in the annexed proforma **by <u>15th May, 2021</u>** to The Registrar, Central Sanskrit University (formerly Rashtriya Sanskrit Sansthan), 56-57, Institutional Area, Janakpuri, New Delhi-110058 positively.

(Suman Dixit)
Deputy Secretary to the Govt. of India
☎: 011-23070446

LAST DATE: 15.05.2021

PROFORMA FOR RECOMMENDATION FOR PRESIDENTIAL AWARD OF CERTIFICATE OF HONOUR AND MAHARISHI BADRAYAN VYAS SAMMAN FOR THE YEAR- 2021

AWARD RECOMMENDED (Please tick mark)

I	Certificate of Honour (for scholars aged 60 years and above)	
	Maharishi Badrayan Vyas Samman (for young scholars between 30 to 45 years of age)	

FIELD FOR WHICH RECOMMENDED (Please tick mark)

II	Sanskrit		Pali		Arabic		Persian	
	Classical Oriya		Classical Malayalam		Classical Kannada		Classical Telugu	
	Prakrit							

III	Full Name of the recommending Authority (in block letters).	
	In case the recommending authority is an Awardee of Certificate of Honour, mention the year in which he/she got the award.	
	Designation of Recommending Authority.	

RECOMMENDATION FOR THE YEAR 2021

(PARTICULARS OF PERSON RECOMMENDED)

1.	Full Name (in English in block letters)	:	
	Full Name (in Hindi script)	:	
2.	Full Permanent Address	:	

Adw

No.	Particulars	:	Details
3.	i) Date of Birth	:	D D / M M / Y E A R
	ii) Age		YEARS / MONTH
4.	(a) Qualifications with the name of University, Year and Class / Division	:	
	(b) Experience with details of organization served, post held and period served.		
	(c)Subject of specialization	:	
	<u>FOR TRADITIONAL SCHOLARS</u> (Wherever applicable)		
	(a) Place and duration of study and names of *GURUS.*	:	
	(b)Higher texts in which the traditional Scholars specialized.	:	
	(c) Number of students who studied under him and the extent to which they were taught.	:	
	(d) Degrees/Diploma, if any with name o the examining body and year.		
5.	(a)Shakhas studied (b)Vikrit Pathas specialised c) Whether studies Bhashya? If so, examination passed.	:	
6.	Books/publication (a) written (b) edited (c) translated indicating subject/language	:	
7.	Number of students/Research Scholars who received Ph D/D. Litt. etc. under his guidance.	:	
8.	Recognition/honors already received, i) Title of the recognition / honor ii) year iii) the conferring authority/organization	:	
9.	Special contribution towards popularization of language concerned with details	:	
10.	Conferences / Poetic Symposia/debates/Vidwat Sabha attended if any (Indicate place, date and details of the organizers & research papers presented)	:	
11. #	Breakthrough made or work done in inter-disciplinary studies involving contribution of Sanskrit/ Persian/ Arabic /Pali/ Prakrit or Classical		

	Languages of Classical Kannada/ Classical Telugu/ Classical Malayalam/ Classical Oriya or ancient Indian wisdom to the process of synergy between modernity and tradition		
12	Please state the special reasons/detailed justification for recommending the scholar for the award.	:	

I also certify that Shri/Smt./Kum......................has not been awarded the ....earlier for which I am recommending his/her name.

Signature of the recommending Authority

(Name and seal of the recommending Authority)

Note 1: Copy of the best five (maximum) Book/Publications by the nominee must be enclosed; otherwise the recommendation shall not be entertained. After the selection process is completed, the same will be returned by Central Sanskrit University (Rashtriya Sanskrit Sansthan), New Delhi.

Note 2: #This column is required to be filled specifically in respect of scholars recommended for Maharshi Badrayan Vyas Samman and other scholars with IT and Science background.

CHARACTER & ANTECEDENT CERTIFICATE

I, ______________________________ s/o,d/o ____________________

esident of ____, capacity of (in case the recommending authority is a previous awardee of Certificate of Honour, the year of Award maybe indicated), do hereby confirm that Shri __________________ ____________________ s/o, d/o of Shri ______________________________ __________resident of____________________________________ is known to me for the last _____ years and that he /she bears a good moral character. He/she has no case pending against him/her in any Court of Law and that he/she has never been prosecuted/ convicted in the past.

I also do hereby undertake to intimates the Govt. Forthwith occurrence of any event that will make the nominee ineligible for the Award.

(____________________________)

Signature of recommending Authority

Designation:____________________

____

____

Place:

Date:

4. Nominations are, therefore, invited for the following: -

S.No.	Language	Award Particular
1.	Sanskrit (Total 21)	i) **Certificate of Honour-** 15 Awards carrying one-time cash grant of Rs.5.00 lakh each ii) **Certificate of Honour-** 1 International Award for non-resident Indian or persons of non- Indian origin carrying a one time cash grant of Rs.5.00 lakh iii) **Maharshi Badarayan Vyas Samman-** 5 Awards carrying a one time cash grant of Rs.1.00 lakh each
2.	Pali (Total 2)	i) **Certificate of Honour-** 1 Award carrying cash grant of Rs.5.00 lakh ii) **Maharshi Badarayan Vyas Samman-**1 Award carrying a one time cash grant of Rs.1.00 lakh.
3.	Prakrit (Total 2)	i) **Certificate of Honour-** 1 Award carrying cash grant of Rs.5.00 lakh ii) **Maharshi Badarayan Vyas Samman-**1 Award carrying a one time cash grant of Rs.1.00 lakh.
4.	Persian (Total 4)	i) **Certificate of Honour-** 3 Awards carrying a cash grant of Rs.5.00 lakh each ii) **Maharshi Badarayan Vyas Samman-**1 Award carrying a one time cash grant of Rs.1.00 lakh.
5.	Arabic (Total 4)	i) **Certificate of Honour-** 3 Awards carrying a cash grant of Rs.5.00 lakh each ii) **Maharshi Badarayan Vyas Samman-**1 Award carrying a one time cash grant of Rs. 1.00 lakh
6.	Classical Kannada (Total 8)	i) **Certificate of Honour-** 1 Award carrying one-time cash grant of Rs.5.00 lakh ii) **Certificate of Honour-** 2 International Awards (one each for person of Indian and non-Indian Origin) carrying a one time cash grant of Rs.5.00 lakh each iii) **Maharshi Badarayan Vyas Samman-** 5 Awards carrying a one time cash grant of Rs.1.00 lakh each
7.	Classical Telugu (Total 8)	i) **Certificate of Honour-** 1 Award carrying one-time cash grant of Rs.5.00 lakh ii) **Certificate of Honour-** 2 International Awards (one each for person of Indian and non-Indian Origin) carrying a one time cash grant of Rs.5.00 lakh each iii) **Maharshi Badarayan Vyas Samman-** 5 Awards carrying a one time cash grant of Rs.1.00 lakh each
8.	Classical Malayalam (Total 8)	i) **Certificate of Honour-** 1 Award carrying one-time cash grant of Rs.5.00 lakh ii) **Certificate of Honour-** 2 International Awards (one each for person of Indian and non-Indian Origin) carrying a one time cash grant of Rs.5.00 lakh each iii) **Maharshi Badarayan Vyas Samman-** 5 Awards carrying a one time cash grant of Rs.1.00 lakh each
9.	Classical Oriya (Total 8)	i) **Certificate of Honour-** 1 Award carrying one-time cash grant of Rs.5.00 lakh ii) **Certificate of Honour-** 2 International Awards (one each for person of Indian and non-Indian Origin) carrying a one time cash grant of Rs.5.00 lakh each iii) **Maharshi Badarayan Vyas Samman-** 5 Awards carrying a one time cash grant of Rs.1.00 lakh each

5. You are accordingly requested to recommend the names of only those Scholars of eminence in the field of Sanskrit, Pali, Prakrit, Arabic, Persian, Classical Kannada, Classical Telugu, Classical Malayalam and Classical Oriya studies for these awards in the enclosed proforma for recommendation, who have teaching experience, published works – number of books / articles published, research work and have kept the traditional Sanskrit, Pali, Prakrit, Arabic, Persian, Classical Oriya, Classical Kannada, Classical Telugu and Classical Malayalam studies alive.

6. It may be pertinent to mention here that the recommending authorities while forwarding the names of the scholars in Sanskrit ensure that the scholars whom they are recommending should have written their books in Sanskrit language only and not on Sanskrit in any other languages. If the scholars books are not found written in Sanskrit language, their applications will not be considered for awards. Similarly, this will be applicable to scholars in other languages including Classical languages. Further, it may also be ensured by the recommending authorities for consideration of award under the Classical languages , the scholar must have worked in the Classical texts of languages and about Classical phase of the language even though the resulted works might be in modern form of language.

...3/-

4. Nominations are, therefore, invited for the following: -

S.No.	Language	Award Particular
1.	Sanskrit (Total 21)	i) **Certificate of Honour-** 15 Awards carrying one-time cash grant of Rs.5.00 lakh each ii) **Certificate of Honour-** 1 International Award for non-resident Indian or persons of non- Indian origin carrying a one time cash grant of Rs.5.00 lakh iii) **Maharshi Badarayan Vyas Samman-** 5 Awards carrying a one time cash grant of Rs.1.00 lakh each
2.	Pali (Total 2)	i) **Certificate of Honour-** 1 Award carrying cash grant of Rs.5.00 lakh ii) **Maharshi Badarayan Vyas Samman-**1 Award carrying a one time cash grant of Rs.1.00 lakh.
3.	Prakrit (Total 2)	i) **Certificate of Honour-** 1 Award carrying cash grant of Rs.5.00 lakh ii) **Maharshi Badarayan Vyas Samman-**1 Award carrying a one time cash grant of Rs.1.00 lakh.
4.	Persian (Total 4)	i) **Certificate of Honour-** 3 Awards carrying a cash grant of Rs.5.00 lakh each ii) **Maharshi Badarayan Vyas Samman-**1 Award carrying a one time cash grant of Rs.1.00 lakh.
5.	Arabic (Total 4)	i) **Certificate of Honour-** 3 Awards carrying a cash grant of Rs.5.00 lakh each ii) **Maharshi Badarayan Vyas Samman-**1 Award carrying a one time cash grant of Rs. 1.00 lakh
6.	Classical Kannada (Total 8)	i) **Certificate of Honour-** 1 Award carrying one-time cash grant of Rs.5.00 lakh ii) **Certificate of Honour-** 2 International Awards (one each for person of Indian and non-Indian Origin) carrying a one time cash grant of Rs.5.00 lakh each iii) **Maharshi Badarayan Vyas Samman-** 5 Awards carrying a one time cash grant of Rs.1.00 lakh each
7.	Classical Telugu (Total 8)	i) **Certificate of Honour-** 1 Award carrying one-time cash grant of Rs.5.00 lakh ii) **Certificate of Honour-** 2 International Awards (one each for person of Indian and non-Indian Origin) carrying a one time cash grant of Rs.5.00 lakh each iii) **Maharshi Badarayan Vyas Samman-** 5 Awards carrying a one time cash grant of Rs.1.00 lakh each
8.	Classical Malayalam (Total 8)	i) **Certificate of Honour-** 1 Award carrying one-time cash grant of Rs.5.00 lakh ii) **Certificate of Honour-** 2 International Awards (one each for person of Indian and non-Indian Origin) carrying a one time cash grant of Rs.5.00 lakh each iii) **Maharshi Badarayan Vyas Samman-** 5 Awards carrying a one time cash grant of Rs.1.00 lakh each
9.	Classical Oriya (Total 8)	i) **Certificate of Honour-** 1 Award carrying one-time cash grant of Rs.5.00 lakh ii) **Certificate of Honour-** 2 International Awards (one each for person of Indian and non-Indian Origin) carrying a one time cash grant of Rs.5.00 lakh each iii) **Maharshi Badarayan Vyas Samman-** 5 Awards carrying a one time cash grant of Rs.1.00 lakh each

5. You are accordingly requested to recommend the names of only those Scholars of eminence in the field of Sanskrit, Pali, Prakrit, Arabic, Persian, Classical Kannada, Classical Telugu, Classical Malayalam and Classical Oriya studies for these awards in the enclosed proforma for recommendation, who have teaching experience, published works – number of books / articles published, research work and have kept the traditional Sanskrit, Pali, Prakrit, Arabic, Persian, Classical Oriya, Classical Kannada, Classical Telugu and Classical Malayalam studies alive.

6. It may be pertinent to mention here that the recommending authorities while forwarding the names of the scholars in Sanskrit ensure that the scholars whom they are recommending should have written their books in Sanskrit language only and not on Sanskrit in any other languages. If the scholars books are not found written in Sanskrit language, their applications will not be considered for awards. Similarly, this will be applicable to scholars in other languages including Classical languages. Further, it may also be ensured by the recommending authorities for consideration of award under the Classical languages , the scholar must have worked in the Classical texts of languages and about Classical phase of the language even though the resulted works might be in modern form of language.

...3/-

F.No. 11-1/2021-Skt.II
Government of India
Ministry of Education
Department of Higher Education

Shastri Bhavan, New Delhi,
Dated the 5th March, 2021

To

1) All Secretaries of Government of India.
2) The Chief Secretaries of all State Governments/UTs.
3) The Education Secretaries of all the State Governments/UTs.
4) The Vice Chancellors of all Indian Universities/ Deemed to be Universities.
5) All Heads of Indian Missions abroad through Secretary, Ministry of External Affairs (MEA).
6) All Awardees of previous years .
7) All Vice Chancellors of the State Universities in the Andhra Pradesh, Karnataka, Kerala and Odisha.

Subject : The Presidential Award of Certificate of Honour to Sanskrit, Pali, Prakrit, Arabic, Persian, Classical Tamil, Classical Oriya, Classical Kannada, Classical Telugu and Classical Malayalam Scholars and Maharshi Badrayan Vyas Samman for young scholars in the same fields – **Recommendations for the year 2021.**

Sir,

A scheme for the Award of the Certificates of Honours was introduced in the year 1958 to honour the scholars in Sanskrit, Arabic and Persian Languages. The scheme was extended to cover Pali/Prakrit in year 1996. Certificate of Honour is awarded to Scholars of eminence over 60 years of age with outstanding contribution in the field of Sanskrit, Arabic, Persian, Pali/Prakrit. This Scheme included one award of Certificate of Honour to one Scholar of either of Pali or Prakrit for a year. In addition to this, the Scheme also provides for Maharshi Badrayan Vyas Samman for young scholars in the age group of 30 to 45 years in the field of Sanskrit, Pali/Prakrit, Arabic and Persian.

2. From the year 2016 onwards, 32 more awards i.e. 8 each for Four Classical languages namely, Classical Kannada, Classical Telugu, Classical Malayalam and Classical Oriya are also introduced. They are Life time achievement awards to scholars in India and also to those living abroad (foreign and Indian nationals) and Maharshi Badrayan Vyas Samman for young scholars in these Classical languages.

3. In this regard, it is stated that a certificate, a shawl and one time cash award as mentioned below are given to the awadees:

i) Rs. 5.00 lakh each for Certificate of Honour

ii) Rs. 5.00 lakh each for Life Time Achievement awards(includes International Awards.

iii) Rs. 1.00 lakh each for Maharshi Badrayan Vyas Samman awards.

....2/-

Saptapadi

1. You **promise to provide each other the good things of life: food, physical and emotional nourishment and wealth**. So, all your basic needs are fulfilled.
2. You **promise to look after each other, praying for each other's physical and mental health and strength**. So, there is someone to take care of you at all times.
3. In this vow, you **promise to foster affection and liking towards each other**. So, you feel cherished and loved, enabling you to become a better person.
4. You **vow to be lifelong companions**. So, in good and bad times, you are not alone.
5. You **pray to grow together: in thought and in action**. To find a common path amidst differing outlooks.
6. You **vow to look after your children, family and society**, ensuring their prosperity together. So, with your union, everyone benefits.
7. Finally, you **promise to adopt a noble bent of mind**, leading a sacred and spiritual life, in union. You both agree to walk the philosophical and spiritual path in life.

Holding the pinky finger of the bride, the groom leads the first four vows, which is followed by the remaining three rounds concluded by the bride.

F.No. 11-1/2021-Skt.II
Government of India
Ministry of Education
Department of Higher Education

Shastri Bhavan, New Delhi,
Dated the 5th March, 2021

To

1) All Secretaries of Government of India.
2) The Chief Secretaries of all State Governments/UTs.
3) The Education Secretaries of all the State Governments/UTs.
4) The Vice Chancellors of all Indian Universities/ Deemed to be Universities.
5) All Heads of Indian Missions abroad through Secretary, Ministry of External Affairs (MEA).
6) All Awardees of previous years .
7) All Vice Chancellors of the State Universities in the Andhra Pradesh, Karnataka, Kerala and Odisha.

Subject : The Presidential Award of Certificate of Honour to Sanskrit, Pali, Prakrit, Arabic, Persian, Classical Tamil, Classical Oriya, Classical Kannada, Classical Telugu and Classical Malayalam Scholars and Maharshi Badrayan Vyas Samman for young scholars in the same fields – **Recommendations for the year 2021.**

Sir,

A scheme for the Award of the Certificates of Honours was introduced in the year 1958 to honour the scholars in Sanskrit, Arabic and Persian Languages. The scheme was extended to cover Pali/Prakrit in year 1996. Certificate of Honour is awarded to Scholars of eminence over 60 years of age with outstanding contribution in the field of Sanskrit, Arabic, Persian, Pali/Prakrit. This Scheme included one award of Certificate of Honour to one Scholar of either of Pali or Prakrit for a year. In addition to this, the Scheme also provides for Maharshi Badrayan Vyas Samman for young scholars in the age group of 30 to 45 years in the field of Sanskrit, Pali/Prakrit, Arabic and Persian.

2. From the year 2016 onwards, 32 more awards i.e. 8 each for Four Classical languages namely, Classical Kannada, Classical Telugu, Classical Malayalam and Classical Oriya are also introduced. They are Life time achievement awards to scholars in India and also to those living abroad (foreign and Indian nationals) and Maharshi Badrayan Vyas Samman for young scholars in these Classical languages.

3. In this regard, it is stated that a certificate, a shawl and one time cash award as mentioned below are given to the awadees:

i) Rs. 5.00 lakh each for Certificate of Honour

ii) Rs. 5.00 lakh each for Life Time Achievement awards(includes International Awards.

iii) Rs. 1.00 lakh each for Maharshi Badrayan Vyas Samman awards.

Saptapadi

1. You **promise to provide each other the good things of life: food, physical and emotional nourishment and wealth**. So, all your basic needs are fulfilled.
2. You **promise to look after each other, praying for each other's physical and mental health and strength**. So, there is someone to take care of you at all times.
3. In this vow, you **promise to foster affection and liking towards each other**. So, you feel cherished and loved, enabling you to become a better person.
4. You **vow to be lifelong companions**. So, in good and bad times, you are not alone.
5. You **pray to grow together: in thought and in action**. To find a common path amidst differing outlooks.
6. You **vow to look after your children, family and society**, ensuring their prosperity together. So, with your union, everyone benefits.
7. Finally, you **promise to adopt a noble bent of mind**, leading a sacred and spiritual life, in union. You both agree to walk the philosophical and spiritual path in life.

Holding the pinky finger of the bride, the groom leads the first four vows, which is followed by the remaining three rounds concluded by the bride.

· चंदप्पहं वंदे ·

जवाजाग्रामात्

30-4-84

आदरणीया विद्वद्वरा वैयाकरणभूषणाः !

सादरं यथायोग्यम् ।

आशासे तत्रभवतां सर्वमपि कुशलमेव स्यात् ।
अत्राहं मुनिर्नूतनचन्द्रो जैनाचार्याणां श्रीमज्जीत-
मल्लजिन्महाभागानां छत्रच्छायायां सकुशलं व्याकरणम्
अध्येमि अध्यापयामि च । इदानीं भवतां 'व्याकरणचन्द्रोदयम्'
अपि यथावसरमवलोकयामि । न मयेका शङ्का
कौमुदीविषयिका निरस्यते । तां भवत्समक्षं पत्रमाध्यमेन
प्रकटयामि, समाधित्सामि च ।

"कौमुद्यामनेकत्र 'पदान्ते' इति पदं सूत्रवृत्तिषु
समवलोक्यते । यथा - 'झलां जशोऽन्ते' - पदान्ते
झलां जशः स्युः । प्रायः सर्वत्रापि 'पदान्ते'
इति पदं स्थानिना सम्बध्यते । यथा - 'हो ढः'
हस्य ढः स्याज्झलि पदान्ते च' पदान्तस्य हस्य
स्थाने झल्परत्वाभावेऽपि ढत्वं स्यादित्यस्याभिप्रायः ।
एवमेव 'दादेर्धातोर्घः' इत्यादिभ्योऽवधेयम् ।
कथं पुनः 'एकाचो बशो भष् झषन्तस्य स्ध्वोः'
इति सूत्रे वृत्तिस्थं 'पदान्ते' इति पदं स्थानिना न

युज्यते ? यश: पदान्तत्वाभावेऽपि 'दुध्' इत्यत्र
धकारस्यैव परान्तत्वाद् भष्भाव: कथं क्रियते ?"
इति भवन्त: समादधतु ।

किमहमग्रेऽप्येवमेव भवतां परोक्षं
सम्पर्कलाभं गृहीतुं शक्यामि ? इत्यपि
स्पष्टतया लिखित्वाऽनुगृह्णन्तु ।

यथाशीघ्रं समाधानपत्रं प्रतीक्षमाणोऽहम् -

गुरुचरणसेवको जिज्ञासुश्च
मुनिर्नूतनचन्द्र:

सम्पर्क-सूत्रम् -
प्रति : मुनिनूतनचन्द्रम्
(आचार्य-प्रवराणां सेवास्थम्)
द्वारा : अंबालाल नाबरिया
मु. पो. जवाजा - 305922
वा. ब्यावर जि. अजमेर
(राजस्थान)

युज्यते ? वशः पदान्तत्वाभावेऽपि 'दुघ्' इत्यत्र घकारस्यैव पदान्तत्वाद् भष्भावः कथं क्रियते ?"
इति भवन्तः समादधन्तु ।

किमहमत्रैऽप्येवमेव भवतां परोक्षं सम्पर्कलाभं गृहीतुं शक्ष्यामि ? इत्यपि ~~स्पष्टीकर्तुं~~ स्पष्टतया लिखित्वाऽनुगृह्णन्तु ।

यथाशीघ्रं समाधानपत्रं प्रतीक्षमाणोऽहम् -

गुरुचरणसेवको जिज्ञासुरच
मुनिर्नूतनचन्द्रः

सम्पर्क-सूत्रम् -
प्रति : मुनिनूतनचन्द्रम्
(आचार्य-प्रवराणां सेवास्थम्)
द्वारा : अंबालाल नाबरिया
मु. पो. जवाजा - 305922
वा. ब्यावर जि. अजमेर
(राजस्थान)

देहली का—

नया जो टेलीफोन नम्बर है वह कुछ स्पष्ट नहीं है। क्या यह है—

011-9111-270035.

1-403-~~[illegible]~~ 462-9550

Pages 3 – 6 to be scanned and sent to the author at his e-mail id mentioned in his letter enclosed herewith

डॉ. लाला शंकर गयावाल
सह-आचार्य संस्कृत
रामेश्वरी देवी राजकीय स्नातकोत्तर
कन्या महाविद्यालय, भरतपुर (राज0)
मो0— 9414357635
ई—मेल--lalashankar23@gmail.com

प्रतिष्ठा में,

प्रो0 सत्यव्रत शास्त्री जी!

सादर प्रणाम !!
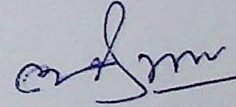
अत्र कुशलं तत्रास्तु।।

आशा है आप सानन्द होगें। बहु प्रतीक्षित और आपके आशीर्वचन से संवलित पुस्तक ''**पाणिनि से पतंजलि तक संस्कृतभाषा का विकास**'' **(कारक विभक्ति के संदर्भ में)** विद्यानिधि प्रकाशन डी0 10/1061 (समीप महागौरी मंदिर) खजूरी खास, दिल्ली-110090 से प्रकाशित हो गया है। आपको सादर समर्पित है ।

कृपया प्राप्ति से अवगत कराने का श्रम कर कृतार्थ करें ।

अत्यन्त आदर सहित

भवदीय

[signature]

25/07/2021

डा. लाला शंकर गयावाल
सह आचार्य संस्कृत
एवं
अधिष्ठाता छात्र कल्याण

आवासीय पता:- 87, सूर्यासीटी, आगरा रोड, भरतपुर-321001 (राजस्थान) मो0-6377304432

अराविराजा पाठक

9871168788

Saiyam Publishing House

e-mail

saiyampub_2006@yahoo.com

SENT

To be scanned and sent

Resl.: C-248, Defence Colony,
New Delhi-110 024 (India)
Tel.: (+91) 11-24336644, (+91) 11-24336631
Mobile : +91-9650117463
email : drsatyavratshastri@gmail.com
Website : satyavrat-shastri.net

१५. ०३. २०२१.

डा० कृपारामत्रिपाठिमहाभागैर्विरचितोऽभिरामश्लोकावलीग्रन्थो मया वाचितः। समासादितश्च तेन वाचामगोचरः कश्चनानन्दनिष्यन्दः। गुम्फस्य प्रसन्नगम्भीरपदा सरस्वती कं वा न मोहयेत्। अत्र रमणीयः पदबन्धो, रमणीया शैली, रमणीयं च वस्तु चेतो हठादाकर्षति। यथाऽलङ्कार-शास्त्रे प्रवीणं कविमानिनं तथैव व्याकरणशास्त्रेऽपि। प्रायशो-ऽनवद्यः पद्यबन्धोऽत्र। श्लोकावलीरचनया श्लोकवन्तः कविवर्याः। नैके ग्रन्थास्तैर्विरचिताः। भावान्तरे भूयोऽपि विरचयिष्यन्ते ये तेऽपि भूयोऽपि यशोऽभिवृद्ध्यै इत्याशासानो विरमाम्यहं —

सुरसरस्वतीसमाराधनैकव्रतः —

सत्यव्रतः शास्त्री

विवेक चूडामणि का भी इन्हीं छन्दों में हिन्दी में एवञ्च श्रीमद्भगवद्गीता का ब्रजभाषा में पद्यानुवाद किया है जो कि अपने ढंग का पहला अनुवाद है। यहां यह उल्लेखनीय है कि डॉ. मृदुल कीर्ति किसी संस्था में कार्यरत नहीं है। एक सामान्य गृहिणी का जीवन बिता रही है और वह भी अपने देश से दूर आस्ट्रेलिया में। यह उनका संस्कृत प्रेम ही है जो उन्हें अनुवाद के क्षेत्र में खींच लाया है जिसने संस्कृत से अनभिज्ञ जनता को भी संस्कृत ग्रन्थों में निहित ज्ञानराशि को उसकी अपनी भाषा में सुलभ कर दिया है। उन्होंने अनेक शोध ग्रन्थों की रचना भी की है।

दूसरी उल्लेखनीय संस्कृत विदुषी है पद्मश्री डॉ. नाहिद आबीदी। इन्होंने सम्राट् अकबर के वकील (प्रधानमंत्री) अब्दुल रहीम खानेखाना की खेटकौतुकम् और गङ्गाष्टकम् का हिन्दी में और गालिब की उर्दू कृति चिरागे गै़र का ~~पद्यों में।~~ 'देवालयस्य दीपः' शीर्षक से संस्कृत में पद्यानुवाद किया है।

मुझे आशा है कि संगोष्ठी इन सभी संस्कृत रचनाकर्त्रियों और समीक्षिकाओं के अवदान को रेखाङ्कित करेगी जो कि आने वाली पीढ़ियों के लिए प्रेरणादायक होगा।

सङ्गोष्ठी की सफलता हेतु मेरी हार्दिक मङ्गलकामनाएं।

सत्यव्रतशास्त्री
राष्ट्रपति सम्मानित मनीषी
सी-248, डिफेंस कॉलोनी, नई दिल्ली

एफ.सं.11-1/2021-संस्कृत.II
भारत सरकार
शिक्षा मंत्रालय
उच्चतर शिक्षा विभाग

शास्त्री भवन, नई दिल्ली,
दिनांक 5 मार्च, 2021

सेवा में,

1) भारत सरकार के सभी सचिव
2) सभी राज्य सरकारों/संघ राज्य क्षेत्रों के मुख्य सचिव
3) सभी राज्य सरकारों/संघ राज्य क्षेत्रों के शिक्षा सचिव
4) सभी भारतीय विश्वविद्यालयों/ सम विश्वविद्यालयों के कुलपति
5) सचिव, विदेश मंत्रालय के माध्यम से विदेशों में स्थित भारतीय मिशनों के सभी प्रमुख
6) पिछले वर्षों के सभी पुरस्कार विजेता
7) आंध्र प्रदेश, कर्नाटक, केरल और ओडिशा में राज्य विश्वविद्यालयों के सभी कुलपति

विषय: संस्कृत, पाली, प्राकृत, अरबी, फ़ारसी, शास्त्रीय तमिल, शास्त्रीय उड़िया, शास्त्रीय कन्नड, शास्त्रीय तेलुगू और शास्त्रीय मलयालम भाषा के विद्वानों के लिए राष्ट्रपति सम्मान पत्र पुरस्कार और इन्हीं क्षेत्रों में युवा विद्वानों के लिए महर्षि बद्रायन व्यास सम्मान – **वर्ष 2021 के लिए सिफ़ारिशें**

महोदय,

संस्कृत, अरबी और फारसी भाषाओं के विद्वानों को सम्मानित करने के लिए वर्ष 1958 में सम्मान प्रमाण पत्र पुरस्कार प्रदान करने की एक योजना शुरू की गई थी। वर्ष 1996 में पाली/प्राकृत को इस योजना में समाहित करके योजना का विस्तार किया गया। सम्मान पत्र, संस्कृत, अरबी, फारसी, पाली/ प्राकृत के क्षेत्र में उत्कृष्ट योगदान के साथ 60 वर्ष से अधिक आयु के विद्वानों को प्रदान किया जाता है। इस योजना में एक वर्ष के लिए पाली या प्राकृत दोनों में से किसी एक से संबंधित विद्वान को एक सम्मान प्रमाण पत्र पुरस्कार प्रदान करना शामिल था। इसके अतिरिक्त, यह योजना संस्कृत, पाली/प्राकृत, अरबी और फारसी के क्षेत्र में 30 से 45 वर्ष की आयु के युवा विद्वानों को महर्षि बद्रायन व्यास सम्मान भी प्रदान करती है।

2. वर्ष 2016 के बाद से, 32 और पुरस्कार अर्थात शास्त्रीय कन्नड़, शास्त्रीय तेलुगु, शास्त्रीय मलयालम और शास्त्रीय उड़िया नामक चार शास्त्रीय भाषाओं में प्रत्येक भाषा के लिए 8 पुरस्कार भी

शुरू किए गए हैं। ये भारत के विद्वानों और विदेशों में रहने वाले (विदेशी और भारतीय नागरि विद्वानों के लिए भी आजीवन उपलब्धि पुरस्कार (लाइफ टाइम अचीवमेंट अवार्ड्स) हैं और इ शास्त्रीय भाषाओं के युवा विद्वानों के लिए महर्षि बद्रायन व्यास सम्मान हैं।

3. इस संबंध में, यह बताया जाता है कि पुरस्कार विजेताओं को एक शाल और एक बारग नकद पुरस्कार प्रदान किया जाता है, जो इस प्रकार है:

i) सम्मान पत्र के लिए प्रत्येक को 5.00 लाख रुपए

ii) आजीवन उपलब्धि पुरस्कार (लाइफ टाइम अचीवमेंट अवार्ड) के लिए प्रत्येक को **5.00 लाख** रुपए (इसमें अंतर्राष्ट्रीय पुरस्कार शामिल है)

iii) महर्षि बद्रायन व्यास सम्मान पुरस्कार के लिए प्रत्येक को 1.00 लाख रुपए

4. अतः, निम्नलिखित के लिए नामांकन आमंत्रित किए गए हैं: -

क्र.सं.	भाषा	पुरस्कार विवरण
1.	संस्कृत (कुल 21)	**सम्मान प्रमाण पत्र**- 5.00 लाख रुपए प्रत्येक के एक-बारगी नकद पुरस्कार वाले 15 पुरस्कार **सम्मान प्रमाण पत्र** – अनिवासी भारतीय अथवा गैर-भारतीय मूल के व्यक्तियों के लिए 5.00 लाख रुपए का एक बारगी नकद पुरस्कार वाला 1 अंतर्राष्ट्रीय पुरस्कार **महर्षि बद्रायन व्यास सम्मान** – 1.00 लाख रुपए प्रत्येक के एक-बारगी नकद पुरस्कार वाले 5 पुरस्कार
2.	पाली (कुल 2)	**सम्मान प्रमाण पत्र**- 5.00 लाख रुपए का नकद पुरस्कार वाला 1 पुरस्कार **महर्षि बद्रायन व्यास सम्मान** – 1.00 लाख रुपए का नकद पुरस्कार वाला 1 पुरस्कार
3.	प्राकृत (कुल 2)	**सम्मान प्रमाण पत्र**- 5.00 लाख रुपए का नकद पुरस्कार वाला 1 पुरस्कार **महर्षि बद्रायन व्यास सम्मान** – 1.00 लाख रुपए का नकद पुरस्कार वाला 1पुरस्कार
4.	फ़ारसी (कुल 4)	**सम्मान प्रमाण पत्र**- 5.00 लाख रुपए प्रत्येक के नकद पुरस्कार वाले 3 पुरस्कार **महर्षि बद्रायन व्यास सम्मान** – 1.00 लाख रुपए का नकद पुरस्कार वाला 1 पुरस्कार
5.	अरबी (कुल 4)	**सम्मान प्रमाण पत्र**- 5.00 लाख रुपए प्रत्येक के नकद पुरस्कार वाले 3 पुरस्कार **महर्षि बद्रायन व्यास सम्मान** – 1.00 लाख रुपए का एक बारगी नकद पुरस्कार वाला 1 पुरस्कार
6.	शास्त्रीय कन्नड (कुल 8)	**सम्मान प्रमाण पत्र**- 5.00 लाख रुपए का एक-बारगी नकद पुरस्कार वाला 1 पुरस्कार **सम्मान प्रमाण पत्र** –5.00 लाख रुपए के एक बारगी नकद पुरस्कार वाले 2 अंतर्राष्ट्रीय पुरस्कार (भारतीय और गैर-भारतीय मूल के एक एक व्यक्ति के लिए) **महर्षि बद्रायन व्यास सम्मान** – 1.00 लाख रुपए प्रत्येक के एक-बारगी नकद पुरस्कार वाले 5 पुरस्कार
7.	शास्त्रीय तेलुगू (कुल 8)	**सम्मान प्रमाण पत्र**- 5.00 लाख रुपए का एक-बारगी नकद पुरस्कार वाला 1 पुरस्कार **सम्मान प्रमाण पत्र** –5.00 लाख रुपए के एक बारगी नकद पुरस्कार वाले 2 अंतर्राष्ट्रीय पुरस्कार (भारतीय और गैर-भारतीय मूल के एक एक व्यक्ति के लिए) **महर्षि बद्रायन व्यास सम्मान** – 1.00 लाख रुपए प्रत्येक के एक-बारगी नकद पुरस्कार वाले 5 पुरस्कार

8.	शास्त्रीय मलयालम (कुल 8)	**सम्मान प्रमाण पत्र**- 5.00 लाख रुपए का एक-बारगी नकद पुरस्कार वाला 1 पुरस्कार **सम्मान प्रमाण पत्र** – 5.00 लाख रुपए के एक बारगी नकद पुरस्कार वाले 2 अंतर्राष्ट्रीय पुरस्कार (भारतीय और गैर-भारतीय मूल के एक एक व्यक्ति के लिए) **महर्षि बद्रायन व्यास सम्मान** – 1.00 लाख रुपए प्रत्येक के एक-बारगी नकद पुरस्कार वाले 5 पुरस्कार
9.	शास्त्रीय उड़िया (कुल 8)	**सम्मान प्रमाण पत्र**- 5.00 लाख रुपए का एक-बारगी नकद पुरस्कार वाला 1 पुरस्कार **सम्मान प्रमाण पत्र** – 5.00 लाख रुपए के एक बारगी नकद पुरस्कार वाले 2 अंतर्राष्ट्रीय पुरस्कार (भारतीय और गैर-भारतीय मूल के एक एक व्यक्ति के लिए) **महर्षि बद्रायन व्यास सम्मान** – 1.00 लाख रुपए प्रत्येक के एक-बारगी नकद पुरस्कार वाले 5 पुरस्कार

5. तदनुसार, आपसे अनुरोध किया जाता है कि आप संलग्न प्रोफार्मा में इन पुरस्कारों के लिए संस्कृत, पाली, प्राकृत, अरबी, फारसी, शास्त्रीय कन्नड़, शास्त्रीय तेलुगु, शास्त्रीय मलयालम और शास्त्रीय उड़िया अध्ययन के क्षेत्र में केवल उत्कृष्ट विद्वानों के नामों की सिफारिश करें जिनके पास शिक्षण अनुभव, प्रकाशित रचनाएँ - प्रकाशित पुस्तकों/लेखों की संख्या, शोध कार्य हैं और जिन्होने पारंपरिक संस्कृत, पाली, प्राकृत, अरबी, फारसी, शास्त्रीय उड़िया, शास्त्रीय कन्नड़, शास्त्रीय तेलुगु और शास्त्रीय मलयालम अध्ययन को जीवित रखा है।

6. यहाँ यह उल्लेख करना उचित होगा कि संस्कृत के विद्वानों के नाम भेजते समय सिफारिश करने वाले अधिकारी यह सुनिश्चित करें कि वे जिन विद्वानों की सिफारिश कर रहे हैं, उन्होने अपनी किताबें केवल संस्कृत भाषा में लिखी हो, न कि किसी अन्य भाषा में संस्कृत के विषय पर। यदि यह पाया जाता है कि विद्वानों की किताबें संस्कृत भाषा में नहीं लिखी गई हैं, तो उनके पुरस्कार के लिए आवेदनों पर विचार नहीं किया जाएगा। इसी प्रकार, यह शास्त्रीय भाषाओं सहित अन्य भाषाओं के विद्वानों पर भी लागू होगा। इसके अतिरिक्त, शास्त्रीय भाषाओं के अंतर्गत पुरस्कार हेतु विचार करने के लिए सिफारिश करने वाले अधिकारियों द्वारा यह भी सुनिश्चित किया जाना होगा कि उस विद्वान ने भाषा के शास्त्रीय मूलपाठ में और भाषा के शास्त्रीय चरणों के बारे में काम किया हो, भले ही उनका परिणामी कार्य आधुनिक भाषा में हो।

7. महर्षि बदर्रायण व्यास सम्मान की सिफारिश केवल उन्हीं युवा विद्वानों के लिए की जाए जिन्होंने इन भाषाओं में विज्ञान को बढ़ावा देने के लिए आधुनिकता व परंपरा और कार्यरत वैज्ञानिकों एवं आईटी व्यावसायिकों के बीच सामंजस्य को आगे बढ़ाने केलिए संस्कृत या प्राचीन भारतीय विद्वता के योगदान अंत:विषयी अध्ययन में उत्कृष्ट कार्य किया हो।

8. सिफारिशों में पुरस्कार की सिफारिश हेतु विशेष उपलब्धि की स्पष्ट उल्लेख किया जाए और संलग्न प्रपत्र में विद्वान के चरित्र व पूर्व वृत प्रमाणत्र सहित मंत्रालय में 15 मई, 2021 तक भेज दिया जाए। अपूर्ण पत्र अंतिम तारीख के बाद प्राप्त सिफारिशों पर विचार नहीं किया जाएगा। सिफारिश भेजते समय सभी प्रकाशित कार्यों की विस्तृत सूची के साथ नामिति के पांच सर्वश्रेष्ठ

(अधिकतम) प्रकाशित कार्यों की प्रतियां अग्रेषित की जाएं। इनके न होने पर पुरस्कार के लिए नामिती की उपयुक्कता की जांच करना संभव नहीं होगा।

9. पुरस्कार हेतु संस्तुत विद्वान का विवरण संलग्न प्रपत्र में दिया जाए। पूरा विवरण न होने पर सिफारिश पर उचित विचार करना मुश्किल हो जाता है। अतः अनुरोध है कि प्रपत्र के प्रत्येक कालम में पूरा विवरण दिया जाएअंतर्रष्ट्रिय विद्वान श्रेणी में पुरस्कारों के संबंध में मिशनों/दूतावासों आदि के अध्यक्षों से एतदवारा अनुरोध है कि पुरस्कार हेतु विद्वान की उपयुक्कता की जांच करने में चयन समिति की सहायता के लिए संस्तुत व्यक्ति के नामांकन के साथ-साथ विद्वान की प्रकाशित पुस्तकों का विवरण अधिकतम दो पृष्ठों में दें। इसके अलावा] यदि वे किसी भिन्न भाषा में है तो विद्वान के शीर्षक व कार्य का अंग्रेजी अनुवाद भी दे।

10. राज्य सरकारों आदि से यह भी अनुरोध है कि सिफारिश करते समय वे इस प्रयोजनार्थ व्यक्तियों के विवरण की सावधानीपूर्वक जांच करें। विद्वानों की प्रारंभिक जांच के लिए विशेषकर समिति की स्थापना पर कोई आपत्ति नहीं है] यदि पुरस्कार हेतु सिफारिश के लिए कोई योग्य विद्वान नहीं है तो वे शून्य सूचना दे सकते है। इस वर्ष पुरस्कार के लिए उन विद्वानों के नामों पर विचार किया जाए सकता है जिनकी विगत वर्ष सिफारिश की गई थी किंतु उन्हें पुरस्कार हेतु नहीं चुना गया था।

11. पुरस्कारों हेतु नामों की सिफारिश करते समय इस बात पर जोर दिया जाए कि पुरस्कार उन विद्वानों के लिए है जो संबंधित भाषाओं और विशेषज्ञता के संबंधित क्षेत्रों में प्रवीण है और न कि उनके लिए जिन्हें इन भाषाओं में उपलब्ध साहित्य का महज उपरी ज्ञान है] इस पर भी जोर दिया जता है कि सिफारिश करते समय प्राधिकारी इस तथ्य का संज्ञान ले जिन विद्वानों की सम्मान प्रमाणपत्र हेतु सिफारिश की जा रही है उन्होंने अपनी संबंधित भाषा में उल्लेखनीय काम किया है। दूसरे शब्दों में संस्कृत भाषा में संबंधित सिफारिशकर्ता प्राधिकारी सुनिश्चित करे कि सम्मान प्रमाणपत्र हेतु संस्तुत व्यकित के संस्कृत पर की अपेक्षा संस्कृत में पुस्तकों लिखी/प्रकाशित की है। अन्यथा इससे पुरस्कार देने का प्रयोजन ही समाप्त हो जाएगा।

12. अनुरोध है कि सिफारिश करने से पूर्व जहां आवश्यक समझें] गोपनीय तरीके से विश्वविद्यालय/पुस्तकालय व अन्य स्वयंसेवी संगठन से भी विचार-विमर्श किया जा सकता है।

13. ये पुरस्कार उन्हें नहीं दिए जाते जिन्हें इसे पहले यह मिल चुका हो यामरणोपरांत नहीं दिए जाते अथवा उन व्यक्तियों को नहीं दिए जाते जिन्हें न्यायालय ने किसी आपराधिक मामले में दोषी ठहराया जो अथवा उनके खिलाफ कोई मामला किसी न्यायालय में लंबित हो। अतः सरकार को परेशानी ना हो इसके लिए ऐसी घटना की सरकार को तत्काल सूचना दी जाए जिससे नामिती पुरस्कार हेतु अपात्र बन जाता है और इसकी सूचना देना] नामांकन भेजने वाले व्यक्ति का पूर्ण दायित्व है।

14. पुनः दोहराया जाता है कि प्राधिकारियों द्वारा जिन्हें यह पत्र संबोधित किया गया है विधिवत संस्तुत सभी नामांकनों पर पुरस्कार देने के लिए विचार चयन समिति द्वारा किया जाएगा। इस पत्र द्वारा संबोधित से इतर और संगठन में कार्यरत प्राधिकारी से प्राप्त नामांकनों पर विचार नहीं किया जाएगा।

15. सिफारिशकर्ता प्राधिकारियों से अनुरोध है कि वे एकल विद्वान से स्वयं आवेदन या अनुरोध पर विचार न करके इस पुरस्कार की पूर्व गोपनीयता व गरिमा बनाए रखे। संबंधित विद्वानों के बारे में अन्य स्रोतों से पूरी सूचना/विवरण प्राप्त करने के लिए पूछताछ की जा सकती है चूंकि उन्हें ये जानकारी होने की आशा नहीं की जाती कि उनके नाम की सिफारिश की जा रही है। सिफारिश के साथ विद्वान द्ववारा स्वयं दी या भेजी गई सामग्री नहीं दी जानी चाहिए। विद्वान की ओर से किसी प्रकार का प्रचार उसके अहित में होगा व इसे गंभीरता से लिया जाएगा।

16. संबंधित सिफारिशकर्ता प्राधिकारी द्वारा विधिवत हस्ताक्षरित चरित्र व पूर्ववृत प्रमाणपत्र के साथ पूर्ण नामांकन रेजिस्ट्रॉर, केंद्रीय संस्कृत विश्वविद्यालय (पूर्व राष्ट्रीय संस्कृत संस्थान), 56-57, इंस्टिट्यूशनल एरिया, जनकपुरी, नई दिल्ली-58 को अग्रेषित किए जाने चाहिए। अपूर्ण या अंतिम तारीख के बाद प्राप्त नामांकनों पर विचार नहीं किया जाएगा।

भवदीया,

संलग्नकः यथोपरि।

सुमन दीक्षित

(सुमन दीक्षित)
उप सचिव,भारत सरकार
☎ : 011-23070446

(अधिकतम) प्रकाशित कार्यों की प्रतियां अग्रेषित की जाएं। इनके न होने पर पुरस्कार के लिए नामिती की उपयुक्कता की जांच करना संभव नहीं होगा।

9. पुरस्कार हेतु संस्तुत विद्वान का विवरण संलग्न प्रपत्र में दिया जाए। पूरा विवरण न होने पर सिफारिश पर उचित विचार करना मुश्किल हो जाता है। अतः अनुरोध है कि प्रपत्र के प्रत्येक कालम में पूरा विवरण दिया जाएअंतर्रष्ट्रिय विद्वान श्रेणी में पुरस्कारों के संबंध में मिशनों/दूतावासों आदि के अध्यक्षों से एतदवारा अनुरोध है कि पुरस्कार हेतु विद्वान की उपयुक्कता की जांच करने में चयन समिति की सहायता के लिए संस्तुत व्यक्ति के नामांकन के साथ-साथ विद्वान की प्रकाशित पुस्तकों का विवरण अधिकतम दो पृष्ठों में दें। इसके अलावा] यदि वे किसी भिन्न भाषा में है तो विद्वान के शीर्षक व कार्य का अंग्रेजी अनुवाद भी दे।

10. राज्य सरकारों आदि से यह भी अनुरोध है कि सिफारिश करते समय वे इस प्रयोजनार्थ व्यक्तियों के विवरण की सावधानीपूर्वक जांच करें। विद्वानों की प्रारंभिक जांच के लिए विशेषकर समिति की स्थापना पर कोई आपत्ति नहीं है] यदि पुरस्कार हेतु सिफारिश के लिए कोई योग्य विद्वान नहीं है तो वे शून्य सूचना दे सकते है। इस वर्ष पुरस्कार के लिए उन विद्वानों के नामों पर विचार किया जाए सकता है जिनकी विगत वर्ष सिफारिश की गई थी किंतु उन्हें पुरस्कार हेतु नहीं चुना गया था।

11. पुरस्कारों हेतु नामों की सिफारिश करते समय इस बात पर जोर दिया जाए कि पुरस्कार उन विद्वानों के लिए है जो संबंधित भाषाओं और विशेषज्ञता के संबंधित क्षेत्रों में प्रवीण है और न कि उनके लिए जिन्हें इन भाषाओं में उपलब्ध साहित्य का महज उपरी ज्ञान है] इस पर भी जोर दिया जता है कि सिफारिश करते समय प्राधिकारी इस तथ्य का संज्ञान ले जिन विद्वानों की सम्मान प्रमाणपत्र हेतु सिफारिश की जा रही है उन्होंने अपनी संबंधित भाषा में उल्लेखनीय काम किया है। दूसरे शब्दों में संस्कृत भाषा में संबंधित सिफारिशकर्ता प्राधिकारी सुनिश्चित करे कि सम्मान प्रमाणपत्र हेतु संस्तुत व्यकित के संस्कृत पर की अपेक्षा संस्कृत में पुस्तकों लिखी/प्रकाशित की है। अन्यथा इससे पुरस्कार देने का प्रयोजन ही समाप्त हो जाएगा।

12. अनुरोध है कि सिफारिश करने से पूर्व जहां आवश्यक समझें] गोपनीय तरीके से विश्वविद्यालय/पुस्तकालय व अन्य स्वयंसेवी संगठन से भी विचार-विमर्श किया जा सकता है।

13. ये पुरस्कार उन्हें नहीं दिए जाते जिन्हें इसे पहले यह मिल चुका हो यामरणोपरांत नहीं दिए जाते अथवा उन व्यक्तियों को नहीं दिए जाते जिन्हें न्यायालय ने किसी आपराधिक मामले में दोषी ठहराया जो अथवा उनके खिलाफ कोई मामला किसी न्यायालय में लंबित हो। अतः सरकार को परेशानी ना हो इसके लिए ऐसी घटना की सरकार को तत्काल सूचना दी जाए जिससे नामिती पुरस्कार हेतु अपात्र बन जाता है और इसकी सूचना देना] नामांकन भेजने वाले व्यक्ति का पूर्ण दायित्व है।

14. पुनः दोहराया जाता है कि प्राधिकारियों द्वारा जिन्हें यह पत्र संबोधित किया गया है विधिवत संस्तुत सभी नामांकनों पर पुरस्कार देने के लिए विचार चयन समिति द्वारा किया जाएगा। इस पत्र द्वारा संबोधित से इतर और संगठन में कार्यरत प्राधिकारी से प्राप्त नामांकनों पर विचार नहीं किया जाएगा।

15. सिफारिशकर्ता प्राधिकारियों से अनुरोध है कि वे एकल विद्वान से स्वयं आवेदन या अनुरोध पर विचार न करके इस पुरस्कार की पूर्व गोपनीयता व गरिमा बनाए रखे। संबंधित विद्वानों के बारे में अन्य स्रोतों से पूरी सूचना/विवरण प्राप्त करने के लिए पूछताछ की जा सकती है चूंकि उन्हें ये जानकारी होने की आशा नहीं की जाती कि उनके नाम की सिफारिश की जा रही है। सिफारिश के साथ विद्वान द्ववारा स्वयं दी या भेजी गई सामग्री नहीं दी जानी चाहिए। विद्वान की ओर से किसी प्रकार का प्रचार उसके अहित में होगा व इसे गंभीरता से लिया जाएगा।

16. संबंधित सिफारिशकर्ता प्राधिकारी द्वारा विधिवत हस्ताक्षरित चरित्र व पूर्ववृत प्रमाणपत्र के साथ पूर्ण नामांकन रेजिस्ट्रॉर, केंद्रीय संस्कृत विश्वविद्यालय (पूर्व राष्ट्रीय संस्कृत संस्थान), 56-57, इंस्टिट्यूशनल एरिया, जनकपुरी, नई दिल्ली-58 को अग्रेषित किए जाने चाहिए। अपूर्ण या अंतिम तारीख के बाद प्राप्त नामांकनों पर विचार नहीं किया जाएगा।

भवदीया,

संलग्नकः यथोपरि।

सुमन दीक्षित

(सुमन दीक्षित)
उप सचिव,भारत सरकार
☎ : 011-23070446

प्रतिलिपि

1. अध्यक्ष, यूजीसी, बहादुर शाह जफर मार्ग, नई दिल्ली
2. निदेशक, 17-बी, एनसीईआरटी, श्री अरबिंदो मार्ग, नई दिल्ली-110016
3. निदेशक, राष्टीय उर्दू भाषा संवर्धन परिषद, फरोग-ए-उर्दू भवन, एफसी-33/9 इंस्ट्टियूशनल एरिया, जसोला, नई दिल्ली-110025
4. उप-कुलपति, न्यूपा, एनसीईआरटी परिसर, श्री अरबिंदो मार्ग, नई दिल्ली
5. निदेशक, नेशनल बुक टस्ट, ए-5, ग्रीन पार्क, नई दिल्ली-16
6. निदेशक, साहित्य अकादमी, 35, फिरोजशाह रोड, नई दिल्ली
7. निदेशक, केंद्रीय भारतीय भाषा संस्थान, मनासंगोत्री, मैसूर-570006
8. अध्यक्ष, वैज्ञानिक और तकनीकी शब्दावली आयोग, वेस्ट ब्लाक नः VII, आर.के.पुरम, नई दिल्ली-110066
9. निदेशक, केंद्रीय हिंदी निदेशालय, वेस्ट ब्लाक नः VII, आर.के.पुरम, नई दिल्ली-110066
10. निदेशक, केंद्रीय हिंदी संस्थान, हिंदी संगठन मार्ग, आगरा-282005
11. निदेशक, केंद्रीय शास्त्रीय तमिल संस्थान, एलएमवी बिल्डिंग, 100 फिट रोड, तारामणी, चेन्नई-600113
12. निदेशक, राष्ट्रीय सिंधी भाषा संवर्धन परिषद, नई दिल्ली
13. सचिव, महर्षि संदिपनी राष्टीय वेद विद्या प्रतिष्ठान, उज्जैन, एम.पी.
14. रजिस्टार, श्री लाल बहादुर शास्त्री राष्टीय संस्कृत विश्वविद्यालय, नई दिल्ली
15. रजिस्टार, राष्टीय संस्कृत विश्वविद्यालय, तिरूपति
16. रजिस्टार, केंद्रीय संस्कृत विश्वविद्यालय, जनकपुरी, नई दिल्ली

अनुरोध है कि संलग्न प्रपत्र में सिफारिशें रजिस्टार, केंद्रीय संस्कृत विश्वविद्यालय (पूर्व राष्ट्रीय संस्कृत संस्थान), इंस्टिट्यूशनल एरिया, जनकपुरी, नई दिल्ली-67 को 15 मई, 2021 तक अवश्य भेज दी जाएं।

सुमन दीक्षित

(सुमन दीक्षित)
उप सचिव,भारत सरकार
☎ : 011-23070446

अंतिम तिथि : 15.05.2021

2021 वर्ष के राष्ट्रपति पुरस्कार महर्षि बद्रायन व्यास सम्मान और सर्टिफिकेट ऑफ ऑनर के लिए अनुशंसा हेतु प्रोफोर्मा

जिस पुरस्कार के लिए अनुशंसा की गई है (कृपया निशान लगाएं)

I	सर्टिफिकेट ऑफ ऑनर (60 वर्ष और उससे अधिक की आयु के विद्वानों के लिए)	
	महर्षि बद्रायन व्यास सम्मान (30 से 45 वर्ष की आयु के युवा विद्वानों के लिए)	

जिस क्षेत्र हेतु अनुशंसा की गई है (कृपया निशान लगाएं)

II	संस्कृत		पाली		अरबी		पारसी	
	शास्त्रीय उड़िया		शास्त्रीय मलयालम		शास्त्रीय कन्नड़		शास्त्रीय तेलुगु	
	प्राकृत							

III	अनुशंसाकर्ता प्राधिकारी का पूरा नाम (बड़े अक्षरों में).	
	यदि अनुशंसा करने वाला प्राधिकारी एक सर्टिफिकेट ऑफ ऑनर प्राप्तकर्ता है, तो अवार्ड प्राप्त करने के वर्ष का उल्लेख करें।	
	अनुशंसाकर्ता प्राधिकारी का पदनाम .	

वर्ष 2021 हेतु अनुशंसा

(अनुशंसित व्यक्ति का विवरण)

1.	पूरा नाम (अंग्रेजी में बड़े अक्षरों में)	:	
	पूरा नाम (हिन्दी लिपि में)	:	
2.	पूरा स्थायी पता	:	

सुमन

3.	i) जन्म-तिथि	:	दिन / माह / वर्ष
	ii) आयु		वर्ष / माह
4.	(क) विश्वविद्यालय, वर्ष और वर्ग / प्रभाग के नाम के साथ योग्यता	:	
	(ख) जिस संगठन में सेवा दी उसका नाम, धारित पद और सेवा अवधि सहित अनुभव		
	(ग) विशेषज्ञता का विषय	:	
	परम्परागत विद्वानों के लिए (जहां कहीं भी लागू हो)		
	(क) अध्ययन का स्थान और अवधि एवं गुरूओं के नाम	:	
	(ख) अधिकतम ग्रंथ जिनमें परम्परागत विद्वानों की विशेषज्ञता हो।	:	
	(ग) उसके अंतर्गत अध्ययन करने वाले छात्रों की संख्या और शिक्षा प्राप्त करने का स्तर।	:	
	(घ) डिग्री/डिप्लोमा, यदि कोई हो, वर्ष और परीक्षा निकाय सहित उसका नाम		
5.	(क) अध्ययन शाखा		
	(ख) विकरित पाठ विशेषज्ञता (ग) क्या भाष्य का अध्ययन किया है? यदि हां तो , उत्तीर्ण की गई परीक्षा	:	
6.	पुस्तक/ प्रकाशन (क) लिखित (ख) संपादित (ग) अनुवादित विषय/ भाषा इंगित करें।	:	
7.	उसके मार्गदर्शन के अंतर्गत पीएच.डी/डी.लिट की उपाधि प्राप्त करने वाले विद्यर्थियों/शोध विद्वानों की संख्या	:	
8.	पहले से प्राप्त मान्यता/सम्मान ,	:	

सुमन

	i) मान्यता/सम्मान का शीर्षक ii) वर्ष iii) प्रदानकर्ता प्राधिकरण/संगठन		
9.	संबंधित भाषा को लोकप्रिय बनाने की दिशा में विवरण सहित विशेष योगदान	:	
10.	यदि किसी सम्मेलन / काव्य संगोष्ठी / वाद-विवाद / विद्वत सभा में भाग लिया हो (स्थान, तारीख और संगठन एवं शोध पत्रों का विवरण दें)	:	
11. ##	परंपरा और आधुनिकता के बीच तालमेल बैठाने की प्रक्रिया के लिए संस्कृत / फारसी / अरबी / पाली / प्राकृत अथवा शास्त्रीय कन्नड़ / शास्त्रीय तेलुगु / शास्त्रीय तेलुगु / शास्त्रीय मलयालम / शास्त्रीय उड़िया की शास्त्रीय भाषाओं या प्राचीन भारतीय ज्ञान में योगदान सहित अंतर-विषयक अध्ययन में किए गए कार्य एवं सफलताएं।		
12	कृपया पुरस्कार हेतु विद्वान के नाम की अनुशंसा किए जाने के विशेष कारण/विस्तृत औचित्य बताएं।	:	

साथ ही मैं यह भी प्रमाणित करता हूं कि श्री/ श्रीमती/कुमारी...................... को इससे पहले .... के लिए सम्मानित नहीं किया गया है, जिससे लिए मैं उनके नाम की अनुशंसा कर रहा हूं।

अनुशंसाकर्ता प्राधिकारी के हस्ताक्षर
(अनुशंसा कर्ता प्राधिकारी का नाम और मुहर)

नोट 1: नामांकित व्यक्ति द्वारा सर्वश्रेष्ठ पाँच (अधिकतम) पुस्तक / प्रकाशन की प्रति संलग्न की जानी चाहिए; अन्यथा अनुशंसा पर विचार नहीं किया जाएगा। चयन प्रक्रिया पूरी हो जाने के पश्चात, इसे केंद्रीय संस्कृत विश्वविद्यालय (पूर्व केंद्रीय संस्कृत विश्वविद्यालय (पूर्व राष्ट्रीय संस्कृत संस्थान), नई दिल्ली को वापस लौटा दिया जाएगा।

नोट 2: # यह कॉलम विशेष रूप से आईटी और विज्ञान पृष्ठभूमि वाले अन्य विद्वानों और महर्षि बद्रायन व्यास सम्मान हेतु अनुशंसित विद्वानों के संदर्भ में भरा जाना आवश्यक है।

सुमन

चरित्र और पूर्ववृत्त प्रमाण-पत्र

मैं ______________________ सुपुत्र/सुपुत्री ______________________
निवासी ______________________, की हैसियत से (यदि अनुशंसा कर्ता विगत में सम्मान प्रमाण-पत्र प्राप्तकर्ता है, पुरस्कार का वर्ष इंगित करें), एतत द्वारा पुष्टि करता हूं कि ______________ ______________ सुपुत्र, सुपुत्री श्री ______________ ______________ निवासी ______________________ को विगत _____ वर्षों से जानता हूं और इनका चरित्र उत्तम है। इनके विरूद्ध किसी न्यायालय में कोई मामला लंबित नहीं है और न ही इन्हें अतीत में कभी भी दोषी नहीं ठहराया गया है। .

साथ ही मैं एतत द्वारा ऐसी कोई भी घटना जो नामिति को पुरस्कार हेतु आयोग्य बनाती हो, के बारे में सरकार को संसूचित करने का भी वचन देता हूं।

(______________________)
अनुशंसा कर्ता प्राधिकारी के हस्ताक्षर
पदनाम:______________________
____
____

स्थान :
तारीख :

कुमार

विश्व के कतिपय अत्यन्त महत्त्वपूर्ण और लोकप्रिय ग्रन्थों में एक श्रीमद्भगवद्गीता है। विश्व की लगभग हर भाषा में इसका अनुवाद हुआ है। शङ्कराचार्य, मध्वाचार्य, रामानुजाचार्य आदि हर सम्प्रदाय के आचार्यों ने इस पर भाष्य लिखे हैं। प्राचीनकाल से लेकर अर्वाचीन काल तक विद्वानों की सुदीर्घ शृङ्खला रही है जिसने इसकी व्याख्या की है, इस पर टीका-टिप्पण लिखे हैं, इसके गूढ तत्त्व का विश्लेषण करने का प्रयास किया है। सुनने में आया है कि इण्डिया ऑफिस लाइब्रेरी, लण्डन में सहस्र से अधिक गीता से सम्बद्ध ग्रन्थ हैं। इतने गीतापरक विशाल वाङ्मय के पश्चात् एक नवीन गीता की व्याख्या प्रस्तुत करना एक बहुत बड़े साहस का काम है। डॉ. गुलाब कोठारी ने यह साहस दिखाया है। उनकी व्याख्या-दृष्टि एक सर्वथा नवीन ढंग की है। इस ढंग के लिये एक विशेष प्रकार के चिन्तन, एक गहन अन्तर्दृष्टि, एक नवनवोन्मेष शालिनी प्रतिभा की आवश्यकता थी जो भगवान् पद्मनाभ ने उन्हें भरपूर मात्रा में प्रदान की हैं। जिस प्रकार अपने विराट् स्वरूप का दर्शन कराने के लिए भगवान् ने अर्जुन को दिव्य चक्षु प्रदान की थी—**दिव्यं ददामि ते चक्षुः पश्य मे योगमैश्वरम्।** उसी प्रकार अपनी वाणी के रहस्य को समझने के लिए उन्होंने डॉ. गुलाब कोठारी जी को दिव्य चक्षु प्रदान की है। विराट् को जानने के लिए विराट् होना पड़ता है, ब्रह्म को जानने के लिए ब्रह्म होना पड़ता है—**ब्रह्मविद् ब्रह्मैव भवति।**

गीता पर चर्चा करते समय जिस पर सब से पहले ध्यान जाता है वह गीता शब्द ही है। इसका अक्षरार्थ है जो गाई गई। गीता एक गीत है। जो भगवान् पद्मनाभ के मुखपद्म से निकला—**या स्वयं पद्मनाभस्य मुखपद्माद्विनिःसृता।** यह सभी उपनिषदों का सार संक्षेप है जो गीत रूप में भगवान् ने प्रस्तुत कर दिया। प्रत्येक अध्याय की पुष्पिका में प्रयुक्त श्रीमद्भगवद्गीतासूपनिषत्सु शब्द इसी का संकेत करते हैं। उपनिषद् का एक दूसरा नाम रहस्य है। स्वाभाविक हैं उनका सार-संक्षेप भी रहस्य ही है। इस रहस्य के उद्घाटन में शताब्दियों से विद्वत्परम्परा लगी रही। उसी कड़ी में डॉ. कोठारी का प्रस्तुत प्रयास है।

गीता के रहस्योद्घाटन के समय उन परिस्थितियो को भी ध्यान में रखना आवश्यक है जिनमें गीता गाई गई। दोनों ओर की कौरवों और पाण्डवों की सेनाएं आमने-सामने थी। शङ्खनाद हो चुका था। युद्ध प्रारम्भ होने को था। उस समय अर्जुन ने भगवान् से कहा कि वे दोनों सेनाओं के बीच उसका रथ स्थापित कर दे—**सेनयोरुभयोर्मध्ये रथं स्थापय मेऽच्युत।** ताकि मैं देख सकूं कि मुझे युद्ध किनसे करना है—**कैर्मया सह योद्धव्यमस्मिन् रणसमुद्यमे** । वे देखतें है प्रतिद्वन्द्वी के रूप में खड़े उसके गुरुजन, उसके सम्बन्धी। उसे विषाद घेर लेता है। वह कह उठता है कि मैं युद्ध नहीं करूंगा और चुप हो जाता है—**न योत्स्य इति गोविन्दमुक्त्वा तूष्णीं**

बभूव ह। उस समय भगवान् उन्हें कहते हैं—**उत्तिष्ठ कौन्तेय युद्धाय कृतनिश्चयः।** मन दृढ़ कर युद्ध के लिये खड़े हो जाओ—उत्तिष्ठ। और प्रारम्भ हो जाती है भगवान् की गीतध्वनि जो चलती रहती है अट्ठारह अध्याय तक। जिसमें सब कुछ आ जाता है, राजयोग, ध्यानयोग, भक्तियोग, कर्मयोग। गीत (गीता) सुनने के बाद अर्जुन कह उठता है—भगवन् मेरा अज्ञान दूर हुआ, मुझे आत्मबोध हो गया—**स्मृतिर्लब्धा**। अब मैं खड़ा हूं—**स्थितोऽस्मि**। उत्तिष्ठ से गीता प्रारम्भ होती है और स्थितोऽस्मि से इसकी परिसमाप्ति होती है। उत्तिष्ठ और स्थितोऽस्मि के बीच आ गये अट्ठारह अध्याय।

जीवन में अवसाद-विषाद के लिये कोई स्थान नहीं हैं। श्रीमद्भगवद्गीता का यही सन्देश है—व्यक्ति के लिये, समाज के लिये, समस्त प्राणियों के लिये।

डॉ. गुलाब कोठारी पण्डित मधुसूदन ओझा की परम्परा के विद्वान् है। सामान्यतः प्रयुक्त शब्दों के भीतर एक दिव्य अर्थ समाहित रहता है। अग्नितत्त्व, सोमतत्त्व, सूर्यतत्त्व आदि से उसका तार मिला रहता है। वही तार वस्तुतत्त्व तक पहुंचा देता है। डॉ. गुलाब कोठारी जी ने इसी परिप्रेक्ष्य में श्रीमद्भगवद्गीता की व्याख्या की है। रहस्य (उपनिषद्) के सार के रहस्य का उद्भेधन किया है। न केवल प्रत्येक पुस्तकालय में अपितु प्रत्येक घर में इस कृति की स्थापना समष्टि और व्यष्टि दोनों के लिये लाभकारी है।

इस अद्भुत कृति के प्रणयन के लिये डॉ. गुलाब कोठारी जी का शत-शत अभिनन्दन!

सत्यव्रत शास्त्री

-सत्यव्रत शास्त्री

सी-248 डिफेंस कॉलोनी
नई दिल्ली - 110024

मृत्यु के पश्चात् जीवन

दिल्ली विश्वविद्यालय के संस्कृत के प्रोफेसर डॉ. सत्यव्रत शास्त्री, उत्तरी अमेरिका की अपनी व्याख्यान-यात्रा से उत्तरप्रदेश संस्कृत अकादमी का 25,000 रुपए के पुरस्कार की घोषणा सुनने के लिए वापस लौटे थे।

अपने अनेकों विषय, जिन पर कि उन्होंने व्याख्यान दिए, उनमें से एक विषय 'उपनिषद में मृत्यु की संकल्पना' भी था। उन्होंने मुझे बताया कि इटली में उनके श्रोताओं में आयुर्विज्ञान के डॉक्टर और वैज्ञानिक भी थे। वे लोग डॉ. शास्त्री की बातों से बेहद प्रभावित थे। मैं यह भली-भाँति समझता हूँ कि यहूदी, ईसाई और इस्लामिक मान्यताओं पर पले-बढ़े बुद्धिमान पश्चिम के लोगों को हिन्दू, जैन, बौद्ध, सिक्ख के संसार की संकल्पना—जन्म, मृत्यु और उनके अपने पुनर्जन्म, कयामत के दिन, स्वर्ग और नर्क के सिद्धान्त से कहीं ज्यादा सुघड़ लगते हैं।

प्रश्न का उत्तर अभी भी शेष है। मृत्यु के पश्चात् जीवन है, क्या इस बात को मानने के पीछे कोई तार्किक आधार है ? हमारे धर्मग्रन्थ (हिन्दू, जैन, बौद्ध और सिक्ख) स्पष्ट रूप से कहते हैं कि 'हाँ है।' इस मान्यता का अधिकांश तत्त्व उपनिषद् से गृहीत है और यह गीता में, सार रूप में वर्णित है। इसमें कहा गया है कि मृत्यु की स्थिति में शरीर का तो नाश हो जाता है पर आत्मा जीवित ही रहती है। जैसे मनुष्य अपना वस्त्र बदलता है वैसे ही आत्मा एक शरीर से दूसरा शरीर धारण करती है। कठोपनिषद् में यह स्पष्टतः कहा गया है कि जन्म, क्षरण तथा मृत्यु मात्र भौतिक शरीर में होते हैं, और इस शरीर से परे भी कुछ होता है, जिसका कि कभी नाश नहीं होता। यह आत्मा है जो हृदय की गुहा में निहित रहती है।

हर सात वर्ष पर शरीर की सर्वांदि कणिकाएँ परिवर्तित हो जाती हैं और उसका नवीनीकरण हो जाता है, पर उसके बावजूद व्यक्ति-विशेष वही रहता है, उसकी पहचान कभी नहीं बदलती।

प्रश्न उठता है कि इस पहचान का आधार क्या है ? शास्त्री जी इसके जवाब

में कहते हैं कि मनुष्य के अन्तस में अपरिवर्तनीय 'किंचित' है वही मेधा एवं अस्तित्व का स्रोत है और हमारा आपेक्षिक अस्तित्व उसी पर निर्भर होता है। आत्मा अथवा यह स्थायी सत्ता अजन्मी है...और मृत्यु रहित है।

आत्मा जिस रहस्य से आच्छादित रहती है, उसका उत्तर निषेध में है—यह नहीं, वह नहीं। यह सर्वव्यापी परमात्मा है और व्यष्टि रूप में जीवात्मा। जब पश्चात् का पूर्व से मिलन होता है--ज्योति जोत मिलय--आपका तेज, शाश्वत तेज में लीन हो जाता है (आदिग्रन्थ) तो तब आत्मा जन्म, मृत्यु, पुनर्जन्म के चक्र से मुक्त होकर मोक्ष पद को प्राप्त करती है।

साथ ही, हिन्दू धर्मशास्त्र में आत्मा के देहान्तरण के साथ क्षणिक विराम के सिद्धान्त--विस्मृति की वड़ अवस्था जिसमें आत्मा किंचित विरमते हुए इस निर्णय की प्रतीक्षा में होती है कि पूर्वजन्म में किए गए सुकर्मों के कारण वह एक सदाचारी मनुष्य के रूप में जन्म ले या कुकर्मों के कारण सजा रूप में कीड़े-मकोड़े के रूप में, के माध्यम से पुरस्कार या फिर दंड देने की व्यवस्था भी मौजूद है।

शास्त्री जी का मानना है कि ''नैष तर्कानां मतिर्पनेय (मृत्यु के पश्चात् क्या रह जाता है, इसे कोई तर्क-वितर्क कर नहीं समझ सकता)।

इसका कोई भी वैज्ञानिक प्रमाण नहीं मिल सकता कि आत्मा मृत्यु के पश्चात् भी विद्यमान रहती है, उसे तो बस हमेशा महसूस किया जा सकता है, प्रमाणित कथमपि नहीं किया जा सकता।

तो फिर तर्क-वितर्क में हम क्यों परिश्रम करें, जो इसमें विश्वास करते हैं वे आगे भी इसे मानते रहेंगे और जो लोग नहीं करते वे इन सुन्दर-सुन्दर शब्दों की बाजीगरी से अपना पाला बदलनेवाले नहीं। जहाँ तक मेरा सवाल है, मेरे लिए तो मृत्यु एक अन्तिम पूर्ण विराम है। इसके बावजूद मैं इस रहस्य को हल करने में बेहद उत्सुक हूँ, और आत्मा की सत्ता में विश्वास करनेवाले लोगों के साथ इस प्रार्थना में शरीक हूँ कि

असतो मा सद्गमय
तमसो मा ज्योतिर्गमय
मृत्योर्मा अमृतगमय

(असत्य से ले चल सत्य की ओर/अन्धकार से ले चल प्रकाश की ओर/और ले चल मृत्यु से अमरत्व की ओर।)
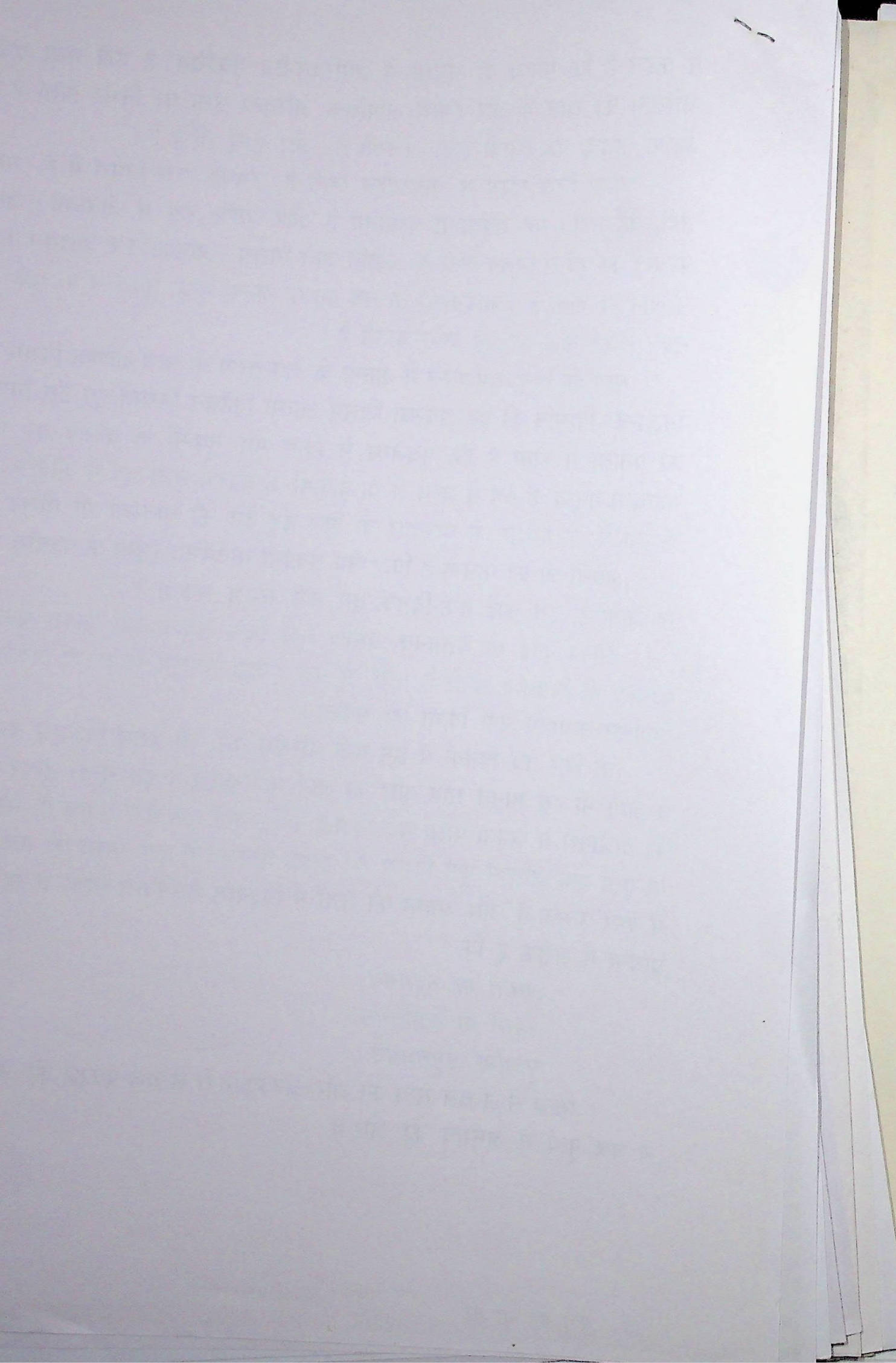
Your Holiness, Acharn Khaisi, Acharn Manipin, Mr. Sahay,
Acharn Uraisi, Colleagues and friends,

I feel greatly touched by the love and affection bestowed on me this afternoon. Completion of sixty years or five cycles marks a milestone in one's life pointing as it does that one is now to slide into old age when good health and robustness cannot be expected to be a norm and would have to be achieved and sustained through the collective good wishes of friends and colleagues. That I have them in abundance makes me feel stronger and fills me with the hope of completing many an unfinished task of mine.

The basic objective of a teacher is to create and disseminate knowledge. I have been applying myself to it to the best of my capacity during the past three and a half decades of my teaching career. The remaining years too I would like to devote to this. For this some more years and continued good health are a desideratum. Hence the need for blessings and good wishes from all of you.

It is a matter of utmost satisfaction for me that I complete my sixty years in Thailand, a country for which I have great love. Princess Mahachakri had very rightly guaged my feelings when she had written in the Foreword to my recently published book that I have compassionate love for Thailand. I am happy that Thailand has reciprocated this love in an abundant measure. The present function organized by the Silpakorn University is a testimony to it.

I have an old association with the Silpakorn University. Even in the period 1977-79 when I was with the Chulalongkorn University, I had been engaging classes here. This time, since 1988, I am directly with this University. The President, the Vice-President, the Head of the Department, the colleagues in the Department of Oriental Languages and the Faculty of Archaeology as also the students are all very nice to me. In thier all-pervasive kindness they have completely owned me and have bound me in emotional kinship.

My dear friends, the good wishes that you have bestowed on me are going to be my mainstay in life. They will be my source of strength to face the years ahead with cheer, with courage and determination, with a sense of purpose and a feeling of fulfilment.

I thank you all and hope and pray that the bonds of love and affection that have been forged here will grow from strength to strength in the years to come.

My thanks for your good wishes once again.

[illegible]

शुभाशीषः

श्रीमत्या डॉ० मीनाक्ष्याख्य नारायणन् महाभागया विरचितो भूषणसारशोभेति ग्रन्थो मया निपुणं निरीक्षितः। वैयाकरणभूषणसारो नाम व्याकरणविदां मूर्धन्येन श्रीमता भट्टोजिदीक्षितेन विरचितानां कारिकाणां श्री कौण्डभट्टकृत व्याख्यारूपः। प्रकृतं भट्टोजिदीक्षितेन शेषावतारभूतेन भगवता पतञ्जलिना विरचितस्य महाभाष्यस्य व्याख्यारूपः॥ [शब्दकौस्तुभनामा ग्रन्थो विरचितः।] पतञ्जलिकृतं भाष्यं न केवलं भाष्यमपि तु 'महाभाष्यम्'। एतद्विषये सम्यगेवोक्तं वाक्यपदीयकारेण भर्तृहरिणा यदिदं सर्वेषां न्यायबीजानां निबन्धनमिति। ज्ञानसिन्धुरयं ग्रन्थः। युक्त एवैतद्विषये उच्यते –

ऽलब्धगाधे गाम्भीर्यादुत्तान इव सौष्ठवात्।
तस्मिन्नकृतबुद्धीनां नैवावास्थित निश्चयः॥

तस्य ग्रन्थस्य व्याख्यां प्रस्तोतुं कैयट भट्टोजिदीक्षितादयः प्राभवन्। यथा क्षीराब्धेर्मन्थनात्कौस्तुभमणिरुद्धृतस्तथैव महाभाष्याब्धेर्मन्थनाच्छब्दकौस्तुभरूपो व्याख्यामणिर्भट्टोजिदीक्षितेनोद्धृतः। तस्यैव सारस्तेन कारिकारूपेण प्रस्तुतः। ततः प्रधासिदेस्त सुखबोधायेति तद्व्याख्यानं प्रस्तुतं श्रीकौण्डभट्टेन। सुखबोधाय यद्यपि तद्व्याख्यानं नाकल्पत तद्वस्तु सुग्राह्यतामाधातुमिति श्रीमत्या डॉ० मीनाक्ष्याख्य नारायणन् महाभागया तद्व्याख्याने यत्नं कृतः। साफल्यं च तया लब्धमिति दृष्टः। गाम्भीर्यगाम्भीरोऽपि तद्विषयस्तया स्वभाषया न्यायेन विशदीकृतः। तदर्थं सा सुतरामभिनन्दनार्हा।

वैयाकरणशब्दस्य द्विविधा व्याख्या ~~...~~ –

शिशुपालवधस्य १९ सर्गे धृतानां
चित्रबन्धानामुद्धारः ।

सर्वतोभद्रः । (२७ श्लोकः)

स	का	र	ना	ना	र	का	स
का	य	सा	द	द	सा	य	का
र	सा	ह	वा	वा	ह	सा	र
ना	द	वा	द	द	वा	द	ना
ना	द	वा	द	द	वा	द	ना
र	सा	ह	वा	वा	ह	सा	र
का	य	सा	द	द	सा	य	का
स	का	र	ना	ना	र	का	स

मुरजबन्धः ।
(२९ श्लोकः)

गोमूत्रिकाबन्धः । (४६ श्लोकः)

व्याकरणमधीते वेदं वेत्ति। तथा हि पाणिनिसूत्रम् — तदधीते तद्वेद। तथा न केवलं व्याकरणमधीतमेव सेदं सम्यग्वेत्त्यपि। वेदो (= ज्ञानम्) ऽपि द्विविधं भवति शब्दार्थज्ञानमेव तत्त्व-स्पर्शि चापि रहस्योद्घाटनपरं नाम। तथा हि शास्त्रस्य दृशां डिण्डिमः— 'स वै वेद यो रहस्यं वेद'। डा० मीनाक्ष्या विदुष्या सामगुरुं- विद्यमधीतिं परायणं नः सन्तोषाय।

व्याकरणग्रन्थानामध्ययने ऽध्यापने च प्रवृत्तिं यदा ह्रासमान-मुपलभामि पश्यामि तदा भवामि चिन्ताक्रान्तचेताः। यदा डा० मीनाक्षासदृशीः शास्त्ररहस्योद्घाटने च बद्धकक्षाः पश्यामि तदा भवामि निर्वृतस्वान्तः।

अहं तामाशीराशिभिरभिनन्दामि प्रार्थये च भगवन्तं पार्वतीजानिं तस्या दीर्घायुष्यं स्वास्थ्यं च।

सुरसरस्वतीसमाराधनैकव्रतः

सत्यव्रतः शास्त्री

नवदिल्ली
दिनाङ्कः - 21.09.2021

डॉ. सत्यव्रत शास्त्री (अध्यक्ष)

प्रसिद्ध संस्कृत विद्वान और ज्ञानपीठ पुरस्कार से सम्मानित साहित्यकार।

जन्म : 29 सितम्बर, 1930।

वर्ष 2007 के ज्ञानपीठ पुरस्कार से सम्मानित संस्कृत लेखक और विद्वान प्रो. सत्यव्रत शास्त्री पंजाब विश्वविद्यालय से संस्कृत में एम.ए. और बनारस हिन्दू विश्वविद्यालय से भर्तृहरि कृत वाक्यपदीय में दिक्काल मीमांसा विषय पर पी-एच.डी. हैं।

डॉ. सत्यव्रत शास्त्री ने 1955 में दिल्ली विश्वविद्यालय में अध्यापन कार्य शुरू किया। अपने चालीस वर्ष के कार्यकाल में वे विभागाध्यक्ष तथा कला संकायाध्यक्ष का पदभार सँभाला। वे [illegible] विश्वविद्यालय, पुरी के भी कुलपति रहे। उन्होंने न केवल देश में बल्कि विदेशों में भी संस्कृत के प्रचार-प्रसार का कार्य किया। इन्हीं के प्रयासों से सिल्पाकोर्न विश्वविद्यालय, थाईलैंड में संस्कृत अध्ययन केन्द्र की स्थापना हुई।

डॉ. सत्यव्रत शास्त्री ने अब तक तीन महाकाव्य, तीन खंड काव्य, एक प्रबन्ध काव्य और दो खंडों के पत्र काव्य की रचना की है। उनकी समीक्षात्मक कृतियों में 'द रामायण : ए लिंग्विस्टिक स्टडी', 'कालिदास इन माडर्न संस्कृत लिटरेचर' तथा 'न्यू एक्स्पेरिमेंट्स इन कालिदास' चर्चित रहीं। 'डिस्कवरी ऑफ संस्कृत ट्रेजर्स' के सात खंडों में उन्होंने संस्कृत वाङ्मय के विविध पक्षों पर प्रकाश डाला है। 'थाइदेशविलासम्' के बाद 'श्रीरामकीर्तिमहाकाव्यम्' की रचना की। साहित्य अकादमी ने 'गुरुगोविंदचरितम्' पर पुरस्कृत किया।

सत्यव्रत शास्त्री को कई पुरस्कारों से सम्मानित किया गया है जिनमें भारत सरकार द्वारा पद्मश्री, इटली सरकार का सम्मान, सहित्य अकादमी पुरस्कार, पंजाब और महाराष्ट्र सरकारों द्वारा पुरस्कार तथा विभिन्न संस्कृत अकादमियों के पुरस्कार शामिल हैं। सन् 2007 ई. के ज्ञानपीठ पुरस्कार से भी सम्मानित किया जा चुका है।

पता : सी-248, डिफेंस कॉलोनी, नयी दिल्ली-110024

असगर वजाहत

जन्म : 1946, फतेहपुर, उत्तर प्रदेश।

शिक्षा : अलीगढ़ मुस्लिम विश्वविद्यालय से हिन्दी में एम.ए., पी-एच.डी. और जवाहरलाल नेहरू विश्वविद्यालय, दिल्ली से पोस्ट डाक्टोरल रिसर्च। 1971 से जामिया मिल्लिया इस्लामिया विश्वविद्यालय, दिल्ली के हिन्दी विभाग में अध्यापन। पाँच वर्षों तक ओत्वोश लोरांड विश्वविद्यालय, बुडापेस्ट, हंगरी में अध्यापन। यूरोप और अमेरिका के कई विश्वविद्यालयों में व्याख्यान।

पाँच उपन्यास, दो लघु उपन्यास, छह पूर्णकालिक नाटक, यात्रा संस्मरण की तीन पुस्तकें, नुक्कड़ नाटकों का एक संग्रह और साहित्यिक आलोचना की एक पुस्तक प्रकाशित।

प्रमुख प्रकाशन : सात आसमान, कैसी आगी लगाई, बरखा रचाई, मनमाटी (उपन्यास), मैं हिन्दू हूँ, डेमोक्रेसिया (कहानी संग्रह), जिन लाहौर नईं वेख्या वो जन्म्या ई नईं (नाटक), चलते तो अच्छा था, इस पतझड़ में आना (यात्रा संस्मरण)। रचनाओं का कई भारतीय और विदेशी भाषाओं में अनुवाद। नाटकों के मंचन देश-विदेश की कई भाषाओं में हैं।

रचनात्मक लेखन के अलावा नियमित रूप से विभिन्न अखबारों और पत्रिकाओं के लिए लेखन। 2007 में बीबीसी हिन्दी के अतिथि सम्पादक। 'हंस' पत्रिका के लिए विशेष अतिथि सम्पादक के रूप में 'भारतीय मुसलमान : वर्तमान और भविष्य' विषय पर और 'वर्तमान साहित्य' के लिए 'प्रवासी साहित्य' पर विशेषांकों का सम्पादन।

फिल्मों के लिए पटकथाएँ लिखने के अलावा धारावाहिक और डॉक्यूमेंट्री फिल्में भी बनाई हैं। कथा यूके सम्मान और हिन्दी अकादेमी, दिल्ली से सम्मानित, कई अन्य पुरस्कारों से भी सम्मानित।

चित्रकला और पर्यटन में गहरी रुचि।

पता : ब्लॉक-जे 1, फ्लैट नं. 4, पार्श्वनाथ प्रेस्टिज, सेक्टर 93ए, नोएडा-201 304

Forward

Purovāk

For ages together Bhārata has been the land of the flow of knowledge and enlightenment. great Ācāryas have adorned the land by their contribution to the revelation through divine vision and accomplishment. The ways of revelation are known as Śruti-prasthāna, Smṛti-prasthāna and Nyāya-prasthāna which constitute the famous prasthāna-trayī. The Upaniṣads, Bhagavadgītā and Brahmasūtra represent the prasthanātrayī. The Ācāryas of different sampradāyas felt honoured by writing comprehensive commentaries (bhāṣyas) on the books of prasthāna-trayī. The authenticity of particulars Vedantic sampradāya got recognition by exposition through the bhāsyas on these three prasthānas. Sanskrit language is unique in the sense that it created scope for interpretation of these famous books on the lines of different sampradāyas. Śaṅkara and other preceptors of different sampradāyas had the glory of interpreting the books of these three prasthānas. The Gauḍīyas of the Bhakti-school made their foot-prints to be recognized by the contribution of Baladeva Vidyābhūsaṇa. Srī Govinda-bhāsya written by him on the Brahmasūtra made the Gauḍīya - school eligible for becoming an established sampradāya of the Vedānta-tradition.

Śaṅkara became a role model for the tradition of interpretation of different schools of Vedānta. His pioneering effort became a path-finder. The teachers of other sampradāyas accepted the challenge and interpreted the prasthāna-trayī to suit their own line of thought. Bhāsya-tradition on the prasthāna-trayī became a symbol of glory and distinct identity.

The neo-vedānta school or bhakti-movement created a new vista by amplifying the Smṛti-prasthāna. The Bhagavadgītā, Viṣṇupurāṇa and Śrīmadbhāgavata became the sources for the commentaries. Viṣṇu or Kṛṣṇa became absolute. The līlā of the absolute in the forms of Vyūha, Vaibhava, arcā, aṁśavaibhava and aṁśāvatāra made Viṣṇu-Kṛṣṇa as the Absolute with magnanimity. The devotees of Viṣṇu attain Kaivalya whereas the devotees of other Gods attain vibhūti. The devotee is endowed with such state by the grace (Kṛpā) of the absolute. During fourteenth and fifteenth century of CE a famous sannyāsin of the Śaṅkara-school appeared to justify the magnanimity of Viṣṇu-Kṛṣṇa by his contribution of the ṭīkās ok the Gītā, Viṣṇupurāṇa and Bhāgavata. The Vaiṣṇava Sampradāya got a strength by his scholarly ṭīkās. He is Śrīdhara Svāmin (ŚS). He appeared during a period of transition between the conservative Vedānta-school and neo-Vedānta school. The neo-Vedānta school gave rise to bhakti school. ŚS made a scholarly effort for integrating mukti with bhakti. It is a commendable attempt for integrating the diverse line of thought. The theory of prapatti or Śaraṇāgati (Submission) made a conciliation between jñāna and bhakti.

ŚS belonged to the school of Śankara but became an icon of the followers of the Bhakti-school. Śrī caitanya has expressed high reverence by accepting him as Jagadgaru (Śrī Caitanya-caritāmṛta, antyalīlā, P.825). ŚS became a legendary figure. Śrī Rāmakṛṣṇa Svāmipāda of the order of Śaṅkara initiated ŚS.

Three is no agreement among the scholars regarding the place ŚS. Gujrat, Bengal and Maharashtra have been supported by different scholars. Dr. Karunakar Das, the author of the present book has referred to those views. His view has been substantiated by field study, examination of records, inscription and other sources. The genealogy of ŚS has been mentioned. The place of birth has been identified to be Mayūragrāma (marei) of Remuna of Balasore district

of Odisha. The Kapilāsa mountain of Dhenkanal was the place of his sādhanā. He belonged to the order of Śaṅkara but was not the head of Śaṅkarācārya Maṭha of Puri. Satyanarayan Rajguru accepts him to be the follower of Viṣṇusvāmīn (Odishara Sāniskṛtika Itihāsa, part IV, Odisha Sahitya Akademi, 1986, P.140).

There is another Śaṅkara -Matha known as Śaṅkarānanda Maṭha of Puri. He was the head of that maṭha according to Bhaskara Mishra (Maṭha Paramparā, friends publishers, Cuttack, 2012, PP.12-13). ŚS, a sannyāsin of the order of Śaṅkara worshipped Mādhava and Umādhava in Vārāṇasī. The time of ŚS has been fixed to be between 1350 and 1450 CE. Vaiṣṇavalīlāmṛta has been cited in the book of Dr. Das. The line of thought has been summarised in the Vaiṣṇavalīlāmṛta in lucid manner. ŚS of the order of Śaṅkara has explained the Bhāgavata. Bhakti cannot be segregated from Jñāna (Vaiṣṇavalīlāmṛta, 2.25-35). The Bhāgavata, the mine of knowledge has been grasped by Vyāsa, Śuka and Parīkṣit. Due to the grace of Nṛsimha ŚS has been in an exalted position to comprehend the Bhāgavata. His devotion to Mādhava and Umādhava made him enlightened to understand the composition like gītā. His incomparable scholarship and power of exposition enabled him to write the Subodhinī ṭīkā on the gītā, Ātmaprakāśa on the viṣṇupurāṇa and Bhāvārthadīpikā on Śrīmadbhāgavata. These tīkās are masterpieces. The commentators have followed him as their ideal. He has travelled many cities famous for the test of knowledge. Varanasi was one of the cities where his knowledge was examined and established. There are many commentators before and after ŚS, but ŚS has been a locket of a chain of commentators.

ŚS has distinctly expressed his desire to materialize the method of the convention of explanation for classifying the books by faithfully following the tradition of Śruti and Smṛti.

सम्प्रदायविशुद्ध्यर्थं स्वीयनिर्बन्ध्यन्त्रितः।

श्रुतिस्मृतिमितव्याख्यां करिष्यामि यथामति।।

(Bhāvārtha-dipikā ṭīkā on the Bhāgavata 1.2)

He has not deviated from the foot-prints marked by his predecessors. The very names of his commentaries justify the purpose of his explanations. They are lucid and comprehensive. The commentaries are concise and adorned with propriety.

As he has understood the theory related to Brahman and Māyā, he is in a better position to give proper form of exposition to the Smṛti -tradition. The teachers of Māyāvāda accept unqualified Brahman. ŚS accepts Kṛṣṇa as condensed Brahman. Kṛṣṇa is the Absolute Existence, consciousness and Bliss. The Māyāvādins do not admit the eternity of the name, form, quality, greatness and attendants. The Bhāgavata (8.6.8) has been explained by ŚS by glorifying The manifestation and actions of the Bhagavat as eternal. The universal form (Viśvamūrti) is worshipped by the devotees by following the veda, tantra, yoga and śreyas. The Bhāgvata is very transparent about the non-dualistic Brahman admitted by different devotes of different faiths with different nomenclatures. In reality there is identity.

वदन्ति तत्तत्त्वविदस्तत्त्वं यज्ज्ञानमद्वयम्।

ब्रह्मेति परमात्मेति भगवानिति शब्द्यते।।

(Bhagavata, I.2.11)

ŚS has tried to establish the theory of non-dualistic Brahman is the light of the theory of Bhakti.

The māyāvādins do not support the eternal existence of Īśvara. Īśvara is a consciousness where māyā has been super imposed. According to ŚS

there is identify of Brahman and Īśvara. Brahman is knowledge and knower. Īśvara is qualified but not subjugated to quality. He is Prabhu and created object, birth, appearance in different worlds and also causes liberation.

बुद्धीन्द्रियमनःप्राणान् जनानामसृजत्प्रभुः।

मात्रार्थं भवार्थं च आत्मनेऽकल्पनाय च।।

(Bhagavata, X.87.2)

The word prabhu stands for the magnanimous Absolute who is not overpowered by any upādhi. (imposing property).

According to the māyāvādins Māyā is neither sat nor asat. It is indistinguishable and undefinable. सदसद्विलक्षणा अनिर्वचनीया। ŚS accepts that Māyā is the power of Parameśvara and manifestative power in the form of sattva, rajas and tamas. One has to cross the Māyā in order to attain liberation. One is endowed to be liberated when one submits oneself to the absolute.

दैवी ह्येषा गुणमयी मम माया दुरत्यया।

मामेव ये प्रपद्यन्ते मायामेतां तरन्ति ते।।

(ŚS on Bhagavadgītā, VII.14)

ŚS is of the opinion that there is difference of number between Jīva and Īśvara. Both have numerical difference relating to the world of illusion but in reality there is identity as both are consciousness (cidrūpatā).

पुरुषेश्वरयोरत्र न वैलक्षण्यमण्वपि।

तदन्यकल्पनाऽपार्था ज्ञानं च प्रकृतेर्गुणः।।

(ŚS on Bhagavata, XI.22.11)

The liberated ones manifest with forms and become blissful in the service of the Absolute. The four Vargas are inferior to the blissful state attained by Bhakti. The integration of jñāna and bhakti is justified. Viṣṇubhakti leads to kaivalya. The knowledge of difference is illusory and it disappears the moment the knowledge of identity in the form of Absolute bliss appears. The devotees of kṛṣṇa or viṣṇu attain kaivalya (Absolute bliss).

ŚS has explained the theory of अचिन्त्यभेदाभेद in very lucid style.

शक्तयः सर्वभावानामचिन्त्यज्ञानगोचराः।

यतोऽतो ब्रह्मणस्तास्तु सर्गाद्या भावशक्तयः।

भवन्ति तपतां श्रेष्ठपावकस्य यथोष्णता।।

(ŚS on Vipurana, I.2.2)

अचिन्त्या भिन्नाभिन्नत्वादिविकल्पैश्चिन्तयितुम्।

अशक्याः केवलमर्थापत्तिज्ञानगोचराः।

Brahman has the power for creation, preservation and dissolution. Nobody is empowered to think of such power. One is endowed to know through the knowledge of arthapatti, deduction of a matter from that which could not else be. It is assumption of a thing, not itself perceived but necessarily implied by another which is seen, heard or proved. The alternative knowledge of difference or non-difference cannot be imagined. The existence of which cannot be denied. The grace of the Absolute makes one deduce the effect through implied knowledge. ŚS has made a way for the followers of acintyabhedābhedavāda. The integration of jñāna and bhakti, the establishment of qualified Brahman as satcidānanda, the refutation of Māyāvāda of the Advaitins could be grounded due to the scholarly interpretation of ŚS: His

contribution to Jñānamiśrā bhakti is commendable. It has been thoroughly discussed in the book of Dr. Das.

The amplification of Smṛti tradition through the ṭīkās on the Bhagavadgītā, Viṣṇupurāṇa and Srimad Bhāgavata made ŚS a model in the field of interpretation. Dr. Karunakar Das, former associate professor and Head of P.G. Department of Sanskrit of Maharaja Purnachandra Autonomous College of Baripada has made commendable effort for bringing the creative and critical skill of ŚS to limelight. His study is exhaustive and comprehensive. As a native of Remuna he has particular inclination to collect data from different sources for bringing unknown information to light. He has included the creative compositions of ŚS like भागवतसरणी, गीतासारश्लोकाः, व्रजविहारस्तोत्रम् and नृसिंहस्तुतिः।

The appendix part is more relevant for the researchers.

The researchers, scholars and general readers shall appreciate his endeavor with positive suggestions.

Gopal Krishna Dash

26.12.2020
Vyañjanadvādaśī

(Prof. Gopal Krishna Dash)
Former Professor and Head
P.G. Dept. of Sanskrit
Utkal University,
Vani Vihar
Bhubaneswar.

EXORDIUM

What had till to-day been within the confines of a university, has now come afore the world for the commons to know.

What was being worked out for a Degree in a Doctoral work of research for approval by the experts-a thesis for a university - is now made public for a general perusal, scrutiny and sanction.

While the thesis was meant to unravel the mystery on Śrīdharswamī, a great saint of medieval India, is now offered to the people of the world as an explicit piece of veracity by presentation of facts, their methodical, and thorough analysis, and the ultimate findings coming up there from.

The thesis "Śrīdharswāmī: Ekaṁ Adhyayanaṁ" has now seen the prints as a book- a much awaited thing come true. It was a much necessitated piece of work for the intellectual world, and, the common people as well, to know and believe "Yes this is the actual thing and, not a heresy".

There had been no contention on the existence of Śrīdharswāmī, the man, but there was profound disagreement on his time of birth and nativity- each faction in the country claiming him to be theirs; who doesn't want to be a worthy son or be a proud father? And, here it meant the both.

In ancient times the great ones fascinated to conceal the facts about themselves- an apparent practice in the olden days all over the world. Shakespeare to Kalidas or say, Jayadeva and Sridharswami were no exceptions.

Only on the recent dates the great saint poet Jayadeva has been irrevocably accepted as a native of Odisha. But, then, it was after a great strife.

Strange is the character of man to go for glorification to the extent of falsity, contumelious is the thing when truth is taken regrettable as worse than a fiction. It is ridiculous, and most unfortunate that, the Odias were thought to be unworthy to bear great people, with one exception, of course, thanks to God Almighty- Santha Bhimabhoi, the

acclaimed Odia has never been claimed by any other state because of his definitive whereabouts, whose proverbial verse of love for the humanity:

"प्राणीङ्क आरत दुःख अप्रमित देखुदेखु केवा सहु

मो जीवन पछे नर्के पडिथाउ जगत उद्धार हेउ।"

"Witnessing the plethora of plights on earth how one could bear with, "I let the world get redeemed at my cost"-thus being the translated text inscribed on the wall of United Nations Organization (UNO) Hall in various languages, also inscribes the glory of Odias in golden' letters- much beyond anybodies wrangle or contention.

Of course Srichaitanya has been a person of cohesion, whose father was Jagannath Mishra, an Odia from Jajpur, and his mother Maya Devi, a Bengali from Nadia. Then, there are also the Panchasakhas heralded by the Autibodi Jagannath Dasa, and they all comprise the group of Baisnavas succeeding the era of Sridharswami on whom Dr.Karunakar Das had to plough for his fruit- the truth to reveal on Śrīdharswāmī. He did it impartially that one could accept it for which it was intended- and no less, and no more.

He did it on Śrīdharswāmī but, then why? He, incidentally, came across few exchange of letters between Chandra Mohan Maharana and the Great Fakir Mohan Senapati: The former an astute grammarian, and the later was a great writer, poet, and the savior of Odia language during the days of its crisis in mid 19th century when some unscrupulous Bengali usurpers wanted that Odia language be abolished from schools as a medium of teaching. And, in that correspondence between them it was suggested that Śrīdharswāmī was born in Mayūrgrāma a near by village in vicinity of Remuṇā of Bālāsore. Fakir Mohan Senapati was overwhelmed, and wanted to do something on it. But, unfortunately it couldn't proceed then. And by providence, the onus was fixed on Dr. Das that he should fill the bill F.M.Senapati willed done.

He took great tedium (Why else a true researcher?) in collecting the various data for which he had to fathom all the way from one state to another and also the local feasible available materials, scan them, & do a methodical scrutiny and analysis, and postulate the truth on the mystery of nativity of Sridharswami, and, establish beyond doubt that he was born in a hamlet village Mayūrgrāma in vicinity of Remuṇā of Bālāsore.

One odium over, the other one on his time of birth loomed as big. Even this, in a way, was to affect his being of nativity too. Scoopings - hither to been done maintain the

date of his birth to be within 1350-1450 AD, which the researchers find to be more accommodative. There have been, many persons in the past with this name in the field of monastics, for which some researcher assert that the tenth Sankaracharaya of Gobhardhan Matha at Puri was this Śrīdharswāmī. But the time factor doesn't vindicate the claim. In the incumbency chart we find four Śrīdharswāmis in different times other than within the stipulated period from 1350-AD to 1450-AD. Rather, according to Dr. Bhaskar Mishra, the said Śrīdharswāmī could be the trustee (Mahanta) of Śankarānanda Matha at Puri, since Sridharswami was a Nrusimha devotee.

Being a Nrusimha Śādhaka basically deciphers that Śrīdharswāmi was a Vaisnavite par excellence. In fact, the archipelago of his vast works consisting not less than of 15 volumes of writings- each a master piece of which "Subodhini Tika", a treatise on Srimatbhagbat Gita, "Atmaprakash Tika" based on Visnupuranam, and "Bhavartha Dipika", based on Bhagbat Mahapuranam, draw special attention. And, these, and the rest of his writings encompass his extent of writings to the vast realm of recondite esoterica, expounding his philosophy both on Vaisnavism that is more glued with Bhakti tatva of divine love and complete surrender to the manifest Brahaman - "The Ekam Sat Vipra Bahudha Badanti" as Krishna the icon and Yet, at the same time intersperse his expositions with monistic approach of Sankarite Adwaitavada, which preaches austere Jnāmarga as opposed to following a general path of karma with love and complete surrender to God Almighty- Krishna as the ultimate. This seems a paradox though, it could be that, in his intital life he could be a follower of Sankara; later drawn to mainstream Vaisnavism of Visnuswami, &, after he himself being baptized to the new cult, and satisfied with the new philosophy, tried to serve the dish of nectar of Prema and Bhakti to all, that would also not bereave the dry Sankarites. Thus, to do this he adopted a way out to serve his teachings with a tinge of jnanavad as an allurement. The new tactical Jnāmishra Bhaktivāda presaged a spiritual order that would take into it's wings, in time to come, such monks as Madhavendra Puri and Iswar Puri – the spiritual preceptor of Srichaitanya. No wonder, Srichaitanya proclaimed "Sridhara ke ami guru kori mani"- (I do avow Śrīdharswāmī as my guru) and the history is overt how Srichaitanya led Vaisnavism (Later popularly known as Gaudiya Vaisnavism) in the whole of East and Northeast part of India to deluge.

Notworthy is the phase of discourses and permeation ideas of Srichaitanya and the great Jagannath Dasa (Autibaudi)- the writer of Odia Bhagavata- a work relying on the work of Śrīdharswāmī-that is "Bhābārthadīpikā Tīkā". There seems some amalgamation

of ideas between the GaudiaVaisnavas and the UtkaliaVaisnavas (led by the Panchasakhas- Jagannath Dasa, Balarama Dasa, Achyutananda Dasa, Jasovanta Dasa, and Sishuananta Dasa), since, there was no mention of "Radha" concept in Utkal (present Odisha); it, only is seen after "Gita Govinda" of Jayadeva of the aforesaid historical phase took place then. And, then followed many of the others (e.g. Rasakallola of Sri Dinakrushna Das of Balasore).

For any reason there of, Śrīdharaswāmī comes to the scenario on Vaisnavism in Odisha, and, in India notwithstanding the claimants on him from different quarters in the country to which Dr. Karunakar Das had to contend and toil to establish the truth, nothing but the truth, and, the research work thus deduced produces this desired work in the form of a book.

This work will appease an inquisitive one, a researcher, a student, and a savant as well.

Pioneering the work desired by the great Vyasakavi Fakir Mohan, Dr.Karunakar Das has invoked the blessings of this great immortal soul, and, as well as of the entire humanity- that is the bounty of divine blessings we beseech he behoves – OM Shanti, Shanti,Shanti.

Remuna, Balasore
16-8-2020

Dr. Gopinath Maharana.

BLESSED EUPHORIA

Dr. Karunakara Das hails from a poor family of Remuṇā, the Holy place of Lord Gopīnāth in the district of Balasore, Odisha and brought up in the lap of father Lt- Kartik Chandra Das and mother Bilasini Devi. Mr. Das gradually accumulated fine and and fundamental saṁskārs in his childhood days. He has followed the foot print of his father who was a staunch devotee of lord Kṛiṣhṇa/Gopināth, the propitiated God of Remuṇā. By which Mr. Das has been inspired and dedicated all his deeds and achievements to Lord Gopināth. By the by he developed his keen interest towards oriental language in schooling life. There after he joined as a student in Fakir Mohan College, Balasore and after graduation he prosecuted his study in the P.G. Department of Sanskrit at Utkal University and completed his course as a meritorious student.

Mr K.K. Das derived inspirations from his preceptors and teachers. He never forgets to mention the magic of Guru's blessings and their names at whose lotus feet he has studied and learnt different subjects of Sanskrit during his student and post-student life. Among them Professor Gopal Krishna Dash played a great role in his life who was his ideal teacher cum friend, philosopher and guide for five years during his under graduate and Post Graduate stape. He is also indebted to his Gurus who have positively given a proper dimension to his intellect are laudable Professor Anan Charan Swain, Professor Krushna Chandra Acharya, Professor Alekh Chandra Sarangi, Professor Upendra Nath Dhal and others.

Mr. Das joined in Govt. aided college after conquering State Selection Board, Govt. of Odisha in the year 1988. He joined as a lecturer in Sanskrit at Atal Behari College, Basudevpur, Bhadrak in the month of August, 1988, who was my colleague for two years. He was a good academician where I found his skill and zeal in teaching. During his short stay here in the course of discussions and active participation in the Department seminars, I remarked his research bent of mind from the very beginning. He left Basudevpur in 1990 after achieving OPSC (Odisha Education Service) and joined in Govt. Women's College, Balangir. Thereafter Mr. K.K. Das joined as a Reader / Associate Professor, P.G. Department of Sanskrit, Maharaja Purnachandra (Auto) College in the year 1998, which is a premier College in Mayurbhanj District, Odisha and continued till his superannuation i.e. 2018.

During this period he has made up his mind to do something new and innovative on research project and could become success in this mission.

Under the supervision and able guidance of Prof. Gopal Krishna Dash, he submitted his Ph.D. thesis entitled "Srīdharasvāmī: Ekam Adhyayanam" in the Fakir Mohan University, Vyasa Vihar during the year 2013 and awarded the Degree in the early part of 2014. No doubt Srīdharasvāmī is an outstanding scholar in the world of Sanskrit literature. His reputation and highness as a commentators par excellence has spread all over the world.

But it is a matter of great regret that history is almost silent about this bright star. Although many scholars have carried out minimum research in this respect, their findings have not thrown sufficient light on the life, works, time and native place of this eminent scholar, where as Dr. K. K. Das have given a thorough and detailed picture about his significant works, his time and place of the noted scholar. Moreover, for the first time Dr. Das has established his thoughts, that Srīdharasvāmī belongs to village Mayūragrām, Remuna, Balasore, Odisha.

Historians like Dr. J.N. Farquhar, Dr. Sushil Kumar Dey, Dr. H.K. Mahatab, prabandhik Chandra mohan Maharana, Archeologist Padmasri Paramananda Acharya and the world famous story writer Vyasakavi Fakir Mohan have praised a lot on the works of Śrīdharasvāmī.

It is a great pleasure that Dr. K.K. Das, the research scholar belongs to the same locality i.e. his village Mandarpur adjacent to the village Mayūragrām the authors birth place. From the University, Dr. Das has been awarded Ph.D. degree is also situated within the periphery of both the village of the author and scholar respectively. Certainly it is an auspicious combination to bring out the scholarship of the author to light. This thesis is a unique one for the scholars of next generation.

Every year on the auspicious day i.e. Māghasaptamī, Śrīdharasvāmī Jayantī is being celebrated in the author's village Mayūragrām by the Śrīdharasvāmī smṛuti Parisada from the year 1956 with the collaboration of Odisha Sahitya Academy, Govt. of Odisha. Śrīdharasvāmī pāthāgāra has been also established by the villagers in the year 1957 and upper primary school has been established since long in the name of this reputed scholar.

Dr. K.K. Das has authored and edited standard Text books for students and serious readers. Viṣṇu Purāṇa with Ātma Prakāśa Tīkā of Śrīdharasvāmī has been translated and edited by

Dr. Das and the 1st Vol. has been published and the rest five parts will be published in due course of time which is a unique task for editing the same. He has also written some Odia Dramas and numbers of Odia articles in different Odia Megazines.

He has proved in his life how good manners and thirst for knowledge can grow together. No doubt, Dr. Das is an embodiment of simplicity and is a life-long devotee of Indian cultural tradition whose personality is as great as his great creations.

पूर्णता गौरवाय

Basanta Panchami

Date: - 16th February, 2021

Prof. Dr. Kshitiswar Dash
Retd. principal
Seemanta Mahavidya
laya, Mayurbhanj
odisha.

BACK COVER PAGE

A cowherd boy has written this book !

Incredible ? No!

The boy herding the cattle of his relatives in the village for a paltry portion of his aliment and raiment would later become Dr. Karunakar Das, associate professor, Dept. of Sanskrit, M.P.C Autonomous College, Baripada, Mayurbhanj- the writer of this book.

The second son of a poor peasant couple, late-Kartika Chandra Das and Bilasini Devi he was born incidently, in a remote village of Mandarpur in near vicinity of Mayurgrāma, the birth place of Śrīdharaswāmī and was not "born to blush unseen" in that remote soil, but to act & extirpate the gloom hovering the question of birth (time of birth) and nativity of Śrīdharaswāmī and throw light on his works that we may get a glimpse of works done by Śrīdharaswāmī.

He has also written stories essays, verses & dramas which have been published in different journals in Odisha. Many of his books have been included in the syllabi of some universities.

The book would surely appease the appetite of the inquisitive ones, the students and the researchers as well.

Publisher

INSIDE BACK COVER

The published and unpublished works of the author.

1. Kautiliyam Arthasastram(Utkalbharatibyakhya),kitab mahal,Cuttack – Published.
2. Mukundamala(Bilasini Bhasya),Subarna Distributors, Bilasini Vatika,Remuna-published.
3. SriSri Visnupurana(1st part)- Sridhar Tika with translation, Sridharaswami Grantham mandir, Bilasini Vatika, Remuna- published.
4. Ṛgveda Bhāṣya Bhūmikā of Sayanacharya. (Gopalkrishna Bhasya) SBL publication, BPD, Mayurbhanj.
5. Sanskruti ankhire luha (Drama published)
6. Nirimakhilaxmipriya (Drama published)
7. Nuasakala (Drama unpublished)
8. Natakaseshahela (Drama unpublished)
9. Bhagbataratnamala (Unpublished)
10. SriSri Visnupurana (2nd to 6th part) –Sridhar Tika with translation- Unpublished
11. Prabandha Panchadasa (Unpublished)
12. Nrushingha Stuti (Sri Krushna Bhasya, Unpublished)

Arrange content according to this instruction

आमुखम्

Foreword

Exordium

Blessed Euphoria

प्रथमोऽध्यायः

प्रेषक
उमाकान्त शुक्ल
६०४, संगम मार्ग, पटेल नगर मुजफ्फरनगर (उ॰प्र॰) २५१००१

१६.१२.२०२०

आदरणीय डा॰ साहब,

सादर प्रणाम।

आशा है अब आप कुछ प्रकृतिस्थ हो रहे होंगे। धैर्य ही एकमात्र अवलम्बन है।

मैं आपकी सेवा में अपनी निम्नलिखित चार रचनाएँ भेज रहा हूँ। आपका विविध रूपों में आशीर्वाद अपेक्षित है -

१. स्मृतिपञ्चाशिका (भूमिका लिखने के लिए)
२. अनुबोधपञ्चाशिका (प्रस्तावना " ")
३. चेतःपञ्चाशिका (प्रोत्साहनावचन " ")
४. अन्योक्तिवसन्ततिलकम् (प्ररोचना " ")

आशीर्वाद

भाषा हिन्दी, संस्कृत, अंग्रेजी कुछ भी हो सकती है। जो आप चाहें।

तीनों रचनाओं के अंग्रेजी रूपान्तरकार प्रो॰ जे॰पी॰ सविता हैं। अब अवकाशप्राप्त हैं। एस॰डी॰ कालेज मुजफ्फरनगर में अंग्रेजी विभाग में थे। वे अंग्रेजी और अमेरिकन साहित्य के विद्वान् हैं तथा इनके साथ संस्कृत, हिन्दी, उर्दू आदि विविध भाषाओं के ज्ञाता हैं। इन्होंने अंग्रेजी में १५००० से भी अधिक कविताएँ लिखी हैं, इनके चार हिन्दी काव्य संग्रह प्रकाशित हैं, श्रेष्ठ वक्ता हैं। कारयित्री और भावयित्री प्रतिभा से सम्पन्न हैं। ७५-७६ वर्ष के हैं।

१. स्मृतिपञ्चाशिका का हिन्दी रूपान्तर मेरी छोटी बेटी प्रज्ञा ने किया है।

२. अनुबोधपञ्चाशिका का हिन्दी रूपान्तर मेरी मझली बेटी सुप्रीता ने किया है।

३. अन्योक्तिवसन्ततिलकम् का हिन्दी रूपान्तर बड़े पुत्र अरविन्द नाथ ने किया है।

तीनों रचनाओं में प्रो॰ जे॰पी॰ सविता का उल्लेख अवश्य कर दीजिएगा।

शेष सानन्द है।

आपका -

उमा
(उमाकान्त शुक्ल)

संलग्नक
१. चैक सं॰ इलाहाबाद बैंक "105750"। (अपनी प्रसन्नता के लिये)
२. सामग्री लौटाने हेतु टिकट सहित लिफाफा।
३. आपका पहला आलेख।

सेवा में - पद्मश्री -
डा॰ सत्यव्रतजी शास्त्री
ए-२४8, डिफेंस कालोनी
नई दिल्ली - 110024

कृपया अंगरेजी अनुवादक के रूप में प्रो० जे०पी० सविता जिनका परिचय मैंने अलग से दिया है, का उल्लेख अवश्य कर दीजिए।

My dear Padma Shri Dr. Shukla Ji

As conveyed to you over the phone I have no facility for Devanagari typing on my computer. The situation being what it is, I cannot have an access to a Devanagari computer operator. I have therefore, per force, to write in English the few lines in appreciation of the Smrti-pancasika. You would kindly have them translated in Sanskrit and place them wherever you deem fit.

Regards.

Yours Sincerely,
Satya Vrat Shastri

It was a pleasure to go through the latest of the works of the eminent literary writer and critic Dr. Uma Kant Shukla the Smrti-pancasika which at once reminded me of the Caura-pancasika being so similar to it in content and style. It is a beautiful string of verses couched in elegant expression reminiscent of the works of old. The refrain preceding each stanza "I remember' lends added charm to the work. The verses are accompanied with English translation which came to as pleasant surprise presenting before me a rare spectacle of a Sanskritist having a wonderful command over the English expression with a classical tinge. The tradition of Sanskrit scholars having equal grasp of the Sanskrit and English is fast sliding into oblivion. In the midst of this the works like the one under reference comes as whiff of fresh of fresh air kindling the hope tha hope that not everything is lost yet. There is a flame that still flickers.

The Kavya draws a picture of a forlorn hero remembering every bit of her sweet beloved, her swings of mood in keeping with the different seasons, her quaint moves under the torrent of impulsive love, her impassioned caresses, her kisses and embraces when smitten in love, her wistful eyes full of longing in a wait for him when in separation.

The Kavya depicts Srngara in its form of Vipralambha which is a source of immense aesthetic pleasure.

Its author Dr. Uma Kant Shukla deserves full plaudits for producing a work of beauty which is a joy for ever.

Satya Vrat Shastri

अपर्णा गुप्ता के साथ

साक्षात्कार

TRANSCRIPT
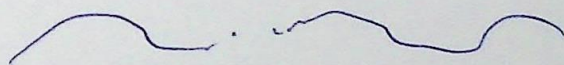
An interviewer questioned him "Do you think all those who read your writings appreciate you and like you?" He answered, "Whether they like or dislike my writings, they cannot disown the problems I raised in those writings. If I make them alive to a situation, I feel successful. Liking or disliking are the obverse or converse of the same coin. When once the coin is mine, I am satisfied and encouraged".

In his writings, as he unfurls the flag of revolt, unhappiness, pain and agony of the people who had been looked down upon through the ages, he keeps his cool as writer. He never provokes a section and fools the other, but he remains composed and controlled. He always aims at projecting a social problem, and suggesting a solution and allowing some space and time to people to thing and realize.

3. TELUGU WRITER

He had been a prolific writer who contributed his writings to various journals, AIR & DD. As he had been a versatile author, his works were in demand. Most of his Novels, Short Stories, Essays and reviews were commissioned by Publishers and Editors of Journals.

The themes- plots – of his creative works centered around the lives known to him or experienced by him or provoked him. Once he maintained that his writings had been the results of his tears. That means his troubled soul of agony and anxiety. When he was helpless at a social, economic, political situation which was beyond his ability to solve, he would embark on an inevitable plane and cry. This would result in penning down a work of art, a creative writing.

All his writings inclined towards helpless lot of our society. Their life had been the content of his writings. He, as an author, had been sympathetic to socially, economically, politically neglected, deprived and ill-treated sections of our society.

Neither the grandeur nor the romanticism of the affluent would get glorified in his works. But the poor, the segregated, and the people looked down upon would be showed up and portrayed. Even his critical and research activity would project a slant or a dent towards the suppressed social populace. The scholars, critics and readers alike labeled him-a writer of the underdog, the under privileged, the poor, the untouchables and the ill- treated- who had been continuously denied the human dignity.

When someone asked him "Why he did not concentrate on a single genre of a single line of thinking i.e., a movement or a particular ism without embarking on so many forms of expression and many social problems and movements?" He said that he wished to reach all sections, or as many sections as possible.

एंकर-भारत एक संपन्न और विभिन्न संस्कृतियों, भाषाओं और कलाओं का अखंड राष्ट्र है। इस महान राष्ट्र को एक सूत्र में एकीकृत करने वाले मूल मंत्र हमें मिलते हैं संस्कृत भाषा में। देवमयी, रहस्यमयी, ब्रह्माण्डमयी कहीं जाने वाली यह भाषा आज समय की तीव्र गति के साथ भारत से संपूर्ण दुनिया में पहुंच चुकी है। संस्कृत भारतीय सभ्य समाज का एक सशक्त मंत्र है। सुरम्य संस्कृति का रमणीय मंत्र है। सुललित कलाओं का लोकोपयोगी मंत्र है। निश्चित ही संस्कृत भाषा एक मंत्र है उज्जवल भविष्य का, अप्रतिम शांति का और सार्वभौमिक दिव्य एकता का। अगर हमें अपने भावों को, अपने विचारों को, व्यक्त करना होता है या किसी अन्य व्यक्ति तक पहुंचाना होता है, तो हमें उसके लिए एक भाषा की जरूरत होती है। विश्व की प्राचीनतम भाषाओं में से एक भाषा है संस्कृत। लेकिन संस्कृत को हम मात्र एक भाषा ही नहीं कहेंगे। संस्कृत एक विचार है, एक दर्शन है, संस्कृत ज्ञान है, संस्कृत एक संस्कृति है, एक संस्कार है, संस्कृत एकता का सूत्र धार है। संस्कृत के एक विद्वान श्री सत्यव्रत शास्त्री जी आज हमारे बीच उपस्थित हैं। वह एक लेखक और कवि भी हैं। शास्त्री आपका स्वागत है। संस्कृत साहित्य आकाश में एक देदीप्यमान नक्षत्र की भांति प्रोफेसर सत्यव्रत शास्त्री का जन्म हुआ, 29 सितंबर 1930 को। अनुपम मेधा संपन्न प्रोफेसर शास्त्री संस्कृत के प्रौढ़ ग्रंथों को अपने पिता और मूर्धन्य व्याकरण पंडित चारुदेव शास्त्री से घर पर ही बाल्यकाल में पढ़ने लगे। प्रोफेसर शास्त्री ने सकल विद्या की राजधानी काशी में आकर संस्कृत भाषा पर गहन अनुसंधान किया। और काशी हिंदू विश्वविद्यालय से पीएचडी की उपाधि आचार्य भर्तृहरि के व्याकरण दर्शन संबंधित ग्रंथ वाक्य पदीयम पर अर्जित की। ज्ञानपीठ पुरस्कार से पुरस्कृत प्रोफेसर सत्यव्रत शास्त्री की कीर्ति विश्व पटल पर अंकित है। उन्होंने विश्व के तीन महाद्वीपों पर छह विश्वविद्यालयों में अनेक वर्षों तक संस्कृत का व्यापक अध्ययन कराया। विशेष रूप से थाईलैंड के जुलालोर्न कॉर्न, सिल्पाकौर्न नॉनखाई क्रो और उत्तर-पूर्वी बौद्ध विश्वविद्यालयों में संस्कृत की कीर्ति और गौरव को बढ़ाने में सर्वप्रथम योगदान का श्रेय प्रोफेसर शास्त्री ही जाता है। इटली के दांतेए, जर्मनी के गेटे, हंगरी के सैनदोर्स वरेस और रोमासा की निहाई एमीनैसको जैसे प्रख्यात कवियों की प्रतिनिधि रचनाओं का संस्कृत पद्य अनुवाद भी संस्कृत मनीषी प्रोफेसर सत्यव्रत शास्त्री ने अत्यंत ही सरलता और लालित्यपूर्ण रीति से किया है। संस्कृत की एनसाइकिलोपिटिया और लिविग लेजेंट इन संस्कृत जैसी उपाधियों से विख्यात प्रोफेसर सत्यव्रत शास्त्री ने रुचिकर और ज्ञानवर्धक तीन महाकाव्य, तीन खंडकाव्य, और एक प्रबंध काव्य की रचना भी की है। निश्चित ही प्रोफेसर सत्यव्रत शास्त्री का यह अतुल्य साहित्य योगदान भारत के वैभव का विश्व को विशिष्ट अवदान है। सारस्वत साधना के साक्षात प्रमाण महामहोपाध्याय प्रोफेसर सत्यव्रत शास्त्री को शिक्षा और साहित्य के क्षेत्र में पद्मश्री, पद्मभूषण, साहित्य अकादमी सम्मान और कई अन्य पुरस्कारों से अलंकृत किया गया है। विश्व बंधुत्व और वसुधैव कुटुंबकम के सार्वभौमिक मंत्र को संस्कृत भाषा के एकात्मकता के मंत्र से ही समझा जा सकता है। इसी एकता के मंत्र को अपने समृद्ध ज्ञान-विज्ञान और अनुसंधान से साक्षात् मूर्तिमान करते हैं हमारे देश के महान विभूति प्रोफेसर सत्यव्रत शास्त्री।

एंकर-संस्कृत भाषा को देव भाषा कहा गया है। यानी देवताओं द्वारा बोली जाने वाली भाषा। तो इस भाषा को देवताओं ने हमें प्रदान किया है, ईश्वर द्वारा प्रदान की गई भाषा है या मनुष्य ने बनाया है। क्योंकि हमारा जो प्राचीन ग्रन्थ है ऋग्वेद, उसकी रचना भी संस्कृत में हुई है। और इसका आविर्भाव और इसकी उत्पत्ति कब हुई है उसका काल क्या है, क्या यह अनादि है?

शास्त्री जी-इसका समाधान हमें वेद में ही मिल जाता है। वहां यह कहां गया है कि **'यज्ञेन वाचा पदवी योमायन तामन्वविंद ऋषिसूक्त विष्ट्राम'** के यज्ञ के माध्यम से, वाणी के मार्ग तक मनुष्य पहुंचे थे। **'यज्ञेन वाचा पदवी.'** पदवी शब्द का प्रयोग जिसके लिए हम आजकल पदवी शब्द का प्रयोग करते हैं। मार्ग। तो यज्ञ के माध्यम से वाणी

तक ऋर्षि-महर्षि पहुंचे थे। और जब वह वाणी ऋर्षियों में प्रविष्ट हो गई। उसके बाद **'तामन्त्रविंदं ऋषिसूक्त विश्राम'** जो बाद के आने वाले लोग थे उन्होंने उस भाषा को ग्रहण किया। वेदों के काल से ही हमारे यहां यह भाषा है। एक बात यहां पर विशेष उल्लेखनीय है संस्कृत जो शब्द है भाषा के नाम के रूप में, बहुत बाद में आकर के प्रचलित हुआ। लगभग एक-डेढ़ सहस्र वर्षों तक ये केवल भाषा के नाम से ही जानी जाती रही। संस्कृत नाम बाद में आया इसका। तब केवल भाषा ही कहते थे क्योंकि, भाषा वो होती है जिसमें जन साधारण अपने विचारों को व्यक्त करता है, बातचीत करता है। उसके दैनिक जीवन का अंग होती है। अभी भी जब हम हिन्दी की बात करते हैं तो कई बार हम भाषा शब्द का प्रयोग करते हैं। तो भाषा टीका, हिन्दी में करते है ना भाषा टीका। तो हिन्दी कहने की आवश्यकता ही नहीं है। भाषा ही है वह। इसलिए जब संस्कृत भाषा थी। जनसाधारण की। यानी तब भाषा शब्द से ही जानी जाती थी। महर्षि यास्क ने भाषा शब्द का प्रयोग किया है। **'एव भाषाया अन्नोदयम इवेति उपमा अर्थी भाषायाम'** इव जो है वह उपमा के अर्थ में है, सादृश्य बतलाने के लिए भाषा में प्रयुक्त होता है। तो भाषा शब्द का तो पाणिनी ने भी सूत्रों में भाषा शब्द का ही प्रयोग होता है। **'भाषायाँम सदवस्य'**

एंकर-इसका नाम संस्कृत कैसे पड़ा? उस भाषा का नाम संस्कृत कैसे पड़ा?

शास्त्री जी-भाषा से संस्कृत का अर्थ है परिष्कृत। ये 'कृ' हमारे यहां एक धातु होती है। उसका अर्थ है करना। डुकरी करनी। तो 'सम' उपसर्ग लगाकर के और 'त' प्रत्यय लगाकर के ये संस्कृत शब्द बनता है। ये 'स' जो बीच में है यह सुट का आगम है। और 'स' का अर्थ होता है भूषणेय। 'सम परिभ्याम करो तो भूषणेय' ये पाणिनी का सूत्र है। ये 'स' इसके साथ लग जाता है। संस्कृत-सम+कृ+त। तो ये स भूषण का अर्थ है। यह सजीव भाषा है, परिष्कृत भाषा है। और इसलिए यह कहा गया कि सबसे अधिक वैज्ञानिक भाषा कोई है तो वह संस्कृत है।

एंकर-भाषा एक बहता हुआ नीर है। तो जो संस्कृत है वो अभी भी अपने मूल रूप में है या समय के साथ उसने बहते हुए अपने में कुछ विकास किया है, कुछ परिवर्तन आए हैं?

शास्त्री जी-उसमें परिवर्तन भी आया है। नई शब्दाबलि भी आई है संस्कृत में। कोई भी भाषा बोलचाल की होती है तो परिवर्तन होता रहता है। यह भाषा का स्वभाव है। भाषा कभी स्थिर नहीं रहती है। यदि भाषा स्थिर हो जाएगी तो फिर उसका प्रवाह अवरूद्ध हो जाएगा। तो संस्कृत ने बहुत से शब्दों को दूसरी भाषाओं से भी ग्रहण किया है, अपनाया है। अंग्रेजी के विषय में कहा जा है एंगलोसेक्सन बोकोब्लरी है वह तो बहुत ही कम है और बहुत से शब्द अनेकोंअनेक भाषाओं से आकर के अंग्रजी में सम्मिलित हो गए। और अंग्रेजी संभवतः समृद्ध भाषा बन गई। यही संस्कृति की स्थिति है। संस्कृत में भी बहुत से शब्दों को अपना लिया है अपने भीतर। वो संस्कृत का अंग बन गए है। हमारे यहां संस्कृत में 'ऊंट' के लिए 'उष्ट्र' शब्द है। लेकिन एक दूसरा शब्द भी है 'क्रमेले' है। **'क्रमेलः कंटक जाल मेव'** तो क्रमेल क्या है कैमल। तो वह शब्द वहां से आया। तो उसको हमने अपना लिया। हमारा नमक है। नमक दो प्रकार का। एक तो समुद्र के जल से बनता है और दूसरा खदान से भी निकाला जाता है। भारतीयों ने खदान से नमक निकालने की क्या विधि है वह रोमन से सीखी। नमक की खदानें हैं उसके लिए संस्कृत का शब्द है रूमा। तो हमारे जो प्रचानी कोश है, अमरकोश है। उसमें कहा गया है **'रूमास्या लिवणाकरे'** तो रूमा है रोम। रोम से सीखा हमारे भारतीयों ने। तो ये एक नया शब्द आ गया। फिर हमारे यहां जब ग्रीक के साथ हमारा सम्बन्ध हुआ। तो ग्रीक से कई शब्द आए हमारे यहां भारत में। ग्रीक के पास एक बहुत ही छोटा सा आइलैंड है जिसको आइयोना कहते हैं। आईओएनए ये स्पैलिंग है उसका। तो आइयोना से जो लोग आए वह यवन कहलाए। उस यवन शब्द से अनेक शब्द

बने। जैसे यवनों की लिपि। उनकी लिपि हमारी लिपि से भिन्न थी। तो उसके लिए हमें शब्द चाहिए थे तो हमने शब्द गढ़ा। वह था शब्द यवनानी। **'यवनानी लिपिः।'** यवनों की लिपि। यवनानी हो गया। हमारे यहां जब नाट्य प्रस्तुति होती थी। एक कर्टन का काम है। पर्दे का काम है। यवनों के यहां जो नाट्यों की विधि प्रचलित थी। तो उससे हमने लिया। तो उससे हमारे यहां शब्द आ गया यवनिका। बहुत शब्द इस प्रकार के हैं।

एंकर-हमने वहां के शब्द लेकर के संस्कृत में, उसकी जो ध्वनि है, और व्याकरण हमने संस्कृत के हिसाब से उसको अडैप्ट किया। उसको बाद उसको संस्कृत में सम्मिलित कर दिया गया। और संस्कृत भाषा इस तरीके से एनरिच होती गई। संस्कृत भाषा जैसे हमारा बौद्धिजिन्व है हिन्दूजिन्व है, जैनिज्म्व है, इन सबकी एक फ्लोसिफिकल लेंवेंग्ज है। एक दार्शनिक भाषा है। इसके अलावा संस्कृत साउथ की भी बहुत सारी भारत की भाषाओं के साथ इस्तेमाल होती है। भारत के अगर हम बाहर जाते हैं तो साउथ ईस्ट एशिया में है या चीन में है, तिब्बत में है। यहां पर भी संस्कृत भाषा का उपयोग होता है। तो संस्कृत भारत से बाहर गई है या बाहर से हमने उनको ज्यादा भारतीय में अपनाया है?

शास्त्री जी-भारत की स्थिति यह है कि संस्कृत जो है, वर्तमान स्थिति में कह रहा हूं। तभी तो यह सम्पूर्ण भारत की भाषा थी ही थी। इसमें कोई संदेह नहीं है। और ये भी संस्कृत की स्थिति रही है भारत की संदर्भ में कि, एक वस्तु के लिए, एक पदार्थ के लिए एक शब्द जो एक देश के विशिष्ट क्षेत्र में प्रयुक्त होता है। दूसरा शब्द दूसरे क्षेत्र में प्रयुक्त होता था। उदाहरण के लिए हमारे यहां दुग्ध शब्द का प्रयोग होता है दूध के लिए। तो उत्तर भारत में दुग्ध शब्द प्रचलित रहा। परन्तु जो पूर्वी भारत है उसमें खीरा शब्द है दूध के लिए प्रयुक्त होता है। खीरा क्षीर है। 'नीर क्षीर विवेक' जिसको हम कहते हैं। तो वहां क्षीर शब्द प्रचलित है। नीर क्षीर शब्द का जो मैंने प्रयोग किया। जो हंस जो है वो दूध का अंश अलग कर देता है और पानी का अंश अलग कर देता है। तो हंस में यह शक्ति है। **'हंसो हि क्षीर मादित्यें तनमिश्रा वरयततपा'** हंस क्षीर को निकाल लेता है। और उसमें मिश्रित जल है उसेको परिवर्तित कर देता है अलग कर देता है हटा देता है। इसलिए हंस शब्द के साथ योगियों के लिए भी प्रयुक्त होता है। परमहंस कहते हैं। क्या ग्राह्य है क्या ग्राह्य नहीं है। यह जो विवेक कर सकता है वह परमहंस होता है। दक्षिण भारत में नीर शब्द का प्रयोग नीर। हमारे यहां पानी है पानी। परन्तु जो सभ्रांत वर्ग है हमारे यहां वो जल का प्रयोग करता है। आप जल ग्रहण करिए। अच्छा बाद में क्या हुआ कि ये जो शब्द थे। अलग-अलग यानी एक ही पदार्थ के लिए, तो जो कोशाकार थे उन्होंने इन शब्दों को अलग-अलग भाषाओं से लिया और भाषाओं से लेकर इनको पर्यायवाची के रूप में अपने कोशों में परिणित कर लिया। इस तरह से पर्यायवाचिता शब्दों में नहीं है इस तरह संस्कृत की जो शब्दावलि है वह समृद्ध होती चली गई। हमारे शब्द जो हैं वो बाहर भी चले गए। संस्कृत से अन्य भाषाओं ने शब्द लिए। मैं पश्चिम के देशों पर दृष्टिपात करते हुए कहता हूं जैसे हमारे यहां यह शब्द है 'भूर्ज'। बच्चर्क **'भूर्जत्व चाह कुंजर बिन्दू सोना'** कालिदास ने कहा है। भोजपत्र पर लोग लिखते थे। वो भुर्ज शब्द ही जाकर के ही बर्च बना। और फिर वही शब्द जाकर के परसिया में पहुंचा तो उसके दो रूप बन गए। एक वर्क, जैसे चांदी का वर्क है, सोने का वर्क है। तो यह वर्क शब्द लीफ के लिए आ गया। सिलवर लीफ, गोल्डन लीफ के लिए आया। दूसरा बना वर्का। पेज के लिए, पृष्ठ के लिए। तो यह शब्द अन्य-अन्य भाषाओं के लिए गया। अन्य-अन्य अर्थ भी हो गए उसके।

एंकर- थोड़ा-थोड़ा रूप में परिवर्तन होता गया और उसके जो अर्थ हैं उसी हिसाब से बनते गए।

शास्त्री जी- तो इस तरह से संस्कृत ने बहुत प्रभावी किया है। देश देशान्तर की भाषाओं को प्रभावित किया है। और अपने देश में यह स्थिति रही है कि, संस्कृत पहले तो सम्पूर्ण देश की भाषा थी। लेकिन बाद में आकर के वह जब प्रचलन में नहीं रही, बोलचाल की भाषा नहीं रही। उस समय जो है अलग-अलग प्रादेशिक भाषाएं जो पनपी। वो उन

प्रादेशिक भाषाओं में संस्कृत की प्रचुर शब्दावलि जो प्रयुक्त में आती है। तो संस्कृत किसी एक प्रदेश विशेष की भाषा न हो करके शब्दावलि के माध्यम से उन सभी भाषाओं में विद्यमान है। प्रचुर रूप में प्रयुक्त होती है।

एंकर-तो भाषाएं नई-नई जन्म लेती गई उन्होंने संस्कृत का ही सहारा लिया उन्होंने अपने आपको विकसित करने में, डबलव करने में?

शास्त्री जी-सारे हमारे प्राचीन कवि हैं या अर्वाचीन कवि हैं। उनकी कविताओं को गद्य को भी देखिए तो कितने शब्द संस्कृत के भरे पड़े हैं। तो संस्कृत ने उन भाषाओं को सब भारत की भाषाओं को जीवन्तता प्रदान की है। क्योंकि उसकी पृष्ठभूमि पर वे आश्रित हैं। अभी हमारे माननीय प्रधानमंत्री जी ने जब वो महाबलीपुरम गए थे, तो समुद्र तट पर प्रातःकाल भ्रमण के लिए निकले। वो तो एक कवि हैं, कवि के मुख से स्वतः ही कविता प्रस्फुटित होने लगती है। तो वहां उन्होंने कविता की रचना की। मैं एक अंश उसमें से आपको पढ़कर के सुनाना चाहता हूं। और आप देखेंगे कि कितनी संस्कृत उसमें है। कविता का शीर्षक है 'हे सागर तुम्हें मेरा प्रणाम।' 'हे! सागर तुम्हें मेरा प्रणाम! तू धीर है, गंभीर है, जग को जीवन देता, नीला है नीर तेरा! यें अथाह विस्तार, यें विशालता तेरा यें रूप निराला। हे! सागर तुम्हें मेरा प्रणाम! सतह पर चलता यें कोलाहल, यें उत्पाद, कभी ऊपर तो कभी नीचे, गरजती लहरों का प्रताप, यें तुम्हारा दर्द है, आक्रोश है या फिर संताप, तुम न होते विचलित न आशंकित, न भयभीत क्योंकि तुममें है गरहाई! हे! सागर! तुम्हें मेरा प्रणाम!' क्या सुन्दर संस्कृत है। क्या संस्कृत शब्द का प्रयोग है। और भाषा में कितनी गंभीरता है। भावों में भी। 'शक्ति का अपार भंडार समेटे, असीमित ऊर्जा स्वयं में लपेटे फिर भी अपनी मयादाओं को बांधे तुम कभी न अपनी सीमाएं लांघे! हर पल बड़प्पन का बोध दिलाते। हे! सागर तुम्हें मेरा प्रणाम! तू शिक्षादाता, तू दीक्षादाता तेरी लहरों में जीवन का संदेश समाता। न वाह की चाह न पनाह की आस बेपरवाह सा यें प्रवास। हे! सागर तुम्हें मेरा प्रणाम! चलते-चलाते जीवन संवारती, लहरों की दौड़ तेरी। न रुकती, न थकती, चरैवेति, चरैवेति, चरैवेति का मंत्र सुनाती। निरंतर। सर्वत्र! यें यात्रा अनवरत यें संदेश अनवरत। हे! सागर! तुम्हें मेरा प्रणाम!' कितनी संस्कृत। 'लहरों में उभरती नई लहरें। विलय में भी उदय, जनम-मरण का क्रम है अनूठा, ये मिटती-मिटाती, तुम में समाती, पुंनर्जन्म का अहसास करातीं। हे! सागर तुम्हें मेरा प्रणाम!' अद्भुद कविता है। भावों से निकली हुई है। अन्तःस्थल से निकली हुई।

एंकर-आपने भी तो बहुत कुछ लिखा है। संस्कृत की कोई अच्छी कविता इस समय आपको।

शास्त्री जी-हंसते हुए-मैंने तो अपना लेखन कार्य जब में अभी कोई ग्यारह वर्ष का था तभी प्रारम्भ कर दिया था। साढ़े ग्यारह वर्ष की अवस्था में मेरी पहली कविता प्रकाशित हो चुकी थी। तब उन दिनों जयपुर से एक संस्कृत पत्रिका निकलती थी। 'संस्कृत रत्नाकर'नाम की थी उसके यशस्वी सम्पादक थे महामहोपाध्याय भट्ट मथुरानाथ शास्त्री। उन्होंने सम्पादकीय टिप्पणी में कविता के शीर्षक के नीचे लिखा यह कविता एक साढ़े ग्यारह या बारह वर्ष के बालक ने लिखी है। और उस पत्रिका में कविता का स्थान पा जाना बहुत बड़ी बात थी। उस अवस्था में, इतनी कम उम्र में भी मैंने एक पद्य लिखा। जो पद्य की रचना की, तो वो मत्तमयूर छन्द में थी। और मत्तमूयरों का वर्णन मैंने किया उसमें। मैं सुनाता हूं आपको। **रम्य रम्य सब प्रबदम काममू अटन्तू मननद्धवान विक्क्ष पयोदान दिव्ययान नर्तम नर्तम चारू कलाहपाह मुदमाहपा.........' (संस्कृत श्लोक 21.20 से 21.36 तक सीडी टाइम)** मत्त मयूर छन्द है। और इसमें मत्त मयूरों का वर्णन भी है। इसमें एक अलंकार है जिसे मुद्रालंकार कहा जाता है। जब में थाईलैंड में गया तो मैंने एक लघु काव्य की रचना की थी। प्रसंग यह है कि मैं एक दिन वहां नेशनल लाइब्रेरी में गया। तो वहां जो स्क्रीप्ट डिविजन के हैड थे। मुझे अभी भी उनका नाम याद है। (...दीपयन सोमी)। तो मैंने उनसे कहा कि आपके यहां ग्रन्थ संग्रह में कोई थाई देश पर कोई ग्रन्थ है। चाहे वो मुद्रित रूप में या पाण्डुलिपि

रूप में। तब उन्होंने कहा कि नहीं, हमारे यहां नहीं है। तब उन्होंने कुछ मुस्कराकर कहा। वाई डोंट सूड राइट वन। मैं उनसे मिलकर के घर वापस आया तो मैंने उसी दिन मैंने पांच पद्यों की रचना की। और दूसरे दिन कक्षा थी। थाईदेश में मैंने वहां की महाराजकुमारी को पढ़ाया। तो वहां कि यह स्थिति है कि दो घंटे तक कक्षा चलती है। नौ से ग्यारह, ग्यारह से एक। इस तरह से। हमारे यहां की तरह पीरियड नहीं हैं वो पैंतालीस मिनट का, पचास मिनट का। अब दो घंटे तक लगातार कक्षा चलेगी तो निश्चित ही है पढ़ाने वाला थकेगा नहीं थकेगा। लेकिन विद्यार्थी अवश्य थक जाएगा। उसको अपने विषय को भी समझना है। भाषा को भी समझना है। तो जब कक्षा समाप्त हुई तो मैंने महाराजकुमारी से कहा 'यदि आप थकी न हों, मैंने आपके देश पर पांच पद्यों की रचना की है। आपको सुनाना चाहता हूं। कहा आप सुनाइए। मैंने उसमें से कुछ पद्य सुनाए उनको। तो उनमें से एक-दो यहां भी सुनाता हूं। पहला ही पद उसका इस तरह का है। **'आग्नेय भूमण्डल मध्यवर्ती परम समृद्धेय परम.....' (संस्कृत श्लोक 23.35 से 23.46 तक सीडी टाइम)** तो आग्नेय शब्द का मैंने प्रयोग किया है यहां पर। तो आग्नेय दक्षिण-पूर्व के लिए है। वहां पर जो है आखनेय शब्द चलता है। दक्षिण-पूर्व एशिया तो हमारे यहां है। यदि आपको वहां पर कहना हो कि साउथ स्टेट एशिया तो थाई भाषा में कहेंगे 'आशिया आंखनेय'। आशिया एशिया के लिए है। आंखनेय आग्नेय शब्द है। यहां आग्नेय शब्द का प्रयोग करें तो कोई समझेगा ही नहीं। दिमाग से ऊपर निकल जाएगा। दिशावाची जितने भी शब्द हैं वहां वो सब संस्कृत के हैं। जैसे पूर्व दिशा है तो पुरवाहे, पश्चिम है तो प्रतीम, दक्षिण है थकसीन, उत्तर है तो उदौन। इसी तरह से दिग्न्तराल हैं उनके लिए भी वहां संस्कृत का ही शब्द हैं। दक्षिण पूर्व के लिए मैंने बताया अभी आग्नेय शब्द है। इसी तरह उत्तर पूर्व कहना, नॉर्थ ईस्ट कहना तो ईशान शब्द है। जो यहां प्रयुक्त होता है। तो ये स स्कृत का एक बड़ा विशाल व्यापक क्षेत्र है। संस्कृत ने प्रभावित किया है। देश-देशान्तों की भाषा को प्रभावित किया है। इतना ही नहीं मैं आपको एक बात और बताने जा रहा हूं कि, संस्कृत ने तो एक देश को अपना नाम ही दे दिया। नगरों की तो बात ही अलग है। वो तो अभी चर्चा करेंगे ही। एक देश को नाम दे दिया। जब भारतीय यहां से गए। तो वहां जाकर के एक देश में अपना एक शिविर बना लिया। एक कैंप बनाया। वहां रहने लगे। और बाद में उस देश का नाम ही शिविर पड़ गया। 'साईबेरिया'। साईबेरिया विशुद्ध संस्कृत शब्द है। शिबिर, शिविर है।

एंकर-आपने रामायण भी लिखी है। आप साउथ ईस्ट एशिया गए हैं। तो किस तरीके से हमारी संस्कृति ने और देशों को प्रभावित किया है?

शास्त्री जी-थाईदेश में मैंने बहुत वर्ष बिताए। वहां रहते-रहते मैं आसपास के देशों में भी गया। वो थाई देश में मैंने जो संस्कृत बीलक शब्दावलि को साक्षात किया। वो उस समय अभिभूत हो गया। और मेरे जीवन का एक लक्ष्य बन गया। दक्षिण-पूर्वी एशिया संस्कृत मूलक शब्दावलि। एक विशाल ग्रन्थ की मैंने रचना की है। लगभग सात सौ बीस पृष्ठ का ए फोर साइज का वो ग्रन्थ है। यानी **'संस्कृत पेस वर्ल्ड.....साउथ ईस्ट एशिया'**। चकित हो जाता है व्यक्ति देखकर वहां कैसे संस्कृत भाषा समाई हुई है। भारतीय संस्कृति समाई हुई है। एक संस्मरण यहां प्रस्तुत करना चाहता हूं। जब मैं वहां पहुंचा ही पहुंचा था। तो वहां के राज्य परिवार की उन्हें भी वहां राजकुमारी-प्रिंसेज ही कहा जाता है। एक दिन उन्होंने एक संध्या के लिए निमंत्रित किया। जलपान आदि के लिए। तो जब जलपान का कार्यक्रम समाप्त हो गया तो प्रोसर कम लैट मी शो यू माई प्लैस। तो वो प्लेस मुझे दिखाने के लिए ले गईं। वो एक दीवार पर कोई लिपि अंकित थी। मैंने कहा रॉयल हैने वॉट इज दिस। तो कहने लगीं मुझे पता नहीं क्या है ये बहुत समय से है यी। इस्डकाईव है क्या है। तब मैंने थाईलैंड की प्राचीन लिपियों को सीखना प्रारम्भ किया। तो मैंने पढ़ने का प्रयास किया। तो एक नवशिक्षित व्यक्ति सी एक-एक अक्षर को पहले पढ़ता। फिर किसी शब्द तक पहुंच रहा है। तो जब मैंने पढ़ा तो

उसमें लिखा हुआ था 'ओम सिद्धम'। तो मैंने कहा ये शुद्ध संस्कृत है। पाली नहीं है।
एंकर-तो वहां लिपि डिफरेंस थी। लेकिन जो शब्द था वो संस्कृत का था।
शास्त्री जी-यहां भारत में भी विभिन्न लिपियों का संस्कृत के लेखन में प्रयोग होता रहा है। तेलगु लिपि में भी संस्कृत लिखी जाती है, बंगाल में बंगला लिपि में संस्कृत लिखी जाती है, उड़ीया में उड़ीया लिपि में संस्कृत लिखी जाती है। क्योंकि वो तो लिपि है। भाषा तो अलग है। लेकिन बीस के बाद मैं फिर गया वहां। मैंने उसका इम्प्रेसन लिया। वो एक संस्कृत का अभिलेख निकला। बाद में उसको पढ़ा। बाद में उसका संस्करण सम्पादन करके प्रकाशित भी किया। तब मेरे मन में यह बात आई। मैंने कहा कि यदि बैकॉक जैसे नगर में जिसका बहुत पुराना इतिहास नहीं है। उसमें यदि संस्कृत का एक अभिलेख मिल सकता है। तो सम्पूर्ण देश में कितने ही अभिलेख होंगे। तो मैं निकल पड़ा उस यात्रा पर।
एंकर-तो जो संस्कृत वहां पर गई। तो वह भारत से गई। किस तरीके से या क्या माध्यम था उसका?
शास्त्री जी-भारत से गई। भारत से ही लोग, यहां से अपने देश से ही बाहर गए। वहां जाकर के उन्होंने अपना धर्म, अपनी संस्कृति, अपनी सभ्यता सबका प्रचार किया। और वहां के देशों ने उसे पूरी तरह अपना लिया। हम लोग कहते है जो हमारे संस्कृत के शब्द हैं, वो अब थाई शब्द हैं, कंबोडियन शब्द हैं, अब वो लाओ शब्द हैं। उनकी भाषा के अभिन्न अंग हैं वो। वहीं स्थिति थी। फिर मैंने कहा कि एक बौद्धिक यात्रा पर निकले पड़ा। उसके हर हिस्से में गया। गांवों में गया, देहातों में गया। जहां मुझे पता चलता कि यहां कोई इसक्रिप्सन है। फिर मैं उसे पढ़ता। यदि वो संस्कृत में होता तो उसकी प्रतिलिपि बना लेता। और करते करते मेरे पास बहुत बड़ा संग्रह थाई देश के संस्कृत अभिलेखों का अब मैंने उसे बाद में पुस्तक के रूप में प्रकाशित किया। **'संस्कृत इंसक्रिप्सन ऑफ थाईलैंड'।**
एंकर-तो कितने पुराने हैं ये?
शास्त्री जी-बहुत पुराने हैं ये। और इतने सुन्दर ललित संस्कृत में लिखे हुए हैं आनन्द आ जाता है। एक अभिलेख का मंगलाचरण पद्य मैं आपको सुनाता हूं। 'नमः शिवाय: **तस्तु शिवाय: योयम, नमः शिवाय: तस्तु शिवाय योयम शंके शशांका सूर्य नेत्र उष्णत्व, शीतत्व समत्व शुशीव शिषे विभक्तः बुध जन्यो जातामु।' (30.6)** इसमें यह कहा गया है। '**नमः शिवाय: तस्तु शिवाय: योयम शंके शशांका सूर्य नेत्र**.' इसमें उत्प्रेक्षा कवि जो है कल्पना करता है कि, भगवान ने, शिव ने अपने सिर पर गंगा को क्यों धारण किया? तो कहा कि, भगवान के तो तीन नेत्र हैं। शशांक, अनल और सूर्य। ये तीन नेत्र एक-एक का प्रतिनिधित्व करते हैं। एक जो है वह शशांक चन्द्रमा का प्रतिनिधित्व करता है। दूसरा जो बीच वाला है, वो अनल अग्नि का प्रतिनिधित्व करता है,और जो तीसरा है, वो सूर्य का प्रतिनिधित्व करता है। अच्छा इनमे से दो जो हैं,वो तो उष्ण हैं,घर में यूँ कहिए एक अनल और एक अग्नि और एक सूर्य और एक होगा शशांक,तो वो शीतल है। तो दोनों में संतुलन नहीं रहा,तो कदाचित संतुलन स्थापित करने के लिए भगवान ने गंगा को अपने सिर पर धारण किया। **उष्णत्व शीतत्व समपत्वं इफ्सह्** उसकी इच्छा से है।
एंकर-बहुत सुंदर है,इतना-इतनी खूबसूरती से उन्होंने उसका कारण बताया,और बहुत ही।
शास्त्री जी-और भी श्लोक है,ये थाई देश के एक संस्कृत अभिलेख का है,भारत का नहीं है।
एंकर-तो ये मतलब भारतीय संस्कृति का पूरा-पूरा प्रभाव जो है,वो थाईलैंड में है।
शास्त्री जी-थाईलैंड में अभी कम्बोडियां में।
एंकर-कम्बोडियां में कम्बोडियां में भी काफ़ी शिलालेख काफ़ी।

शास्त्री जी-बहुत हैं बहुत हैं।

एंकर-काफी सारी रॉक।

शास्त्री जी-बहुत है, बहुत है,इस तरह से लाओस में लाओस में, एक तो शब्दावली में भी है, बहुत से संस्कृत के शब्द हैं,थाई देश में भी देखिए, ये सारे जितने भी देश है, प्रचुर मात्रा में संस्कृत की शब्दावली है। जब मैंने वहां पर थाई धरा पर पांव रखा तो, आधी रात का समय था, जब हमारी फ्लाइट पहुंची, वो वहां एक व्यक्ति भारतीय दूतावास का आया मेरे पास, आकर के मुझे एक एनवलप दे गया, तो उसमें उस होटल का नाम लिखा, बाकायदा जिसमें मेरी व्यवस्था की गई थी, रहने की, और कुछ थाई करेंसी भी थी, अच्छा जब हम होटल पर पहुंचे तो, वहां पर रोमन केरेक्टर्स में लिखा हुआथा, एस ए के ओ एल, सकोल, सकला, मैंने कहा ये सकल शब्द संस्कृत का है।

एंकर-संस्कृत का है, सकल मीन्स सम्पूर्ण।

शास्त्री जी-वो मेरा प्रथम परिचय था, थाई भाषा में।

एंकर-संस्कृत से।

शास्त्री जी-संस्कृत का, और वहां से फिर तो मैं काम करने लग गया, तो मेरे जीवन का एक अध्ययन का विषय बन गया, पहले तो थाई देश के संस्कृत पुरे शब्दावली और फिर सम्पूर्ण दक्षिण पूर्व एशिया के भाषाओं की शब्दावली मैंने वर्षो परिश्रम किया इसमें।

एंकर-आपने रामायण पर भी बहुत कुछ लिखा है, तो रामायण का क्या प्रभाव है?

शास्त्री जी-हां रामायण पर भी,रामायण तो आजकल मेरा जो एक प्रोजेक्ट चल रहा है, वो प्रोजेक्ट इसी पर है, रामायण इन साउथ एशियाँ, वो अनेक भागों में प्रकाशित होगा, सात भागों में होगा।

एंकर-तो जो रामायण है,वो मूलरूप से जो भारत में रामायण लिखी।

शास्त्री जी-उससे बहुत भिन्न है।

एंकर-उससे बहुत भिन्न है, बहुत भिन्न है, नहीं नहीं मूल जहाँ तक ये समझते है?

एंकर-तो उसमें वो भिन्नता का कारण क्या है? मतलब।

शास्त्री जी-देखिए, जो एक द कर्नल ऑफ़स्टोरी हम कह सकते है, वो तो वही है,जो भारत में है, उसके साथ कितने आख्यान, उपाख्यान, उसके साथ आकर सम्मिलित हो जाते है।

एंकर-तो आख्यान,उपाख्यान उनके अपने देश के।

शास्त्री जी-ये बहुत है,वो उनके भी मूल जो है, मैंने वहां पर भारत में ही तरास किए है।

एंकर-अच्छा उसके वो भारत में ही है।

शास्त्री जी-जो विद्वान समझते है, यही है कि ये शायद स्थानीय लोगो की देन है।

मैंने उनके मूल को अपने विस्तृत अध्ययन के द्वारा जो है,वो भारत में तलाश कर लिया, अधिकांश को तलाश कर लिया।

एंकर-तो वो जो आख्यान उसमें जोड़े गए है, उसका जो मूल है,वो भारत से।

शास्त्री जी-भारत से ही मैंने तलाश किया, जिसको आज तक किसी ने किया,नहीं ये पहली बार मैंने काम किया है।

एंकर-उसका जो मूल उसकी उसमें जो स्टोरी है, वो हमारे लोक कथाओ में भी है, जो जैन और बौद्ध ग्रंथो में भी

मिलते है।

शास्त्री जी-उन सबकी धाराए आकर के जो है, इस तरह राम कथा में सम्मिलित हो गई, उसका एक बड़ा विशाल और व्यापक स्वरूप बन गया।

एंकर-तो इस तरीके से वहां पर रामायण का रूप जो है वो, और भी ज्यादा विस्तृत और विशाल बन गया।

शास्त्री जी-विशाल हो गया, एक दिन की बात है,कि मे कही जा रहा था रास्ते में, तो दो थाई आपस में बात कर रहे थे, तो वहां फुकेत नाम का स्थान है, वो भी विशेष संस्कृत का ही शब्द है। वो फुकेत बहुत लोग जाते है,वहां पर्यटकों के आकर्षण का केंद्र है, वो तो फुकेत क्या है? ये भू क्षेत्र वहां भ को फ की तरह से उच्चारण करते है, केत क्षेत्र भू क्षेत्र आइलैंड, तो ये देखिए, ये जब रहस्य सामने आता है, तो एक इतना उल्लास मन में होता है,और अपने उन भारतीय मनीषियों का हम स्मरण करते है, और शत शत नमन करते है कि, जिन्होंने उन बीते युगों में जबकि जाना वहां बहुत कठिन था, अपने देश से गए, वहां बसे, और वहां अपनी संस्कृति का प्रचार प्रसार सर्वत्र कर दिया। कम्बोडिया के विषय में तो सुप्रसिद्ध है कि, कौण्डिन्य नाम का एक ब्राह्मण था, वो भारत गया, वह अकेले ही चल पड़ा तो, उसको कहा जाता है, दंत कथा है कि उसको एक स्वप्न आया कि तुने विदेश में जाना है,और और वहां रहना है,तो वो अपने देश से चल पड़ा, कम्बोडिया पहुंचे, कम्बोडिया पहुँच गया तो वहां।

एंकर-कम्बोडिया में उनका सुनियोजित कार्यक्रम था,या वो कम्बोडिया पहुंच गए अपने आप?

शास्त्री जी-अपने आप पहुंच गया, कोई किसी की सहायता नहीं, वो अकेला ब्राह्मण निकल पड़ा वहां से, राजकुमारी से उसका विवाह हुआ, विवाह होने पर जो है वो, एक राजा बन गया, और वहां पर उसने भारतीय संस्कृति का प्रचार कर दिया,और उसके माध्यम से, पर आस पास के देशों में भारतीय संस्कृति का प्रचार प्रसार हुआ।

एंकर-बुद्धिजम, जैनिजम की उसकी भी जो स्कप्चर है,वो संस्कृत में लिखे गए है, वो उस तरीके से तिब्बत में,और भी चाइना में,अभी बहुत सारे देशों में संस्कृत का प्रचार, वहां पर भी हुआ है। यहां से वहां गए है, वहां भी संस्कृत हमें देखने के लिए मिलती है, सुनने को मिलती है, इसके साथ में यूरोप में के भी जो कुछ देश है, उनके स्कूलों में संस्कृत पढ़ाई जाती है, आज भी पढ़ाई जाती है,और उसके पीछे कारण ये बताया जाता है कि, अगर स्टूडेंट संस्कृत का अध्ययन करेंगे, तो उनके अध्यन से उनमे सिखने की क्षमता जो है,वो बढ़ जाएगी,शायद उसमें जो संस्कृत की जो ध्वनि होती है, साउंड होती है,उसकी फोनेटिक, या उसका जो ग्रामर होता है, वो इतना साउंड है, इतना परफेक्ट है, और उसका जो सिस्टम है,वो इतना यूनिक है कि, वो आपको एक बहुत सॉलिड बेस देता है कि, आप और भाषाएं भी और जल्दी सिख सकते है, इस तरह संस्कृत वहां पर काफी अभी भी। शास्त्री जी-नहीं संस्कृत वहां बहुत है, जर्मनी में बहुत काम हुआ है, संस्कृत में, और भी देशों में बहुत लोगों ने विद्वानों ने अपना जीवन लगा दिया।

एंकर-आपने भी कुछ यूनिवर्सिटी में वहां विजिट किया है।

शास्त्री जी-मैंने पढ़ाया है मैंने एक तो बेल्जियम में मैंने पढ़ाया था। वहां पर कैथोलिक यूनिवर्सिटी लिव इन में,ब्रसल के पास ही है तो,वहां मैंने एक वर्ष बिताया, और एक वर्ष मैं टीबिन जर्मनी में था, तो वहां के लोगों में मैंने बहुत संस्कृत के प्रति जागरूकता देखि, और एक उत्सुकता भी है लोगों में, वहां का जो पुस्तकालय है, वो बहुत विशाल है, ट्रोबिन विश्वविद्यालय का बड़ा समृद्ध पुस्तकालय है।

एंकर-उसमें संस्कृत की पुस्तकें बहुत हैं।

शास्त्री जी-बहुत है भारी संख्या में है।

एंकर-भारी संख्या में है लोग पढ़ते है।

शास्त्री जी-वहां के जो गवर्नर है,उन्होंने बहुत काम किया है, एक शब्दकोष,जो उन्होंने लिखा है,संकलन किया, वो वृतबुक कहलाता है। उसमें संस्कृत-जर्मन डिक्शनरी है,दो विद्वान थे,जर्मनी के बॉटलिंग और रोर्थ, उन्होंने वो कोष का निर्माण किया था, विदेश में संकलित किये जाने वाला सस्कृत का पहला कोष था, वो फिर उसके बाद विलियम्स ने बहुत बड़ा काम किया,वैदिक व्याकरण लिखा है मैकडोनल ने, जिसका मैंने हिंदी में अनुवाद किया,और उस अनुवाद के सन्दर्भ में मुझे ग्रीक भाषा भी सीखनी पड़ी। क्योंकि पेराग्राफ ऑफ द पेराग्राफ, वो मैकडोनल ने ग्रीक भाषा में ग्रीक लिपि में लिखी थी, मैं तब दिल्ली विश्वविधालय में संस्कृत विभाग के अध्यक्ष था, उन्ही दिनों में एक स्पेन से विद्वान आए,यहां स्पेनिश भाषा पढ़ाने के लिए,एंटोनी उनका नाम था, तो उनकी संस्कृत में रूचि थी, तो वो मेरे पास आए मिलने के लिए, कहने लगे कि, मैं संस्कृत पढ़ना चाहता हूँ, तो मैंने उनसे कहा की मेरी एक शर्त है,मैंने कहा की आप मुझे ग्रीक सीखा दीजिए, ग्रीक पढ़ा दीजिए, वो वहां पर जो क्लासिकल लैंग्वेज का सीखना अनिवार्य है, जो भी कोई भाषा का अध्यापक है, क्योंकि हमारे यहाँ है, जो तीन तरीके है भाषा को सिखने के लिए, ज्ञान प्राप्त करने के लिए, तो मैंने कहा, गुरु सुसया विधा, गुरु की सेवा से जो है, विद्या प्राप्ति की जा सकती है, गुरु सुसया विद्या पुष्कले न धने वासवा, प्रचुर धन देकर के जैसे राजा महाराजा जो थे, अपने यहाँ पंडितों को अपने यहां रख लेते थे, और वो उनके बच्चों को पढ़ाते थे, द्रोणाचार्य इत्यादि का उदाहरण है, तलेन ना धनेन न वा अथवा विद्या, विद्या के बदले में विद्या।

एंकर-तो आपने तीसरा तरीका जो है।

शास्त्री जी-आपको एक भाषा आती है,मुझे दूसरी आती है, मुझे आप सीखा दीजिए वो, उनको इस तरह से मैंने उनसे ग्रीक सीखी और ग्रीक सीखी और सिखने के बाद मैंने वो, जो पेराग्राफ उन्होंने ग्रीक में लिखे थे, और ग्रीक लिपि में लिखे थे, उनका भी मैंने हिंदी में अनुवाद कर दिया।

एंकर-बहुत सुंदर।

शास्त्री जी-734 पृष्ठ का वो अनुवाद का ग्रंथ है,वो मेरा कितना विशाल कार्य मैकडोनल ने किया था, मैं तो उस सन्दर्भ मैं कह रहा हूँ कि,पश्चिम के लोगों ने कितना काम किया,अध्ययन किया, तो वहां संस्कृत के प्रति बहुत लगन है, और वहां की भाषाओं में यूरोप के भाषाओं में बहुत से शब्द इस तरह के है,जो कि संस्कृत से मिलते जुलते है। तो उन्हीं को लक्ष्य में रखकर के वहां के लोगों ने कहा कि, ये संस्कृत एक और जो ये यूरोपियन अन्य भाषा है,एक ही परिवार की भाषा है,इसलिए उन्होंने इंडो यूरोपियन फैमली ऑफ लेंग्वेज इसकी कल्पना की,और तब एक नया विज्ञान,एक नई साइंस उदयन हुआ,वो था,द साइंस ऑफकॉम्पेरेबिलिटी ग्राइस्टिक। राजा भोज के बारे में प्रसिद्ध है कि,जो भी पद्य की रचना करके उनके पास जाता था,उनको पसंद आता था,तो वो एक एक लाख रुपया, उसको एक एक अक्षर पर देते थे,तो उसमें चार ब्राह्मण एकत्रित हुए,बेचारे बहुत दरिद्र थे,खाने पीने को भी नहीं था,इसमें भोज प्रबंध नाम का एक काव्य है,उसमें एक कथाएं, इस तरह की बहुत सी कथाएं हैं,इस तरह की वहां भी है,तो बेचारों ने सोचा की अब तो हम बहुत ही दरिद्र हो गए है,भूखो मर रहे हैं,अब राजा जो पद्य रचना करता है,उसी को ही पुरुस्कृत करते है,लेते है, तो हमें भी कोई पद्य रचना करनी चाहिए। अब लगे बिचारे, वो वैदिक पंडित थे। वेद के वो विद्वान थे,तो उन्होंने कहा,अच्छा जी ठीक है। उनमें चार में से एक ने एक उसका जो प्राद्य है,पाद्य का तो,उसको उसकी रचना की थी था, भोजनं देहि राजेन्द्र आप भोजन दीजिए।

एंकर-आप मुझे भोजन दीजिए राजा से।

शास्त्री जी-आप मुझे भोजन दीजिए, सजेंद्र राजा से तो, दूसरे ने कहा घृत सूप समन्वितम् जिसमें घी भी हो, और

दाल भी हो। अब तीसरा चरण किसी को सुपुर्द नहीं हो रहा था, सूझ नहीं रहा था, कि क्या बने? सोचा की अब क्या किया जाए? श्लोक तो पूरा करना है, तभी तो कुछ दान दक्षिणा मिलेगी,तो फिर कहा कि, अपने से कुछ बन नहीं रहा है, तो कालिदास के पास जाते है, वो हमारी मदद कर देंगे, तो आधा हमने बना दिया, आधा वो बनाकर दे देंगे, हम कह देंगे, कि पूरा श्लोक सुना देंगे जाकर, कालिदास के पास गए, महाकवि आप हमारी सहायता कीजिए, तो कालिदास ने कहा आपने क्या लिखा साहब? हमने ये लिखा, भोजनं देहि राजेन्द्र, घृत, सूप, समन्वितम्, झट से कालिदास ने कहा, माहिषं, शरद, चंद्र, चंद्रिका, धवलं, भैंस के दूध का दही, जो शरद कालीन चन्द्रमा की चांदनी के समान धवल बनाता है। श्वेत वर्ण का, माहिषं, शरद, चंद्र, चंद्रिका, धवलं। पंडित प्रसन्न हो गए, श्लोक पूरा हुआ, महाराज के पास पहुंच गए तो, महाराज से कहने लगे महाराज हमने एक श्लोक की रचना की है, तो उन्होंने कहा कि, सुनाइए तो सब सुना दिया, प्रसन्न हो गए महाराज, जितनी दक्षिणा देनी थी दे दी उन्होंने, कुछ समय के पश्चात वो पंडित तो चले गए थे, तो कालिदास जी आए उनके पास, महाराज के पास तो, महाराज ने कहा, बहुत अच्छा किया आपने उन दरिद्र ब्राह्मण की सहायता करि।

एंकर-अच्छा वो समझ गए।

शास्त्री जी-महाराज आपको कैसे पता चला? वो जो पद्य का जो उत्तरआर्थ है,उसने बता दिया ये जो था, भोजनं, देहि, राजेन्द्र, घृत, सूप, समन्वितम्, माहिषं, शरद, चंद्र, चंद्रिका, धवलं, दधि। कालिदास की रचना है। उससे बाणभट्ट के साथ भी यही हुआ, बाणभट्ट की कादम्बरी अपूर्ण रह गई। अब जब उनका अंतिम समय जब आने लगा तो, उनके दो पुत्र थे, एक बहिया करण था, एक वो साहित्यिक था,दोनों को उन्होंने अपने पास बुलाया, कहने लगे, सामने एक पेड़ है, दिखाई दे रहा है ना, बिल्कुल सूखा हुआ है तो, इसका वर्णन करो तो, पहले बहिया करण को कहा, बहिया करण ने कहा **सुष्को वृक्षक्षते तिष्ठातयागृहे (45.18)** मेरे सामने एक सूखा पेड़ खड़ा है, तब जो साहित्यिक था, उसकी कहने लगे, भूषणभट्ट उसका नाम था, तुम बताओ, उसका तुम वर्णन करो, **नीरस तरुर विलसति पुरुत: (45.31)** महसूस कीजिएगा, नीरस शब्द का प्रयोग कर रहा है,जिसमें नीरस में भी रस शब्द है,**नीरस तरुर विलसति पुरुत: (45.40-42)** कहा वो ठीक है,मेरी अपूर्ण कादम्बरी को तुम ही पूर्ण करोगे।

एंकर-हां, क्योंकि वो उसमें भाव भाषा में सरसता है वो?

शास्त्री जी-हां, जो भाषा में सरसता है,सरसता, सरस, सरस ही रहता है, देखिए ये एक हम कहते है, कि साक्क्षरों विपरीत तस्ये ज राक्षसों भवति ध्रुवम्, जो साक्षर है, यदि ये विपरीत हो जाए, जिसमें ये दूसरा भाव है, यदि साक्षर व्यक्ति जो पढ़ा लिखा व्यक्ति है, यदि उसकी बुद्धि विपरीत हो जाए,तो क्या हो सकता है? वो राक्षस बन जाता है।

एंकर-वो राक्षस बन जाता है।

शास्त्री जी-वो सब तो थे,लेकिन साक्क्षरों विपरीत तस्ये, **राक्षसों भवते ध्रुवम् सरसो,विपरीत तस्ये सरसो भवं** जो सरस को आप विपरीत करके पढ़िए, जैसे साक्षर को उल्टा करके पढ़िए, साक्षर और राक्षस, सरस को विपरीत करके पढ़िए, पलट के पढ़िए, सरस और फिर सरस।

एंकर-वैज्ञानिक रूप से भी संस्कृत एक बहुत ही परफेक्ट लेंग्वेज है, और एक बहुत ही आइडियल लेंग्वेज है, सुपर कंप्यूटर में भी जो है वो, संस्कृत के उपयोग की बात की जा रही है, और जो संस्कृत साहित्य है, वो भी बौद्धिक रूप से, और सांस्कृतिक रूप से,बहुत रीच है। और इसका प्रभाव जो है,वो सारे विश्व में पड़ा है तो,क्या विश्व की एकता के लिए संस्कृत एक सूत्र धार नहीं हो सकते?

शास्त्री जी-संस्कृत के माध्यम से हम विश्व में एकता का प्रयास कर सकते है, क्योंकि भाषा एक बहुत बड़ा प्रबल साधन है, और जब हम देखते है कि, हमारे ही शब्दों का प्रयोग हो रहा है वहां तो, कितनी निकटता आ जाती है, तो ये है। मैं एक बार कुआलालम्पुर जा रहा था बाई ट्रैन, मैंने यात्रा की थी, तो उसमें जाने से पूर्व मेरे एक मित्र ने कहा कि, आप जा रहे है वहां अपरिचित देश है, तो मेरे एक मित्र वहां है, यदि कोई आवश्यकता पड़े, सहायता यदि आपको लेनी पड़े तो, मैं उसका नाम और पता एक कागज पर लिखकर आपको दे देता हूँ, तो आप उससे सम्पर्क कर लीजिएगा। मैं जिस ट्रैन में यात्रा कर रहा था तो,उस ट्रैन के कंडक्टर को मैंने वो कागज दिखाया, उस पर लिखा था, उत्तर अलोंग, उस व्यक्ति का नाम, और उत्तर अलोंग तो, अब मैं ये जानना चाहता था कि, उत्तर अलोंग जो है, वो किसी लोकेल्टी का नाम है, या किसी सड़क का नाम है, ये क्या है? तो मैंने उससे कहा कि, उत्तर अलोंम क्या है? तो देखकर कहा उत्तर इज मलेशियन वर्ड विथ मीन नॉद।

एंकर-अच्छा इतना हम वहां पर।

शास्त्री जी-उत्तर इज मुझे बता रहा है,ये समझकर के कि शायद उत्तर शब्द को मैं नहीं जानता हूंगा, उत्तर इज ए मलेशियन वर्ड (48.36 से 48.46)

एंकर-सर मिर्ज़ा इस्माइल ने कहा है कि, यदि इस देश की जनता का रोजमर्रा के जीवन से संस्कृत का तलाक हो जाएगा, तो लोगों के जीवन से रौशनी चली जाएगी, भारत में आज भी संस्कृत एक स्पोकन लेंग्वेज के रूप में इस्तेमाल नहीं की जा रही है क्या कारण है?

शास्त्री जी-देखिए हमें एक अवसर था,वो खो दिया,जब हमारा संविधान बन रहा था तो, उस समय ये बात आई थी कि, संस्कृत को वो राष्ट्र भाषा बना देनी चाहिए।

एंकर-राष्ट्र भाषा बना देनी चाहिए।

शास्त्री जी-तो उस समय अगर बना दिया गया होता तो,बहुत सारी जो समस्याएं बाद में पैदा हुई, वो नो पैदा होती, क्योंकि संस्कृत सभी को स्वीकार्य है,क्योंकि सभी में संस्कृत की शब्दावली,क्योंकि संस्कृत की यही तो विशेषता है।

एंकर-तो वो सबसे ज्यादा एक्सेप्टेबल सबसे ज्यादा होती है।

शास्त्री जी-वही तो शब्दों का प्रयोग कर रहे है।

एंकर-तो आज कल संस्कृत को थोड़ा सा मुश्किल माना जाता है तो,उसके सरलीकरण के उपर बात देखि जा रही है,सरल बनाया जाए,इसे तो इससे कुछ लोग ज्यादा।

शास्त्री जी-यह एक धारणा की बात है,ये लोग यानी जर्मन सिख सकते है,वो मुश्किल नहीं है, लेकिन हमारे यहां ये रूप है, भवति, भवता, भवन्ति, इत्यादि, वो उनको सीखना पड़ जाए तो, वो उनको कठिन लगता है, वहां पर त्रिंक, त्रिनकेश, त्रिनकन, वो उनको कठिन नहीं लगेंगा, वो उसको अपनाएंगे, वो ठीक है, सिख लेंगे, लेकिन संस्कृत की जब बात आती है तो ये कठिन है,ये सब बातें कहने लग जाते है।

एंकर-तो संस्कृत को सरल नहीं बनाया जाना चाहिए, जो उसका मूल रूप है, उसी में ही उसको एडजेस्ट

शास्त्री जी-नहीं सरल तो ठीक है, आप लेकिन सरल जहां तक हो सके, मेरा सुझाव है, पहले बच्चे को उन शब्दों से परिचित करवाना चाहिए,संस्कृत के जो की संस्कृत बोला करे, हमारे पिताजी एक परिहास में कहा करते थे कि, यदि हम ये कहे कि गाय जंगल में घास खा रही है, तो हम इस तरह से भी कह सकते है कि गऊ जंगलें घासन खादति। ये भी संस्कृत है, तो इसके लिए अब मैं पानी पिता हूँ, अहम् पानियम पिबामी, पानी ये शब्द है, तो बच्चा ये देखता है कि,

मैं तो अपने हिंदी में भी इस शब्द का प्रयोग कर रहा हूं, और यह ही संस्कृत है, पिबामी पीता हूं।

एंकर–कोई बहुत ज्यादा अंतर नहीं है।

शास्त्री जी–पहले उन शब्दों को पहले हमें वारि सिखाने लगते है,बच्चों को, क्योंकि वारि, वारिनि, वारिनि, वो शब्द अभी नहीं, जब कुछ और सिख जाए, प्रगति कर जाए, तो उसके बाद और अन्य शब्द भी, वो सीखे, फिर उनके रूप चढ़ाना भी सीखे, तो पहले वो अपने मातृभाषा में जो संस्कृत पूरक शब्द हैं, प्रयुक्त हो रहे है, उन शब्दों से पहले परिचय करवाना चाहिए, पहले उनके विभक्तियों के साथ उनका प्रयोग क्रिया पद के रूप में, उनका प्रयोग वो सिख जाएगा, इसी तरह से भाषा सीखी भी जा सकती है।

एंकर–संस्कृत को क्या हम भविष्य की भाषा के रूप में देखते है?

शास्त्री जी–मुझे लगता है कि, अभी भी देर नहीं है, जब हम लोगों में ये भावना जगेगी कि, हमने अपनी अस्मिता को पुनःजीवित करना है तो, हम संस्कृत को वो विशाल ज्ञान का भंडार है,वो संस्कृत में है, संस्कृत में क्या नहीं है? ज्ञान विज्ञान है, संस्कृत ये जो हमारे सारे ग्रंथ है, जो हमारे एस्ट्रोनॉमी के, एस्ट्रोलॉजी के, मेथेमेटिक्स के, फिजिकल साइंसेस के, एग्रीकल्चर साइंस के, ऊपर हमारे जो ग्रंथ है, कृषि शास्त्र है, कृषि पराशर है, और गार्डनिंग पर है, आर्किटेक्चर पर है, जब इतने बड़े-बड़े नगर होते थे। हमारे लाखो की संख्या में तो उनके लिए सारी व्यवस्था होती थी,पानी की भी सीवरेज की भी, तो सब वो व्यवस्था थी ना, तो ये सब हमारे ग्रंथ जो थे, तो उनके अध्ययन की आवश्यकता है, हमें अपने आपको तो पहचाने, विदेशों की और तो हम उन्मुख होते है, वहां का सब ज्ञान विज्ञान सीखते है, तो अपने पास तो भंडार पड़ा है, एरोनॉटिक्स पर 7 ग्रंथों का मैंने पता लगाया था, मैंने अपनी जो संस्कृत कमीशन की जो रिपोर्ट दी है तो, उसमें मैंने 7 ग्रंथों का उल्लेख किया है।

एंकर–प्र हमारे यहाँ तो पुष्पक विमान की बात उस समय होती थी।

शास्त्री जी–पुष्पक विमान तो था ही,उसके अतिरिक्त जो हमारे यहां वैमानिक शास्त्र द साइंस ऑफएरोनॉटिक्स पर ग्रंथ है, हम अपने आपको पहचाने। जैसे भगवान बुद्ध ने कहा था, हम संस्कृत से समाप्ति भी करेंगे, जब उनका अंतिम समय आने लगा तो उनके सब शिष्य उनके चारो और एकत्रित हो गए, और उनकी आँखे भरी हुई थीं, भगवान बुद्ध ने देखा, उनकी और देखा कि वो बहुत दुखी है, तब कहने लगे कि आप क्यों दुखी है? तो उनके एक शिष्य आंनद थे, जो उनके बहुत प्रिय शिष्य थे, तो उन्होंने कहा भगवान आप विदा ले रहे है, आप हमारे लिए दीपक थे, आपसे हमें प्रकाश मिलता था, अब आप जा रहे हैं, तब भगवान बुद्ध ने कहा, अतति पाहोतह अतति पाहोतह आत्म दीपा भवत। अपने लिए स्वयं दीपक बन जाइए, आपको बाहर से प्रकाश लेने की।

एंकर–आवश्यकता नहीं है, प्रकाश तो आपके भीतर है, आपके अंदर है, अपने आपको देखिए, अपने आपको पहचानिए।

शास्त्री जी–अपने आपको पहचानिए और यही उनके अंतिम शब्द थे।

एंकर–तो शास्त्री जी आपने हमें इतनी अच्छी आपसे हमारी बातचीत हुई, इतनी उपयोगी थी, इतनी नेरेसिंग थी,आप हमारे इस प्रोग्राम में आए, इसके लिए आपको बहुत बहुत धन्यवाद,

शास्त्री जी–मुझे भी बहुत अच्छा लगा

एंकर–वेदों में इस प्रकार के वाक्य मिलते है,जैसे मैंने मनुष्यों को कल्याणकारी वाणी दी संस्कृत में विश्व का कल्याण है, शांति है, सहयोग है, वसुधैव कुटुम्बकम की भावना है,संस्कृत एक विश्वव्यापी भाषा

भी है, दुनिया के साथ जुड़ाव के रूप में केवल संस्कृत ही है, जो एकता स्थापित कर सकती है,वह एकता का मंत्र है, मंत्र फॉर यूनिटीएक।

UserID: PADMA 202110716

Shsrst$ Chsndr5

Jnanpith Laureate

Mahamahopadhyaya Vidyavachaspati Vidyamartanda

Prof. Dr. Satya Vrat Shastri

Recipient of Padma Bhushan, Padma Shri & President of India Certificate of Honour
Honorary Professor, Special Centre for Sanskrit Studies
Jawaharlal Nehru University
Formerly Professor and Head, Department of Sanskrit
University of Delhi
Ex-Vice-Chancellor,
Shri Jagannath Sanskrit University, Puri (Orissa)

Res. : C-248, Defence Colony,
New Delhi - 110 024
E-mail : satyavratshastri@airtelmail.in
Website : satyavrat-shastri.net
Ph. : 24336644, 24336631
Mobile : 96501 17463

अभिनन्दनम्

सुप्रथितयशसां कविसहृदयानां डा० रमाकान्तशुक्लमहाभागानां हीरकजयन्त्यवसरे हीरकजयन्त्यभिनन्दनग्रन्थो हीरक-प्रसूनमिति नामधेयः प्रकाश्यत इति परमो मे प्रमोदः। 'अर्वाचीनसंस्कृत' पत्रिकामाध्यमेन नानादशकान्तेभिः समेधितं संस्कृतवाङ्मयम्। विरचितान्येभिर्नाना संस्कृतमहाकाव्यानि। गीतं च नैकशो मधुरकण्ठेन 'भाति मे भारतमि'ति काव्यं प्रवाहिता येन सहृदयहृदयेषु रसझरी। कविगोष्ठीष्वेषामुपस्थितिरुत्सव इव। यावज्जीवमेभिः समुपासिता भगवती वाग्देवी। संस्कृतजगति हीरकायमाणा इमे पुरुषायुषं लभन्तां शरदश्च हस्तावचेयमिति प्रार्थयेऽहं भगवन्तं शङ्करं लोकशङ्करम्।

सुरसरस्वतीसमाराधनैकव्रतः
सत्यव्रतः शास्त्री

नवरात्र चतुर्थी
१६.१०.२०१५

A glimpse is provided here of the life and works of the great personality going by the name of Satya Vrat Shastri who strides the India's literary scene like a giant. Described as a 'living legend in the field of Sanskrit' by the President of the Silpakorn University, Bangkok [at the time of the conferment of the Honorary Doctorate] he has taken up enrichment of knowledge as mission. Though a family man he is a recluse at heart, though cold to worldly objects he is warm in behaviour, though in ripe old age, he is like a youngman bubbling with enthusiasm. The pen he took up at the young age of eleven plus is moving with the same speed with which it did at that age producing newer and newer works. Writer of more than forty big volumes he is engaged now in producing multi-volume work on the Rāmāyaṇa in Southeast Asia.

There is no stagnation for him. He is to move on and on चरैवेति चरैवेति — How aptly he describes his life at the end of the second volume of his autobiography:

Strange are the ways of Destiny. When a son was born to Prof. Charu Deva Shastri seven years after the birth of his daughter, he wanted him to fashion him into a great Sanskrit grammarian like himself. Great grammarian the son did turn out but in addition to that he turned out to be a great poet in Sanskrit introducing new and hitherto not practised genres in the ancient literature, a cultural explorer visiting a country after country round the globe, interpreting old texts. His eventful life is an inspiration to the younger generation. The present is an attempt

आम्रपाली-एक परिचय

[illegible]त शास्त्री

डॉ. मिथिलेश कुमारी मिश्रा ने संस्कृत, हिन्दी और भोजपुरी इन तीनों भाषाओं में लिखा है। इन तीनों पर उनका समान अधिकार था। अनुवाद कार्य में भी उनकी बहुत दक्षता थी। इसका प्रत्यक्ष अनुभव मुझे है। उन्होंने मेरे 25 सर्गों के संस्कृत महाकाव्य श्रीरामकीर्तिमहाकाव्यम् का हिन्दी पद्यानुवाद किया। उस अनुवाद की लोकप्रियता इसी से सिद्ध है कि पूरा का पूरा उसका संस्करण समाप्त हो चुका है। संस्कृत में काव्य और गद्य लेखन के साथ-साथ उन्होंने नाट्यलेखन भी किया है। आम्रपाली नाम की उनकी एक सुप्रसिद्ध नाट्यकृति का परिचय यहाँ प्रस्तुत किया जा रहा है।

डॉ. मिथिलेश कुमारी मिश्रा की संस्कृत रचनाओं में एक है पाँच अङ्कों की नाट्यकृति आम्रपाली। इसमें लिच्छवि गणराज्य के एक श्रेष्ठी की अनिन्द्यसुन्दरी आम्रपाली नाम की कन्या का बौद्धधर्म में दीक्षित होने का वर्णन है। इसके पूर्व कथानक में कई तरह के मोड़ आते हैं जिन्होंने इसे आकर्षक एवं रुचिकर बना दिया है।

नाट्यकर्त्री ने इसे नाटिका की सञ्ज्ञा दी है जोकि सम्भवत: इसके लघु कलेवर के कारण ही है। नाटिका की परिभाषा के अनुसार इसमें चार अङ्क होने चाहियें-

नाटिका क्लृसवृत्ता स्यात् स्त्रीप्राया चतुरङ्किका।

नाटिका की कथावस्तु कल्पित होती है, क्लृप्तवृत्ता, स्त्री पात्रों की इसमें अधिकता रहती है, स्त्रीप्राया और चार अङ्क इसमें होते हैं चतुरङ्किका, प्रख्यात धीर-ललित राजा इसमें नायक होता है। लक्षण का यह अंश प्रस्तुत नाट्यकृति में चरितार्थ है। इसका नायक मगधवंश का सुप्रसिद्ध सम्राट् अजातशत्रु है। नायिका का स्वरूप काव्यशास्त्रीय लक्षण के अनुरूप नहीं है। उसके अनुसार उसे 'नृपवंशजा', राजवंश में उत्पन्न अर्थात् राजकुमारी होना चाहिए जो कि आम्रपाली नहीं है। वह नगर श्रेष्ठी ब्रह्मदत्त की पुत्री है। इसका समाधान इस प्रकार से किया जा सकता है कि लिच्छवि गणराज्य था, वहां गणों का मिला-जुला राज्य था। इस दृष्टि से नगर श्रेष्ठी भी शासक की कोटि में आ सकता था।

परन्तु नवानुरागा रूप लक्षणांश उसके नायिका होने को सन्देह में डाल देता है। नवानुरागा से आशय है उसका जो पहली बार किसी के प्रति आसक्त हो जोकि आम्रपाली नहीं है। पञ्चम अङ्क में उसका अजातशत्रु के पिता बिम्बिसार के साथ सम्बन्ध दर्शाया गया है। यह नाट्यकृति स्त्रीप्राया भी नहीं है। इसमें मात्र तीन स्त्री पात्र हैं-स्वयम् आम्रपाली और उसकी दो सखियां कञ्चना और

A glimpse is provided here of the life and works of the great personality going by the name Satya Vrat Shastri who strides the India's literary scene like a giant. Described as a 'living legend in the field of Sanskrit' by the President of the Silpakorn University, Bangkok [at the time of the conferment of the Honorary Doctorate] he has taken up enrichment of knowledge as mission. Though a family man he is a recluse at heart, though cold to worldly objects he is warm in behaviour, though in ripe old age, he is like a young man bubbling with enthusiasm. The pen he took up at the young age of eleven plus is moving with the same speed with which it did at that age producing newer and newer works. Writer of more than forty big volumes he is engaged now in producing multi-volume work on the Rāmāyaṇa in Southeast Asia.

There is no stagnation for him. He is to move on and on चरैवेति चरैवेति— How aptly he describes his life at the end of the second volume of his autobiography:

Strange are the ways of Destiny. When a son was born to Prof. Charu Deva Shastri seven years after the birth of his daughter, he wanted him to fashion him into a great [Sanskrit] grammarian like himself. Great grammarian the son did turn out, but in addition to that he turned out to be a great poet in Sanskrit introducing new hitherto not practised genres in the ancient literature, a cultural explorer visiting a country after country round the globe, interpreting old texts. His eventful life is an inspiration to the younger generation. The present is an attempt

to have a glimpse of it.

आम्रपाली-एक परिचय

[illegible]व्रत शास्त्री

डॉ. मिथिलेश कुमारी मिश्रा ने संस्कृत, हिन्दी और भोजपुरी इन तीनों भाषाओं में लिखा है। इन तीनों पर उनका समान अधिकार था। अनुवाद कार्य में भी उनकी बहुत दक्षता थी। इसका प्रत्यक्ष अनुभव मुझे है। उन्होंने मेरे 25 सर्गों के संस्कृत महाकाव्य श्रीरामकीर्तिमहाकाव्यम् का हिन्दी पद्यानुवाद किया। उस अनुवाद की लोकप्रियता इसी से सिद्ध है कि पूरा का पूरा उसका संस्करण समाप्त हो चुका है। संस्कृत में काव्य और गद्य लेखन के साथ-साथ उन्होंने नाट्यलेखन भी किया है। आम्रपाली नाम की उनकी एक सुप्रसिद्ध नाट्यकृति का परिचय यहाँ प्रस्तुत किया जा रहा है।

डॉ. मिथिलेश कुमारी मिश्रा की संस्कृत रचनाओं में एक है पाँच अङ्कों की नाट्यकृति आम्रपाली। इसमें लिच्छवि गणराज्य के एक श्रेष्ठी की अनिन्द्यसुन्दरी आम्रपाली नाम की कन्या का बौद्धधर्म में दीक्षित होने का वर्णन है। इसके पूर्व कथानक में कई तरह के मोड़ आते हैं जिन्होंने इसे आकर्षक एवं रुचिकर बना दिया है।

नाट्यकर्त्री ने इसे नाटिका की सञ्ज्ञा दी है जोकि सम्भवतः इसके लघु कलेवर के कारण ही है। नाटिका की परिभाषा के अनुसार इसमें चार अङ्क होने चाहियें-

नाटिका क्लृसवृत्ता स्यात् स्त्रीप्राया चतुरङ्किका।

नाटिका की कथावस्तु कल्पित होती है, क्लृप्तवृत्ता, स्त्री पात्रों की इसमें अधिकता रहती है, स्त्रीप्राया और चार अङ्क इसमें होते हैं चतुरङ्किका, प्रख्यात धीर-ललित राजा इसमें नायक होता है। लक्षण का यह अंश प्रस्तुत नाट्यकृति में चरितार्थ है। इसका नायक मगधवंश का सुप्रसिद्ध सम्राट् अजातशत्रु है। नायिका का स्वरूप काव्यशास्त्रीय लक्षण के अनुरूप नहीं है। उसके अनुसार उसे 'नृपवंशजा', राजवंश में उत्पन्न अर्थात् राजकुमारी होना चाहिए जो कि आम्रपाली नहीं है। वह नगर श्रेष्ठी ब्रह्मदत्त की पुत्री है। इसका समाधान इस प्रकार से किया जा सकता है कि लिच्छवि गणराज्य था, वहां गणों का मिला-जुला राज्य था। इस दृष्टि से नगर श्रेष्ठी भी शासक की कोटि में आ सकता था।

परन्तु नवानुरागा रूप लक्षणांश उसके नायिका होने को सन्देह में डाल देता है। नवानुरागा से आशय है उसका जो पहली बार किसी के प्रति आसक्त हो जोकि आम्रपाली नहीं है। पञ्चम अङ्क में उसका अजातशत्रु के पिता बिम्बिसार के साथ सम्बन्ध दर्शाया गया है। यह नाट्यकृति स्त्रीप्राया भी नहीं है। इसमें मात्र तीन स्त्री पात्र हैं-स्वयम् आम्रपाली और उसकी दो सखियां कञ्चना और

A g

work

& a

s e

h

time of
ferment-
tion or my
torate/

h

and younger generation

वसुमती जबकि पुरुष पात्रों की संख्या छः है-मगधसम्राट् अजातशत्रु, उनके सेनापति सौवीर, लिच्छवि गणराज्य के महामात्य वीरभद्र, बौद्धभिक्षु भदन्त और आनन्द और अन्त में भगवान् बुद्ध। नाटिका की नायिका के विषय में यह भी कहा गया है कि उसे या तो 'अन्तःपुरसम्बद्धा' होना चाहिये या 'सङ्गीत में रत।' आम्रपाली द्वितीय कोटि, 'सङ्गीतव्यापृता' में आती है। राजोद्यान में उसी के गाने से आकृष्ट होकर मगधसम्राट् अपनी सुधबुध खो बैठता है और लिच्छवि सभा में जहां के लिये उसे निमन्त्रण था स्वयं न जाकर अपने सेनापति सौवीर को भेज देता है।

नाट्यकृति का प्रारम्भ प्रस्तावना में नट द्वारा सूत्रधार को इस सूचना के देने से होता है कि लिच्छवि गणराज्य की राजधानी वैशाली में बहुत हलचल हो रही है । सर्वत्र शोर मचा है। शोर का कारण वैशाली में मगधराज अजातशत्रु का आगमन है। जहां यह सब शोर शराबा है, वहीं उससे बेखबर नगरश्रेष्ठी ब्रह्मदत्त की पुत्री आम्रपाली अपनी सखियों कञ्चना और वसुमती के साथ राजकीय उद्यान में सङ्गीत साधना में निमग्न है। उसी समय मगधराज अजातशत्रु उस उद्यान में प्रवेश करता है। आम्रपाली की स्वर माधुरी उसे बार-बार आकृष्ट करती है। सेनापति सौवीर के यह चेताने पर भी कि उद्यान में पुरुषों का प्रवेश वर्जित है इसलिये उसका वहां से चल देना ही उचित है, वह जाना नहीं चाहता। सौवीर को अपने स्थानापन्न पर के रूप में वह लिच्छवि सभा में उपस्थित होने के लिये भेज देता है और स्वयं वहीं रह जाता है। वहीं उसकी भेंट आम्रपाली से होती है। दोनों ही एक दूसरे के प्रति आकृष्ट हो जाते हैं। दूसरे दिन स्वयंवर है जिसमें आम्रपाली ने अपने लिये वर का चयन करना है। स्वयंवर सभा सजी है। आम्रपाली की दृष्टि उसी को (अजातशत्रु को) ढूंढने में लगी है जिससे उसकी गत दिन भेंट हुई थी। लिच्छवि गणराज्य के महामात्य वीरभद्र एक-एक कर स्वयंवर सभा में उपस्थित राजाओं, राजकुमारों एवञ्च अन्य विशिष्ट जनों के बारे में आम्रपाली को बताते जाते हैं। पर वह किसी में भी रुचि नहीं दिखाती। जिसे वह चाहती है वह दीख नहीं रहा है। तब घोषणा की जाती है कि उपस्थित लोगों में से कोई आम्रपाली का हाथ थामना चाहे तो वह आगे आये। कोई नहीं आता। तब लिच्छवि गणराज्य के संविधान के अनुसार आम्रपाली को नगरवधू बनना पड़ता है। इसी बीच अजातशत्रु वहां आ जाता है। वह आम्रपाली को कहता है कि वह उसे अपना ले। पर वह नहीं मानती। गणराज्य का संविधान उसके लिए सर्वोपरि है। वह नगरवधू बन चुकी है। वह उसे बलात् ले जाना चाहता है। गणराज्य का उसके साथ युद्ध होता है जिसमें वह पराजित होता है।

इसके बाद का दृश्य है, वैशाली के राजमार्ग का जिसमें दो बौद्ध भिक्षु, एक बड़ी उमर का जिसे भदन्त रूप में सम्बोधित किया गया है और दूसरा युवा जिसे आनन्द नाम से सम्बोधित किया गया है, आपस में बातचीत करते दिखाये गये हैं। भदन्त आनन्द को वैशाली में जो जो घटा है बताता है। इस बीच आम्रपाली अपनी सखियों के साथ उधर आ निकलती है। वह उन भिक्षुओं को अपने घर आने को कहती है। भदन्त आनन्द को बताता है कि स्वयंवर के अवसर पर ही कुचेष्टाशील मगधराज अजातशत्रु ने आम्रपाली के अपहरण का मन बना लिया था पर उसके अद्भुत साहस को देखकर भाग खड़ा हुआ। दूसरे दिन इसका प्रयास किया तो घोर युद्ध हुआ जिसमें उसे बन्दी बना लिया गया। उसके बाद जो हुआ उसे न किसी ने न देखा न सुना था। अपने वैरी अजातशत्रु को आम्रपाली ने सेवा-शुश्रूषा द्वारा स्वस्थ कर दिया। आमप्राली भदन्त से कहती है कि वह महात्मा बुद्ध तक उसकी यह प्रार्थना पहुंचा दे कि वह संघ की शरण में आना चाहती है। इस विषय को ले कर आम्रपाली का अपनी सखियों से विवाद भी होता है। वे नहीं चाहतीं कि वह संन्यास ले। पर वह अपने निश्चय पर अडिग रहती है।

वैशाली के राजकीय उद्यान में भिक्षु-समूह उपस्थित है। भगवान बुद्ध भदन्त से पूछते हैं कि क्या आम्रपाली को उनके वैशाली आने की सूचना है। भदन्त बतलाता है कि वह अभी आपसे मिलने वाली है। जब वह आम्रपाली के नाम के साथ नगरवधू शब्द का प्रयोग करता है तो भगवान् बुद्ध कहते है कि वह नगरवधू नहीं है, वह एक आदर्श नारी है। बुद्ध दूर से उसे देख लेते हैं। वह उनकी ओर ही आ रही होती है। वह उनसे दीक्षा लेकर श्रमणी बनना चाहती है। बुद्ध उसे श्रमणमार्ग की कठिनाइयों से अवगत कराते हैं पर उसका निश्चय अटल है। वे उसे दीक्षित कर लेते हैं। वह श्रमणी बन जाती है। उधर अजातशत्रु उससे प्रणय निवेदन करता है। उसके बिना उसका जीवन असम्भव है यह कहता है। पर वह कुछ नहीं सुनना चाहती। वह निराश हो चला जाता है। कुछ समय बाद वह पुन: आता है। वह भी संघ में शामिल होना चाहता है। आम्रपाली के कारण उसका हृदय-परिवर्तन हो जाता है। भगवान् बुद्ध की जय-जयकार करते हुए वह कहता है कि भिक्षुणी आम्रपाली उसकी मार्गदर्शिका है। जिस मार्ग पर वह चल दी है उसी पर उसे भी चलना है। यह कहकर वह भगवान् बुद्ध को प्रणाम कर वहां से चल देता है। भगवान् बुद्ध के चरणों में प्रणाम कर आम्रपाली उनसे कहती है कि वे उसे क्षमा कर दें। प्रायश्चित्त के रूप में ही उसने संघ की शरण में जाने का निर्णय लिया है। वीरभद्र आम्रपाली और वैशाली एवञ्च वहां के संघराज की जय जयकार करता है और भगवान् बुद्ध से प्रार्थना करता है कि वे आम्रपाली को नृत्यगीत द्वारा

A g'

work

me of

rm ent-

country roun

texts. His eventful

his younger generations. The present

उनकी आराधना करने की अनुमति दें। उनकी अनुमति मिलने पर वह एक गीत प्रस्तुत करती है। नेपथ्य से 'बुद्धं शरणं गच्छामि' की ध्वनि सुनाई देती है। इसी के साथी ही पटाक्षेप हो जाता है। और नाट्यकृति का अन्त भी।

नाट्यकृति की नायिका के सङ्गीत निपुण होने के कारण नाट्यकर्त्री को स्थान-स्थान पर सुमधुर गीत प्रस्तुत करने का अवसर मिला है जिनमें एक विशेष प्रकार की झङ्कार है जो हृदय को कहीं गहरे तक छू लेती है। भाषा में प्रवाहमयता के साथ लयात्मकता है-

1. चन्द्रमा राजते तारिकाभिर्युतो
वर्तते सर्वतश्चन्द्रिकाचारुता।
तद्धसन्तीव सा वाटिका वीथिका
यद्वसन्तस्य श्रीरागता स्वागता।। (पृष्ठ २२)

2. रचने रचयसि चित्रविचित्रम्।
गतिमतिबुद्धिविवेकविहारिणि!
भावविभावसुभगविस्तारिणि!
सकलकलाकलनादमयी त्वम्
कथयसि पर्व पवित्रम्
रचने रचयसि चित्रविचित्रम्। (पृष्ठ ३१)

3. मोहविमोहविषादविनाशिनि!
योगवियोगसुयोगनिवासिनि!
दमनशमनभवरोगविमर्दिनि।
अपहर सर्वमनिष्टम्।। (पृष्ठ ३२)

नाट्यकृति के अनेक पद्यों में सरलता भी है और सरसता भी। उदाहरणार्थ-

1. रूपयौवनसम्पन्ना
रसभावसमन्विता।
सर्वतन्त्रा स्वतन्त्रा च
नारी सर्वत्र राजते।। (पृष्ठ ३२)

2. बुद्धं शरणमित्येव-
माम्रपाल्या विकल्पनम्।
तेनैव सुलभा मुक्ति-
रन्यत्र न कदाचन।। (पृष्ठ ३४)

3. रागे नास्ति विकल्पनं न जननं नैवास्ति मृत्युस्तथा
द्रव्यं नास्ति तथाविधं हि सहसा तस्मै न यद् दीयते।
भावा मुग्धकराः सहैव हृदयं माद्यन्ति नित्यं भृशं
संवृत्या चिरमोदमोहकतया नेनीयते सत्पथः।। (पृष्ठ ४८)

नाट्यकृति की रचयित्री ने अपनी कृति में अनेक विचारोत्तेजक संवाद भी प्रस्तुत किये हैं। जिसमें उनका अनेक विषयों पर अपना चिन्तन प्रतिबिम्बित होता है। पहले तृतीय अङ्क में भदन्त-आनन्द एवं कञ्चना -वसुमती-आम्रपाली संवाद का ही लिया जाय। भदन्त के यह कहने पर कि तथागत महात्मा (भगवान् बुद्ध) ने कभी भी किसी नारी को अपना शिष्य नहीं बनाया एवञ्च अपने द्वारा स्थापित विहारों में किसी नारी को आमंत्रित नहीं किया इसलिये नारी को दीक्षा देने का तो प्रश्न ही नहीं उठता, संघ में नारी प्रवेश दुर्लभ है, कञ्चना पूछती है कि किस कारण नारियों का मठों में प्रवेश वर्जित है। इस पर आनन्द का उत्तर है कि तथागत की मान्यता है कि नारी रात्रि के समान अज्ञान मूर्त्ति होने कारण तपश्चर्या में बाधक होती है। उस पर आसक्ति विशेष होने पर श्रेष्ठ से श्रेष्ठ पुरुष भी पथभ्रष्ट हो जाते हैं। इसलिये उनसे दूर रहना (पलायन शब्द का यहां प्रयोग है) ही श्रेयस्कर है यह मान बौद्धविहारों में उनका प्रवेश वर्जित है। इस पर वसुमती का कथन है कि नारी के बिना नर अपूर्ण है। वह करुणामूर्त्ति है। फिर नर और नारी में यह भेदभाव क्यों? इस पर आनन्द का कथन है कि यह लोकविदित तथ्य है कि नारी नर के अपूर्ण जीवन की पूर्णता है पर तथागत प्राय: यह कहते रहते हैं कि नर-नारी से जीवोत्पत्ति होती है। नारी के आकर्षण के कारण नर की स्थिति जाल में फँसे मृग की तरह हो जाती है। इसलिए उनसे दूर ही रहना चाहिए। नारी के साथ रहने पर संसारचक्र चलता रहेगा। सन्तानोत्पत्ति होती रहेगी। संसारचक्र थमेगा कैसे? कञ्चना को इस पर आपत्ति है। तंज सा कसती हुई सी वह कहती है-धन्य है यह मार्ग। आम्रपाली उसकी बात काट बीज में ही कहती है कि भ्रमण साधना-बल से ही अपना जीवन जीते हैं। इससे आगे वह कुछ

कहती नहीं पर उसका आशय यही प्रतीत होता है कि जो भी साधना में बाधक बनेगा श्रमण को उससे दूर रहना है। इसमें नारी भी शामिल है।

इसी विषय को लेकर भदन्त-आनन्द और तथागत बुद्ध में भी चर्चा होती है। आनन्द भगवान् से कहते हैं कि आप आम्रपाली को यदि अनुमति देंगे तो अन्य नारियाँ को भी संघ में प्रवेश की अनुमति देनी पड़ेगी। भगवान् का इस पर कथन है कि जन्म-मरण के चक्र से मुक्ति ही लक्ष्य है। इसके लिये नर और नारी में कोई भेदभाव नहीं। सभी प्राणियों के प्रति दयाभाव जिसमें है वह मुक्ति पा सकता है। यह गुण आम्रपाली में है। स्वयंवर सभा में जब कोई उसका हाथ थामने आगे नहीं आया तो उसने गणराज्य के संविधान को सर्वोपरि रखते हुए नगरवधू बनना स्वीकार किया। वह लोगों का मनोरञ्जन करती है। यह उसका लोगों के प्रति दयाभाव ही है। चाहती तो वह मगधराज्य की सम्राज्ञी बन सकती थी। राजमहलों का सुख भोग सकती थी। पर उसने यह नहीं किया। अपने सुख की चिन्ता छोड़ उसने संविधान की चिन्ता की। वह सर्वथा अद्वितीया है, वन्दनीया है।

डॉ. मिथिलेश कुमारी मिश्रा की इस नाट्यकृति में अनेक रसों का सम्मिश्रण है। अङ्गीरस इस में शान्त ही है। नाट्यकृति में शान्तरस के औचित्य को लेकर नाट्यकर्त्री स्वयं चिन्तित है। सूत्रधार और नट की इस बारे में चर्चा उसके इस भाव को ही अभिव्यक्त करती है। अपनी चिन्ता का समाधान ही वह इन शब्दों में प्रस्तुत करती हुई दीखती है कि नाट्यकृति का पर्यवसान शान्तरस में है जबकि शृङ्गार, वीर, अद्भुत रसों का निर्वाह भी इसमें किया गया है। इस संदर्भ में वह महाभारत को दृष्टान्त के रूप में उपस्थित करती है जिसका पर्यवसान भी शान्तरस में ही है। लगता है यहां पर अनावश्यक रूप में वह 'डिफैंसिव' है। किञ्च, दृष्टान्त का दार्ष्टान्तिक के साथ साम्य यहां नहीं है। महाभारत नाट्यकृति नहीं है। वह आसानी से प्रबोधचन्द्रोदयादि प्रतीकात्मक नाट्यकृतियों को यहां उदाहरण रूप में प्रस्तुत कर सकती थी।

व्याकरण की दृष्टि से इस कृति में बहुत प्रमाद हैं कतिपय तो बहुत ही स्थूल हैं। इनका परिमार्जन आवश्यक है।

जो भी हो कुल मिलाकर आम्रपाली संस्कृतवाङ्मय की एक उत्कृष्ट कृति है। इसमें अभिनेयता है, गेयता है और सामाजिक हित की दृष्टि से उपादेयता भी।